

उत्तिष्ठत जाग्रत (युवा जागरण)



अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार



बाल संस्कार शाला



वृक्ष गंगा अभियान



व्यसन मुक्ति एवं कुरीति उन्मूलन अभियान

उत्तिष्ठत जाग्रत युवा जागरण

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत ।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्क्वयो
वदन्ति ॥ - (कठोपनिषद् 1.3.14)

हे मनुष्यो! जागो, उठकर खड़े होओ और श्रेष्ठ एवं ज्ञानी पुरुषों से ज्ञान प्राप्त करके परमात्म तत्त्व को जानो। विद्वज्जन कहते हैं कि यह मार्ग उतना ही दुरूह है, जितना कि छुरे की धार पर चलना।



युवा स्यात् साधु युवा अध्यायकः आशिष्ठो द्रढिष्ठो बलिष्ठः ॥

-तैत्तिरीय उपनिषद्(2.8.1)

अर्थात् - युवा बनो, युवा साधु स्वभाव वाले हों, अध्ययनशील हों, व्यवहारकुशल हों, दृढ़ निश्चय वाले हों एवं बलिष्ठ हों।

संपादक: ब्रह्मवर्चस

प्रथम संस्करण: 2014

प्रतियाँ: 5,000

मूल्य: रु. 20/-

प्रकाशक:

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)

गायत्री नगर, श्रीरामपुरम्,

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार - 249411

संपर्क सूत्र:

सप्त आन्दोलन एवं युवा प्रकोष्ठ कार्यालय

अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

मोबा. -0925 836 0652 फोन-01334-260602 Ext.- 436

Email-youthcell@awgp.org

Website-www.awgp.org; diya.net.in .

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन	4
1. अजेय भारत	6
2. युवाओ ! अब हमारी बारी.....	9
3. युवक शालीन बनें, भविष्य उज्ज्वल बनायें.....	10
4. पंच महाभियान.....	13
5. युवा जागृति अभियान	14
6. DIVINE INDIA YOUTH ASSOCIATION.....	21
7. दिव्यता जागरण कार्यशाला.....	24
8. वृक्ष गंगा अभियान.....	26
9. युगऋषि की ग्रामतीर्थ योजना.....	31
10. बाल संस्कार शाला अभियान	34
11. आओ गढ़ें संस्कारवान् पीढ़ी	37
12. भागीरथी जलाभिषेक अभियान	39
13. व्यसन मुक्ति एवं कुरीति उन्मूलन अभियान.....	46
14. साधना आंदोलन.....	51
15. युवा आवाहन गीत	54
16. वार्षिक कार्ययोजना.....	58
17. सृजनशील युवा- अनुकरणीय प्रयास.....	65
18. व्यक्तित्व निर्माण का केन्द्र -देव संस्कृति विश्वविद्यालय	68
19. युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य - एक विराट् व्यक्तित्व....	70
20. युग निर्माण योजना- एक दृष्टि में	72
22. हमारा युग निर्माण सत्संकल्प	73
23. पंजीयन - पत्रक.....	74
24. युग प्रवक्ता बनें- विचार क्रान्ति का संदेश विश्वव्यापी बनायें...78	

प्राक्कथन

युवा जागरण बनाम - राष्ट्र जागरण

किसी व्यक्ति के निर्माण का स्वर्णिम समय “यौवन काल” होता है, जिसमें वह आने वाले लम्बे जीवन के लिए शरीर, मन और आत्मा का निर्माण और विकास करता है। इसी नींव पर अपने जीवन का मजबूत भवन खड़ा करता है और उसका भोग करता है। किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला और ऊर्जा, उसकी युवा शक्ति ही होती है। यही उसका आत्मबल और इच्छा शक्ति भी होती है। इसीलिये कहा गया है “वीरभोग्या वसुंधरा”। राष्ट्र निर्माण के ताने - बाने में यौवन के ही धागे होते हैं, अतः जो राष्ट्र अपनी इस ऊर्जा का संरक्षण और संवर्धन करता है, वह विकास के उच्च शिखर पर पहुँचता है। राष्ट्र के कृषि, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा, तकनीक, राजनीति रूपी चक्के को यही युवाशक्ति ऊर्जा व गति प्रदान करती है। यह राष्ट्र की रगों में बहने वाला गर्म खून है, जो उसे चैतन्य और प्रगतिशील बनाता है। भौतिक और आध्यात्मिक दोनों के विकास में इसी ऊष्मा का तप सक्रिय रहता है।

विश्व में जितने भी जीवन्त इतिहास हैं, वे सब तरुणाई की ही रचना हैं। “एकोहम् बहुस्याम्” के तरुण ब्रह्म स्फुरण ने सृष्टि का सृजन किया। संस्कृति की दुर्दशा से मर्माहत श्री राम का तारुण्य “निसिचर हीन करुं महि” का प्रण कर बैठा। गीताकार ने पार्थ के तारुण्य को झकझोरा तो महाभारत की विजयश्री वरेण्य हो गई। मानवीयता से पूरित सिद्धार्थ का तारुण्य बुद्ध बन गया। जब तारुण्य तपा तो आत्मजयी महावीर बन गया। दयानंद, विवेकानन्द, रामतीर्थ की तरुणाई देव-संस्कृति का उद्घोषक बन बैठी। शहीदों की तरुणाई से भारत माता की परतंत्रता की जंजीर चटक गई।

आज हम सांस्कृतिक संक्रमण के ऐतिहासिक दौर से गुजर रहे हैं। भौतिकवाद अपनी चरम सीमा पर है। ऐसे में युवा पीढ़ी दिशाहीनता, दुश्चिंतन, भटकाव, दुष्प्रवृत्तियों, चारित्रिक पतन एवं सृजनात्मकता के अभाव के जिन कुचक्रों से गुजर रही है; वे उसे घुन की तरह खोखला कर डालेंगे। नशे, फैशनपरस्ती, दिखावेबाजी, सिनेमाबाजी, पाश्चात्य जीवन-शैली आदि में डूबते जा रहे इन युवाओं को आत्मबोध एवं अपने सांस्कृतिक गौरव से परिचित कराना समय की माँग है।

आज पुनः देश ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व इन समस्याओं के समाधान के लिए युवाओं से ही आस लगाये हुए है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार हमारे देश में 35 वर्ष तक की उम्र की 65 % आबादी है। यह युवा शक्ति जिधर चल पड़ेगी, देश भी उधर ही चल पड़ेगा। अतः देश का भविष्य अब युवाओं के हाथ में है। यह युवा शक्ति ही राष्ट्र शक्ति बन कर राष्ट्र को समृद्धि, उन्नति एवं प्रगति के मार्ग पर ले जायेगी।

युवक-युवतियों को संगठित करना और उनकी गतिविधियों का सही नियोजन करना आज की प्रथम आवश्यकता है।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी ने विश्व की इन समस्याओं के समाधान के लिए युवा शक्ति को पुकारा है। 'इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य' का उद्घोष करते हुए उन्होंने नवयुग के निर्माण की आधारशिला रख दी है। शान्तिकुञ्ज ने युवाशक्ति को राष्ट्र शक्ति के रूप में निखारने की प्रक्रिया का एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन और अभियान प्रारंभ किया है; जिससे राष्ट्र श्रेष्ठता, संप्रभुता और संपन्नता के उच्च शिखर पर पुनः प्रतिष्ठित हो सके।

समय की पुकार है कि प्रतिभा के धनी, संवेदना से भरे एवं श्रेष्ठ कार्यों में समय लगाने वाले संकल्पवान् युवा आगे आयें, राष्ट्र के युवाओं को संगठित करें और अपनी शक्ति को राष्ट्र के नव निर्माण में लगा दें। ओजस्वी, तेजस्वी एवं वर्चस्वी तरुणाई के निर्माण का तथा एक सुनिश्चित कार्य योजना में संलग्न रह कर स्वर्णिम राष्ट्र और नवयुग निर्माण में स्वयं को नियोजित करने का यह एक अलभ्य अवसर है।

युग निर्माण का 'युवा जागृति अभियान' स्रष्टा के महासंकल्प की पूर्ति का एक तेजस्वी प्रयास है।

- डॉ. प्रणव पण्ड्या

आखिर युवा कौन ?

1. असंभव जिसके शब्दकोश में नहीं।
2. जो बाधाओं को चीर कर अपना मार्ग बनाता है।
3. जो परिस्थितियों का दास नहीं, उनका निर्माता, नियंत्रणकर्ता एवं स्वामी है।
4. जो भाग्य नहीं, अपने कर्म पर विश्वास रखता है।
5. जो उमंग, उत्साह, जोश से जीता व सुनहरे भविष्य के सपने देखता है।
6. जो स्वयं सब कुछ करके गौरव अनुभव करता है और विश्व में कुछ अनूठा करना चाहता है।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

अजेय भारत

स्वतंत्रता के 67 वर्ष गुजर जाने के बाद भी क्या अपना देश सचमुच में पूर्ण स्वतंत्र हो सका? क्या इस देश की जनता को आजादी का पूर्ण एवं मौलिक अधिकार प्राप्त हो सका? क्या हम वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक रूप से विकसित हो सके? क्या हम अपने मानवीय मूल्यों की रक्षा कर पाने में सक्षम एवं समर्थ हो सके? ऐसे अनेक ज्वलंत एवं मर्मभेदी प्रश्न हैं, जो हमसे उत्तर एवं समाधान माँगते हैं। क्या हम उनके जवाब दे पाने में समर्थ हैं?

आज जबकि हमारे देश में नैतिक मूल्यों का पतन चारों ओर हो रहा है, भ्रष्टाचार ने देश की अर्थव्यवस्था की जड़ें खोखली कर दी हैं, महँगाई की मार से चारों ओर कोहराम मचा हुआ है और बढ़ते व्यभिचार ने नन्हीं मासूम बच्चियों के जीवन तक को नहीं छोड़ा है। ऐसे में हम यह सोचने के लिए विवश हो उठते हैं कि क्या हम सचमुच में आजाद हैं? यह कैसी आजादी है कि हम अपने ही घर में सुरक्षित एवं सुखी महसूस नहीं कर पाते। अँधेरी रात में कोई वहशी आता है और परिवार के तमाम लोगों की नृशंस हत्या करके चला जाता है। हम भीड़ भरे चौराहे एवं बाजार में भी अपने को ठगा हुआ एवं लुटा हुआ महसूस करते हैं।

कहाँ जाएँ? किससे कहें? कौन सुनेगा हमारी इस अंतर्व्यथा को? प्रश्नों की इस आँधी में हम सूखे पत्तों की तरह केवल उड़ते जा रहे हैं। अंध तमिस्रा की इस सघन वेला में घनी निराशा एवं हताशा ही हाथ लग रही है। इस कार्य में देश के नीति-निर्धारकों से लेकर जन सामान्य तक सभी दिशाहीन एवं कर्तव्य से विमुख नजर आ रहे हैं। आखिर ऐसा क्यों? देश में उपलब्ध इतने प्राकृतिक संसाधनों, सांस्कृतिक विरासतों एवं बौद्धिक समृद्धि के होते हुए भी क्यों यह अमानवीय दृश्य दृष्टिगोचर हो रहा है? ऐसा क्यों हो गया है कि ऋषियों एवं तपस्वियों की इस पावन भूमि में ऐसी अनहोनी घटनाएँ घट रही हैं, जिनकी कल्पना मात्र तक हमें लज्जित कर देती है।

हमारा अतीत गौरवमय अतीत रहा है। हम एक समृद्ध और श्रेष्ठ संस्कृति के संवाहक रहे हैं। पूर्व समय में जब यूरोप और अमेरिका में लोग पत्थरों से लड़ रहे थे, तब हमारा विकास और वैभव चरम पर था और आज हम पुनः मध्यकाल के पतन-पराभव से उभर कर नवीन यौवन के साथ उठ खड़े ही नहीं हुए; वरन् सम्पूर्ण विश्व में अपनी श्रेष्ठ विरासत की शक्ति से विकास पथ पर चल पड़े हैं। आज हमारे युवा दुनिया के कोने-कोने में अपने आध्यात्मिक मूल्य, दृढ़ इच्छाशक्ति एवं कौशल के सहारे योगदान कर रहे हैं। जहाँ अनेकों जातियाँ, आतंक व ध्वंस में लगी हैं, वहीं भारत माँ के ये पुत्र सृजन में संलग्न हैं। जहाँ अन्य देश बूढ़े हो रहे हैं, वहीं हमारा यौवन और खिल रहा है।

परिणाम स्पष्ट है कि आने वाले दिनों में भारत का यौवन सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था, राजनीति, विज्ञान, तकनीकी आदि क्षेत्रों को अपनी बलिष्ठ भुजाओं से गति प्रदान करेगा।

फिर भी उपर्युक्त प्रश्नों एवं समस्याओं को हल किये बिना हमारी आजादी, हमारा विकास स्थायी नहीं रह सकता। इनका निराकरण हमें करना ही होगा। इसके लिये हमें पुनः ऋषि प्रणीत जीवन शैली की ओर लौटना होगा। जिन सूत्रों पर चलकर कभी हम जगद्गुरु, चक्रवर्ती सम्राट और सोने की चिड़िया कहलाते थे और यह धरा देव भूमि, स्वर्गादिपि गरीयसी (स्वर्ग से भी अधिक गरिमामयी) कहलाती थी।

हमारी रगों में उन्हीं चक्रवर्ती सम्राटों का रक्त प्रवाहित है, जिनकी संतानें शैशवकाल में सिंह-शावकों के साथ खेलती थीं और सिंह के दाँत गिन लिया करती थीं। जिनके ओज, तेज, पराक्रम के चलते यह राष्ट्र भारत कहलाया और हम भरतवंशी। हमारी रगों में उन्हीं ऋषियों का रक्त प्रवाहित है जो “सर्वे भवंतु सुखिनः” (सभी प्राणी सुखी हों) एवं “ वसुधैव कुटुम्बकम्” (सम्पूर्ण विश्व ही हमारा परिवार है) के मूल मंत्रों में विश्वास करते थे।

भारतीय संस्कृति आज भी इन्हीं सूत्रों में विश्वास करती है और यही कारण है कि जहाँ एक ओर व्यापक निष्क्रियता, भ्रष्टाचार, सामाजिक विषमताएँ हर मोड़ पर खड़ी दिखाई पड़ती हैं, वहीं फिर भी अपना देश प्रगति के पथ पर अग्रसर नजर आता है। इतनी सघन तमसाच्छन्न (अन्धकारपूर्ण) समस्याओं, आन्तरिक एवं बाह्य चुनौतियों के बावजूद यह राष्ट्र न टूटा, न बिखरा और न विखण्डित ही हुआ है।

आज जो भी घटित होता दिखाई दे रहा हो, लेकिन सत्य यही है कि भारत को अपने लिए और मानवता के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य इन्हीं दिनों करने हैं। भारत के पास चुनौतियों से जूझने एवं उनके समाधान की अपार क्षमता है। उसके पास ऐसा ज्ञान है, ऐसी शक्ति है कि वह समस्त विरोधी ताकतों को तिनके की तरह उड़ा सकता है। यह शक्ति भारत का युवा वर्ग है।

इसके पीछे कहीं न कहीं वह दैवीय शक्तियाँ भी कार्यरत प्रतीत होती हैं, जिनका उल्लेख परम पूज्य गुरुदेव ने स्थान-स्थान पर किया है। वे लिखते हैं- “समस्त विश्व को नया प्रकाश देने और सृजनात्मक सत्प्रवृत्तियों को अग्रगामी बनाने में भारत की भूमिका असाधारण रहेगी। भूतकाल में भी विश्व शान्ति के लिए, मानवी प्रगति एवं समृद्धि के लिए भारत ने बहुत कुछ किया है। अब फिर उसी की पुनरावृत्ति होने जा रही है। यहाँ की ऋषि कल्प आत्माएँ प्राचीन काल की तरह लोक कल्याण के लिए बहुत कुछ करने की तैयारी में जुटी हुई हैं।” (ध्वंस एवं सृजन की सुस्पष्ट संभावना, पृष्ठ 3)।

महर्षि श्री अरविन्द ने भी कहा है - ‘तमाम चुनौतियों के बीच भी भारत वास्तव में जाग्रत् हो रहा है, अपनी रक्षा स्वयं कर रहा है। पूरी तरह एकनिष्ठ एवं दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ उठ खड़ा हो रहा है।’

विवेकानंद जी के शब्दों में - “हमारे पूर्वज महान् थे। पहले यह बात हमें याद करनी होगी। हमें समझना होगा कि हम किन उपादानों से बने हैं, कौन सा खून हमारी नसों में बह रहा है। उस खून पर हमें विश्वास करना होगा। और अतीत के उसके कृतित्व पर भी, इस विश्वास और अतीत गौरव के ज्ञान से हम अवश्य एक ऐसे भारत की नींव डालेंगे, जो पहले से श्रेष्ठ होगा।”

भारत का पुनर्जन्म एक अकाट्य सत्य है, किन्तु यह तभी संभव होगा, जब राष्ट्र की नई पीढ़ी नई सोच को अपनाएगी। जागरूक और जिम्मेदार बनकर आगे आएगी, युग ऋषि ने इसे ही विचार क्रान्ति का नाम दिया है। इस क्रान्ति के लिये उन युवाओं का आह्वान है, जो नूतन भारत के निर्माता बन सकें। ऐसे युवा जिनका जीवन लक्ष्य उच्च हो, आदर्श श्रेष्ठतम हों, वे श्रम के लिये कटिबद्ध हों, स्वाध्यायशील तथा हृदय से भावनाशील हों। जो अपने स्वार्थों को भूलकर, देश के नव निर्माण को प्राथमिकता दे सकें।

इन्हीं सूत्रों पर चलकर भारत पुनः विश्व वसुंधरा का शृंगार करेगा और यही होगा “मनुष्य में देवत्व का उदय” एवं “धरती पर स्वर्ग का अवतरण”।

लक्ष्य निर्धारित करें

युवा साथियों, हमें अपने जीवन का लक्ष्य निश्चित करना होगा। आज तो लगभग सभी ने पैसा कमाना ही अपने जीवन का एकमात्र ध्येय बना रखा है। युवावर्ग में शिक्षा का उद्देश्य भी धन कमाना ही रह गया है। शिक्षा की वास्तविक उपयोगिता तो इसमें है कि हमारा ज्ञान बढ़े, हमारी प्रतिभा व क्षमता का विकास हो और हम इसके द्वारा समाज का एवं स्वयं का भला कर सकें। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, मार्ग में आने वाले अवरोधों पर विजय पाने के लिए साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा का अभ्यास करें। एक अच्छे संस्कारित, चरित्रवान् व्यक्ति के रूप में अपना विकास आप स्वयं ही कर सकते हैं।

युवाओ ! अब हमारी बारी..

हम सब युग निर्माण के साधक-सेनानी हैं। हमारे आराध्य ने हमें सम्पूर्ण विश्व के नये सिरे से निर्माण में संलग्न किया है। उनका उद्घोष है “मानव में देवत्व जगेगा, स्वर्ग धरा पर आयेगा” और सतयुग की वापसी होगी। मनुष्य महान् है और उसका सृजेता उससे भी महान्। महाकाल ने नव निर्माण का संकल्प किया है। इस बार उसने एक से अनेक नहीं, हम अनेकों में देवत्व के जागरण का संकल्प किया है। वसुधा को स्वर्ग के गौरव से मंडित करने का संरंजाम जुटा दिया है और इस हेतु शक्ति हिमालय की ऋषि सत्ता ने झोंक दी है। गुरु सत्ता ने अपनी तपः शक्ति से सूक्ष्म जगत् का निर्माण कर दिया है। अब हमारी बारी है कि हम अपना पुरुषार्थ लगा कर उसे संसार में प्रत्यक्ष करें। गूढ़तम तथ्य भी ऋषि सत्ता ने सरल शब्दों में कह दिया है - “हम बदलेंगे - युग बदलेगा” कुछ इस तरह भी समझ लें कि हम भी बदलेंगे और युग भी बदलेगा; क्योंकि यह स्रष्टा का युग निर्माण संकल्प है। युवा साथियो! यह बदलाव की प्रभात वेला है। सब कुछ बदल रहा है, मनुष्य भी, प्रकृति भी, ईश्वर भी। सब कुछ नया होगा, इस नूतन युग में, मनुष्यता का शृंगार चल रहा है, विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा सहित सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व बदलाव हो रहा है। रूढ़ियाँ, संकीर्णताएँ, मूढ़ मान्यताएँ उसी तरह टूट रहीं हैं, जैसे पतझड़ के समय सब पुराने जीर्ण पत्ते झड़ जाते हैं। विधाता संसार को नये पल्लवों-पुष्पों से लादने की तैयारी कर रहा है। परिवर्तन अवश्यम्भावी है, कोई इसे रोक नहीं सकता; क्योंकि यह स्रष्टा का संकल्प है।

तो मित्रो! इस बदलाव में हम क्या करें? क्या भोग-वासना, स्वार्थ-संकीर्णता, घृणा- कटुता के दलदल में फँसकर स्वयं के विनाश की लीला देखें या अदम्य उत्साह, दृढ़ इच्छाशक्ति, आध्यात्मिक विरासत के सहारे, सृजेता की महान् सृजन योजना “युग निर्माण” में भागीदार बनें? निर्णय शीघ्र करना होगा। सृजन और ध्वंस में से किसी एक को चुनने का यही और सिर्फ यही समय है। समय चूक जाने वाले तो अन्त समय पछताते हैं।

उठो! उठो! कोई अन्दर से पुकार रहा है। सृजन की वीणा का राग सुनो। सुनो! समय प्रभाती गा रहा है। चलो! चलो! मनुष्यता पुकार रही है। बढ़ो! बढ़ो! भारत माता अपनी विशाल बाँहें फैलाये तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। देखो! देखो! सविता की प्रखर स्वर्णिम रश्मियाँ तुममें ऊर्जा भरने तुम्हारी ओर दौड़ी चली आ रही हैं। सुनो यह प्रथम और अंतिम अवसर है, जब ईश्वर तुम्हें अपने एक अंश का अवतरण करने का आश्वासन दे रहा है। झिझको मत, चूको मत। अब प्रतीक्षा मत करो, कोई बहाना मत ढूँढ़ो। जुट पड़ो, कार्य में संलग्न हो जाओ और स्वयं को बदल कर दुनिया को नई बनाने का अवसर प्रदान करो। समय को इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ लिखने का अवसर दो।

युवक शालीन बनें, भविष्य उज्ज्वल बनायें

जीवन निर्माण का महत्त्वपूर्ण समय 12 से लेकर 20 वर्ष तक की आयु तक रहने वाली किशोर अवस्था है। इस अवधि में मनुष्य गीली मिट्टी और हरी लकड़ी की तरह रहता है, जिसे चाहे जिधर ढाला और मोड़ा जा सकता है। पीछे तो वह पक्की मिट्टी और सूखी लकड़ी की तरह, जैसा उठती उम्र में बन गया, प्रायः वैसा ही अन्त तक बना रहता है। जो बूढ़े हो चले, उन ढलती आयु के लोगों के दिन करीब हैं, उनके दोष-दुर्गुणों को सहन भी किया जा सकता है और उपेक्षा भी की जा सकती है, पर नई पीढ़ी के विकासशील बालकों की उपेक्षा नहीं हो सकती। अगले दिनों महत्त्वपूर्ण भूमिकायें उन्हें ही सम्पादित करनी हैं। नेतृत्व उन्हीं के कंधों पर आने वाला है।

कहना न होगा कि समस्त श्री, समृद्धि, प्रगति और शान्ति का सम्पूर्ण स्रोत मनुष्य के सद्गुणों पर अवलम्बित है। दुर्गुणी व्यक्ति हाथ में आई हुई, उत्तराधिकार में मिली हुई समृद्धियों को गँवा बैठता है। इतना ही नहीं, वह घमण्ड में उद्धत आचरण करके अपनी तथा दूसरों की शान्ति नष्ट करता है, अपने को तथा अपने समीपवर्ती समाज को संकट में डाल देता है।

उठती आयु में सबसे अधिक उपार्जन सद्गुणों का ही किया जाना चाहिए। विद्या पढ़ी जाये, सो ठीक है, खेल-कूद, व्यायाम आदि से स्वास्थ्य बढ़ाया जाये, सो भी अच्छी बात है, विभिन्न कला-कौशल और चातुर्य सीखे जायें, वह भी सन्तोष की बात है। पर सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि इस आयु में जितनी अधिक सतर्कता और तत्परतापूर्वक सद्गुणों का अभ्यास किया जा सके, करना चाहिए। एक तराजू में एक ओर विद्या, बल, बुद्धि, धन आदि की सम्पत्तियाँ रखी जायें और दूसरे पलड़े में सद्गुण, तो निश्चय ही यह दूसरा पलड़ा अधिक भारी और अधिक श्रेयस्कर सिद्ध होगा। दुर्गुणी व्यक्ति साक्षात् संकट स्वरूप है। वह अपने लिये पग-पग पर काँटे खड़े करेगा, अपने परिवार को त्रास देगा और समाज में अगणित उलझनें पैदा करेगा।

आज कुछ ऐसी गन्दी हवा चली है, जिसने नई पीढ़ी को उद्धत एवं उच्छ्रंखल बनाने की विभीषिका खड़ी कर दी है। हमारे होनहार बच्चों में से अधिकांश में उच्छ्रंखलता, अवज्ञा, उद्वण्डता, अनुशासनहीनता की मात्रा बहुत बढ़ती चली जाती है, यह चिन्ता की बात है। इसमें देश के दुर्भाग्य का खतरा छिपा हुआ है। परस्पर छुरेबाजी, अध्यापकों की अवज्ञा, परीक्षा में नकल, बिना टिकट यात्रा, लड़कियों को छेड़ना, सिनेमा की शौकीनी, शृंगार, सजावट की फिजूलखर्ची, उद्धत आचरण एवं वार्तालाप में विनय तथा शिष्टता का अभाव आदि कितने ही दुर्गुण अपने होनहार बालकों में देखते हैं, तो भारी चिन्ता होती है कि इतने उथले व्यक्तित्वों को लेकर वे किस प्रकार अपने भविष्य को उज्ज्वल और प्रकाशवान् बना सकेंगे और अगले दिनों जो जिम्मेदारी

उनके कब्धों पर आने वाली है, उसका निर्वाह किस प्रकार कर पायेंगे? जो नवयुवक अपना भला-बुरा समझने की स्थिति में हैं, उन्हें यह बात गिरह बाँध लेनी चाहिए कि सभ्य समाज के जिम्मेदार नागरिक हमेशा अपने व्यक्तित्व को तेजस्वी बनाने के लिए सद्गुणों को अपने स्वभाव में निरन्तर सम्मिलित करते रहते हैं। शिष्टता ही लोकप्रिय बनाती है। अनुशासनप्रिय व्यक्ति के अनुशासन में ही दूसरे लोग रहते हैं। सज्जनों को ही श्रद्धा मिलती है। सद्गुणी दूसरों का हृदय जीतते हैं और दसों दिशाओं में उन पर स्नेह-सहयोग बरसता है। इस राज-मार्ग को जिसने अपनाया, उसे ही मनस्वी, तेजस्वी और यशस्वी बनने का अवसर मिला है और जो दुष्टता के दुर्गुणों में ग्रस्त हो गये, वे थोड़े समय औरों को आतंकित करके, क्षणिक रौब-दाब जमा सकते हैं और डरा-धमका कर कुछ उल्लू सीधा कर सकते हैं, पर यह तनिक सी सफलता अन्ततः बहुत महँगी और भारी पड़ती है।

लोगों की निगाह में जब व्यक्तित्व गिर गया और गुण्डा या उपद्रवी माना जाने लगा तो समझना चाहिए कि सम्मान और सहयोग की स्थिति समाप्त हो गयी। जीवन में प्रगति और शान्ति के लिए दूसरों की सद्भावना और सहायता की जरूरत पड़ती है। पर यह दोनों ही अनुदान केवल सज्जनों को मिलते हैं। आतंकवादी और उद्धत व्यक्ति किसी के हृदय में अपने लिये स्थान न बना सकेंगे, उनके लिये सबके भीतर घृणा और अविश्वास भरा रहता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में कोई ऊँचा स्थान प्राप्त नहीं कर सकते और न उन्हें कोई बड़ी सफलता ही मिलती है।

हमारे नवयुवकों को समझना चाहिए कि ध्वंसात्मक दुष्प्रवृत्तियों को अशिष्टता एवं उच्छ्रंखलता को अपना लेना अति सरल है। छिछोरे साथी अथवा उद्धत अगुआ लोग उठती आयु के बालकों को आसानी से गुमराह कर सकते हैं, पर शालीनता और सज्जनता का अभ्यास बनाना उनके बस की बात नहीं। इसलिये हेय व्यक्तित्व के जोशीले और उच्छ्रंखल लोगों को अपने ऊपर हावी ही नहीं होने देना चाहिए। अन्यथा उनकी मैत्री उच्छ्रंखल बना देगी और वह स्थिति पैदा कर देगी, जिसमें अपनी निज की और दूसरों की आँखों में अपना व्यक्तित्व गया-गुजरा, ओछा, कमीना और निकृष्ट स्तर का बन जाये। इस स्थिति में जो पड़ा, उसके सौभाग्य का सूर्य एवं उज्ज्वल भविष्य अस्त हो गया, ऐसा ही समझना चाहिए।

मित्रों का आकर्षण सदा ही रहता है, पर किशोरावस्था में उसके प्रति खिंचाव अपनी चरम सीमा पर रहता है। मित्रता बुरी नहीं, अच्छे साथी मिलें तो विकास एवं प्रसन्नता की वृद्धि में सहायता ही मिलती है। पर दुर्भाग्य से आज आवारा और दुर्गुणी लड़के ही मित्रता के जाल में फँसा कर अच्छे लड़कों को अपने जैसा बना लेने का जाल फैलाते हैं। जो स्वयं पढ़ते-लिखते नहीं, खुराफातों में घूमते हैं, उन्हें अपनी आवारागर्दी के लिए साथियों की जरूरत पड़ती है। ये चालाक लड़के मीठी बातें करके, सब्जबाग दिखाकर भले लड़कों को फँसाते हैं और धीरे-धीरे उन्हें आवारागर्दी के अनेक हथकण्डे सिखाकर ऐसा बना देते हैं, जो शिक्षा से वंचित रह जायें, स्वास्थ्य

खो दें, स्वभाव बिगाड़ लें और सम्मान तथा विश्वास गँवा बैठें। किसी का भविष्य अन्धकारमय बनाने के लिये इतनी बातें काफी हैं, इसलिये हर समझदार छात्र का कर्तव्य है कि मित्रता करने और दोस्तों के साथ फिरने से पूर्व हजार बार सोचें कि कहीं उसे आवारागर्दी की ओर तो घसीटा नहीं जा रहा है। यों आज की परिस्थिति में अधिक उपयुक्त यही है कि बिना गहरी दोस्ती के काम चलाया जाये और हर साथी से सामान्य शिष्टाचार और मेल-जोल उस सीमा तक रखा जाये, जिससे समय की बर्बादी और किसी खतरे की आशंका न हो।

स्वास्थ्य संरक्षण के लिये भी यही समय सबसे अधिक उपयुक्त है। आहार-विहार का, सोने-जागने का, यदि ठीक ध्यान रखा जाये तो तंदुरुस्ती ऐसी बन जायेगी, जो जीवन भर साथ दे। इस संदर्भ में कामुकता के खतरे को पूरी तरह ध्यान में रखा जाना चाहिए। गंदी फिल्में, गन्दे गाने, गन्दे उपन्यास, गन्दे चित्र, गन्दे मित्र तथा गन्दे विचार चित्त को उसी तरह उद्धिग्न कर देते हैं और उन घिनौने कार्यों की प्रेरणा देते हैं, जिनसे शरीर और मस्तिष्क खोखला हो जाये और जवानी में बुढ़ापा आ घेरे। कच्ची उम्र में इस तरह का घुन लग जाने से देह जिन्दगी भर के लिये रोगों का शिकार बन जाती है और गृहस्थ-जीवन भार बन जाता है। इसलिए इन दिनों ब्रह्मचर्य और सद्विचारों के बारे में पूरी सतर्कता रखी जाये और अश्लील परिस्थिति से ऐसे ही बचा जाये, जैसे साँप, बिच्छू, आग या जहर से बचा जाता है। मानसिक संतुलन तथा श्रमशीलता का अभ्यास किया जाये।

घर के कामों में बड़ों का हाथ बँटाना, आत्म निर्भरता विकसित करने के लिए अपने बहुत से काम स्वयं निपटा लेना, कम खर्च से काम चलाना, समय का विभाजन करके नियत दिनचर्या के अनुरूप चलना, समय तनिक भी बर्बाद न होने देना, आवेश और चिड़चिड़ेपन से बचकर शान्त, संतुलित मस्तिष्क बनाये रहना, सत्साहित्य के स्वाध्याय की आदत डालना, कठोर परिश्रम की आदत डालना और हँसमुख, शिष्ट एवं विनम्र रहना, युवावस्था को अलंकृत करने वाले सद्गुण हैं। इस स्तर की शालीनता, सज्जनता का उपार्जन, अभ्यास आदि नवयुवक करने लगें, तो उनके भीतर अनेक ऐसी विशेषताएँ उगती चली जायेंगी, जिनके द्वारा उनका भविष्य स्वर्णिम और शानदार बन सके।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य,

पुस्तक-‘विद्या की सम्पत्ति बढ़ाते चलें’

सप्त क्रान्ति आधारित राष्ट्र के नव निर्माण हेतु पंच महाभियान

- 1) युवा जागृति अभियान
(सुसंस्कारी, स्वस्थ, शालीन, सुशिक्षित, स्वावलम्बी, सेवाभावी युवाओं का चयन, प्रशिक्षण एवं रचनात्मक कार्यों में नियोजन)
- 2) वृक्ष गंगा अभियान (स्वच्छ पर्यावरण - स्वस्थ जीवन)
(एक करोड़ वृक्षारोपण, 1008 श्रीराम स्मृति उपवनों की स्थापना एवं स्वच्छ पर्यावरण हेतु प्रयास, जिससे स्वस्थ जीवन प्राप्त हो सके।)
- 3) ग्राम तीर्थ योजना-“गाँव की गोद में”
(संस्कारयुक्त, व्यसनमुक्त, स्वच्छ, स्वस्थ, स्वावलम्बी, सुशिक्षित एवं सहयोग-सहकार से भरा-पूरा ग्राम निर्माण)
- 4) बाल संस्कार शाला अभियान
(संस्कारवान्, चरित्रवान्, राष्ट्र-भक्त, आदर्श पीढ़ी का निर्माण)
- 5) भागीरथी जलाभिषेक अभियान
(जल - स्रोत शुद्धि एवं संरक्षण हेतु सामूहिक पुरुषार्थ)

अन्य कार्यक्रम

व्यसनमुक्ति- कुरीति उन्मूलन आंदोलन

आओ गढ़ें संस्कारवान् पीढ़ी

साधना आंदोलन

ज्ञान का अधिकाधिक संग्रह करो, ताकि बौद्धिक दृष्टि से सुसम्पन्न बन सको संयम बरतो, ताकि शरीर और मन की बलिष्ठता बने। उदारता का परिमाण अपने स्वभाव में बढ़ाओ, ताकि मित्रों और सहयोगियों की संख्या बढ़े। अपनी आंतरिक महानता को खोजो और बढ़ाओ, ताकि मनुष्य जीवन का समुचित लाभ प्राप्त कर सको।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

युवा जागृति अभियान

(राष्ट्र के कर्णधारों के नैतिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक जागरण का रचनात्मक अभियान)

वर्ष 2011 के जनगणना आँकड़ों पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट होता है कि हमारे देश में 0 से 35 वर्ष आयु समूह में 65 % जनसंख्या आती है। यही भारत की वर्तमान और भविष्य की शक्ति और संसाधन है। युवाओं की दशा और दिशा ही राष्ट्र के पतन एवं उत्थान का आधार रही है। राष्ट्र की धमनियों-शिराओं में बहने वाले इस गरम रक्त को संगठित, प्रशिक्षित एवं सही दिशा में नियोजित करना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। युग निर्माण का युवा आंदोलन इसी दिशा में एक सार्थक प्रयास है, ताकि भारतवर्ष पुनः सशक्त, समृद्ध एवं श्रेष्ठ राष्ट्र के रूप में विश्व का नेतृत्व कर सके।

लक्ष्य -

शालीन, स्वस्थ, सेवाभावी एवं स्वावलम्बी युवाओं से श्रेष्ठ, सशक्त, सुखी एवं सम्पन्न राष्ट्र का नव निर्माण करना।

उद्देश्य:-

- युवाओं के प्रखर व्यक्तित्व निर्माण हेतु 'साधना' प्रधान जीवन शैली की प्रेरणा-प्रशिक्षण।
- युवाओं के नैतिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक विकास हेतु 'स्वाध्याय'- मनन-चिंतन की अनिवार्यता।
- स्वावलम्बन से स्वाभिमान का जागरण तथा 'संयम' द्वारा पुरुषार्थ हेतु शक्ति संचय।
- समाज एवं राष्ट्र के नव निर्माण हेतु संवेदना का विकास और संगठित हो कर 'सेवा' का अभ्यास।

कार्यक्रम-

- एक/तीन दिवसीय युवा चेतना शिविरों का आयोजन करना।
- सक्रिय, सृजनशील युवाओं के युवा मण्डल गठित करना एवं केन्द्र में पंजीयन।
- विविध रचनात्मक कार्यों में नियोजन कर युग निर्माण के आंदोलनों को गति देना।
- युवा अग्रदूतों का चयन कर प्रशिक्षण करना।
- विद्यालयों, महाविद्यालयों में Divine Workshops का आयोजन एवं विद्यार्थियों को DIYA आंदोलन से जोड़ना।
- DIYA के माध्यम से कार्पोरेट जगत् में विभिन्न विषयों पर सेमीनार जैसे-तनाव, स्वास्थ्य, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन, ध्यान से कार्य क्षमता एवं उत्पादकता में विकास, अध्यात्मवादी भौतिकता आदि।
- व्यसन मुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, व्यक्तित्व परिष्कार आदि विषयों पर संगोष्ठी, पावर पाइंट प्रस्तुति आयोजन।

स्थायी गतिविधियाँ :

- 1) साप्ताहिक गोष्ठी, ध्यान, अमृतवाणी एवं श्रमदान ।
- 2) वार्षिक कैलेन्डर के अनुरूप आयोजन करना एवं पंच महाअभियान में भागीदारी ।
- 3) स्वावलंबन परामर्श केंद्र एवं कैरियर काउंसिलिंग सेंटर ।
- 4) कोचिंग कक्षाएँ ।
- 5) प्रज्ञा योग व्यायाम केन्द्र ।
- 6) बाल संस्कार शालाओं का संचालन ।
- 7) आपदा निवारण वाहिनी का गठन एवं प्रशिक्षण ।

सदस्यों से अपेक्षाएँ :

- 1) नियमित उपासना एवं स्वाध्याय ।
- 2) चिंतन एवं व्यवहार मिशन की गरिमा के अनुरूप हो ।
- 3) व्यसन मुक्त जीवन ।
- 4) सेवा कार्यो हेतु समयदान एवं अंशदान ।
- 5) साप्ताहिक गोष्ठी, ध्यान, अमृतवाणी एवं श्रमदान ।

महत्त्वपूर्ण टीप:

- 1) ग्राम से जिला स्तर तक प्रत्येक युवा मण्डल में न्यूनतम एक प्रौढ़ मित्र रहना आवश्यक होगा जो युवाओं के जोश का मिशन की गरिमा के अनुसार नियोजन करेगा ।
- 2) हर स्तर पर युवाओं की एक समन्वय समिति होगी, जिसके पाँच सदस्य संगठन की प्रांतीय समन्वय समिति के सदस्य होंगे ।
- 3) संगठन में युवा का आशय भाई एवं बहिन दोनों से होगा ।
- 4) जिला एवं प्रांत स्तर पर युवा जागृति अभियान का कार्यालय स्थापित होगा ।
- 5) 'दिया' (DIYA) युवा मण्डलों के माध्यम से चलाया जाने वाला एक युग निर्माणी आन्दोलन है ।

युवा आंदोलन के चार सूत्र

1. स्वस्थ युवा - सशक्त राष्ट्र

- शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के प्रति युवाओं को जागरूक एवं प्रयत्नशील बनाना ।
- युवकों में योग, आत्म प्रबंधन द्वारा उत्कृष्ट जीवन शैली का विकास ।
- युवा शक्ति को व्यसन से बचाकर सृजन में लगाना ।

2. शालीन युवा - श्रेष्ठ राष्ट्र

- युवाओं को भोगवादी अपसंस्कृति के दुष्प्रभावों से बचाकर अपनी गौरवमयी सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराना ।
- विनम्रता, सहकारिता, श्रमशीलता एवं अनुशासन जैसे सद्गुणों के विकास द्वारा सभ्य, सुसंस्कृत एवं शालीन युवा तैयार करना ।

3. स्वावलंबी युवा - संपन्न राष्ट्र

- स्वावलंबन से स्वाभिमान का जागरण ।
- बेकारी एवं बेरोजगारी से मुक्ति ।
- समग्र स्वावलंबन (सांस्कृतिक और आर्थिक) के माध्यम से आत्मनिर्भरता ।
- श्रम के प्रति सम्मान का जागरण ।

4. सेवाभावी युवा - सुखी राष्ट्र

- युवाओं में संवेदना, सेवाभाव, और तत्संबंधी कौशल का विकास करना ।
- युवाओं के श्रम, समय, साधन एवं प्रतिभा का रचनात्मक कार्यों में नियोजन ।
- विश्व में पतन निवारण, पीड़ा निवारण एवं सुविधा संवर्धन की तीनों दिशाओं में सक्रियता बढ़ाना ।

युवा संगठन का स्वरूप

इस विषय में शान्तिकुञ्ज के व्यवस्था तन्त्र ने बहुत ही गंभीरतापूर्वक चिन्तन-मनन करने के पश्चात् युवाओं को संगठित कर उन्हें नियोजित करने की विशिष्ट योजना बनाई है। वर्तमान समय में गायत्री परिवार में जोन, उपजोन, जिला, तहसील, प्रखण्ड समितियाँ तथा शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठ, शाखा, प्रज्ञा/महिला मण्डल के रूप में संगठन बने हुए हैं। इनमें युवाओं को अधिकाधिक जोड़ना है। युवाओं में महिलाएँ भी शामिल हैं। इस मिशन के संगठन की आधारभूत इकाई को मण्डल कहते हैं। संगठन की प्रारम्भिक एवं आधारभूत इकाई बनेगी, जो अन्य मण्डलों के साथ मिलकर नवचेतना विस्तार केन्द्र अर्थात् सक्रिय संगठित समूह (स-3) से जुड़ जायेंगे तथा इसकी समन्वय समिति में सदस्यता प्राप्त करेंगे। युवा मण्डलों के सदस्यों में जो समयदानी निकलेंगे, वे समर्थ समयदानी सहयोगी समूह (स-4) के सदस्य बन जायेंगे। ये पुरुषों एवं महिलाओं की अलग-अलग टोलियों में रहेंगे, जिनके माध्यम से आवश्यकतानुसार उनकी योग्यता, क्षमता का विचार क्रान्ति को व्यापक बनाने में समुचित लाभ उठाया जा सके।

क्षेत्र के कई नव चेतना विस्तार केन्द्र (स-3) मिलकर जब विकास खण्ड संयुक्त समन्वय समिति गठित हो तो उसमें युवा प्रतिनिधि भी रहेंगे। इसी तरह जिला संयुक्त समन्वय समिति में भी युवाओं का प्रतिनिधित्व अवश्य रहेगा।

उपजोन/जोन स्तर पर युवा संगठन को गति देने हेतु युवा प्रकोष्ठ स्थापित किये जायेंगे, जो क्षेत्र में युवाओं को संगठित करने, प्रशिक्षण देने तथा नियोजन करने का कार्य करेंगे।

- ⇓ 1. प्रज्ञा मण्डल, 2. महिला मण्डल, 3. युवा मण्डल, 4. संस्कृति मण्डल
- ⇓ नव चेतना विस्तार केन्द्र (सक्रिय संगठित समूह, स-3)
- ⇓ विकासखण्ड संयुक्त समन्वय समिति (युवा प्रतिनिधि भी सम्मिलित हों)
- ⇓ जिला संयुक्त समन्वय समिति (युवा प्रतिनिधि भी सम्मिलित हों)
- ⇓ उपजोनल केन्द्र (विभिन्न व्यवस्था समितियाँ, जिनमें युवा प्रकोष्ठ के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हों)
- ⇓ जोनल केन्द्र (विभिन्न व्यवस्था समितियाँ, जिनमें युवा प्रतिनिधि भी सम्मिलित हों)
- ⇓ केन्द्रीय जोनल संगठन तंत्र (युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार)
- गाँव-गाँव, मोहल्ले-मोहल्ले में युवा मण्डलों का गठन करना है।
- इनमें आरम्भ में एक संयोजक/संचालक व न्यूनतम चार सहयोगी होंगे। आगे ये पाँचों अपने प्रयास से पाँच-पाँच और नये सदस्य बनायेंगे। 30 की संख्या हो जाने पर पूरी इकाई मानी जायेगी। युवा की उम्र 18 से 40 वर्ष मानी गयी है।
- युवा मण्डल की प्रगति का विवरण नव चेतना विस्तार केन्द्र, शान्तिकुञ्ज तथा उपजोन/जोन केन्द्र को भी भेजना है।
- पंजीयन शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार से होगा, जोनल कार्यालय में भी इसका रिकार्ड रखा जायेगा। पंजीयन नम्बर का प्रयोग पत्र-व्यवहार में करें।
- युवा मण्डल को मार्गदर्शन देने हेतु पुराने कार्यकर्ता भाई-बहिन को युवा मित्र के रूप में नामित किया जाना चाहिए।

नोट- मण्डल गठन करने वाले परिजन प्रौढ़ होने पर स्वयं भी युवा मित्र हो सकते हैं। प्रत्येक युवा मण्डल शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठ/संगठन की विभिन्न इकाइयों से भी जुड़े रहें।

अर्थानुशासन- अन्य मण्डलों एवं संयुक्त समन्वय समितियों की तरह ही युवा मण्डल भी किसी पंजीकृत ट्रस्ट की रसीद बुक लेकर कार्य करेंगे तथा ज्ञान घटों, कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी अर्थ व्यवस्था बनाते रहेंगे। उनकी सम्पूर्ण कार्य प्रणाली प्रज्ञा मण्डलों/महिला मण्डलों की तरह ही रहेगी। अन्यो की तरह युवा वर्ग भी एक घण्टा प्रतिदिन समयदान तथा एक रुपया प्रतिदिन अंशदान एवं देव परिवार के पाँच नियमों (साधना, स्वाध्याय, संस्कार, संगठन और सहकार) का नियमित रूप से पालन करने हेतु संकल्पित होकर कार्य करेंगे।

युवा मण्डल के सदस्यों से अपेक्षा

- नशा, दुर्व्यसन एवं अश्लीलता से दूर रहें।
- प्रत्येक सदस्य को नियमित गायत्री उपासना तथा स्वाध्याय करना चाहिए।

- अपना चिन्तन और व्यवहार मिशन की गरिमा के अनुरूप बने, ऐसा प्रयास करना चाहिए।
- मिशन की गतिविधियों में सहयोग करें, वरिष्ठों का मार्गदर्शन लें तथा सृजन परिश्रम के सूत्रों को अपनाएँ।

युवा राष्ट्र का रक्त है। वह अगर शुद्ध रूप से धमनियों में प्रवाहित होता रहेगा तो राष्ट्र रूपी शरीर को ऊर्जा एवं प्रगति प्रदान करेगा। आज का युवा अगर चिन्तनशील एवं प्रगतिशील बनना चाहता है, तो उसे वर्तमान समय की विकृतियों से अपने आप को बचाना होगा। इसके लिए उसे परम पूज्य गुरुदेव पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। गायत्री परिवार के अधिकांश परिजन जीवन में आज जिस मुकाम पर पहुँचे हैं, उसमें पूज्य गुरुदेव के साहित्य की मुख्य भूमिका है। अगर आप भी अपने जीवन में आर्थिक, सामाजिक, मानसिक, आध्यात्मिक स्तर पर सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, तो आप इस सत्साहित्य का अध्ययन अवश्य करें।

प्रवासी युवा

प्रतिभाशाली, भावनाशील एवं समयदानी प्रशिक्षित युवाओं हेतु विशेष कार्य योजना।

1. प्रवासी युवा -

- जो सप्ताह में न्यूनतम एक दिन का समयदान करे या प्रतिदिन दो घंटे का समयदान करे।
- जो समाज के पीड़ा-पतन निवारण हेतु मन से संकल्पित हो।
- जो उमंग, उत्साह, जोश से जीता व सुनहरे भविष्य के स्वप्न देखता हो।
- जिसे युग निर्माण के कार्य करने की आंतरिक इच्छा हो।
- जो अपने साथ-साथ समाज के पूरे युवा वर्ग के जीवन की दिशाधारा बदलने की चाहत रखता हो।

2. प्रवासी युवा के कार्य

- अपने क्षेत्र में युवा चेतना शिविर लगाना।
- सप्ताह में शनिवार एवं रविवार में युवाओं हेतु स्कूल, कॉलेज, संस्थान (कॉर्पोरेट), ग्राम, हॉस्टल आदि में कार्यक्रमों का आयोजन।

- मंडल का गठन करना एवं शान्तिकुञ्ज से उनका पंजीयन कराना ।
- बालसंस्कार शाला का संचालन करना एवं दूसरों को प्रेरित करना ।
- शक्तिपीठों पर रविवार को युवाओं हेतु व्यक्तित्व परिष्कार संगोष्ठियों का आयोजन ।
- योग केंद्र का संचालन ।
- झोला पुस्तकालय के माध्यम से युग साहित्य का प्रचार-प्रसार करना ।
- आदर्श ग्राम का चयन एवं निर्माण कार्यक्रम ।
- वृक्ष गंगा अभियान, भागीरथी जलाभिषेक अभियान, श्रीराम स्मृति उपवन, श्रीराम स्मृति सरोवर की स्थापना हेतु प्रयास ।
- मिशन के आधारभूत कार्य (यज्ञ - संस्कार, झोला पुस्तकालय) का संचालन ।
- शान्तिकुञ्ज में संचालित सत्रों में प्रशिक्षण हेतु युवाओं को प्रेरित करना ।
- देव संस्कृति विश्वविद्यालय की जानकारी देना ।

3. प्रवास की रूपरेखा

- न्यूनतम 2-2 युवाओं की टोलियाँ बनायें ।
- शान्तिकुञ्ज से प्रशिक्षण प्राप्त करें ।
- मॉनीटरिंग युवा प्रकोष्ठ कार्यालय शान्तिकुञ्ज करेगा एवं छह माह में समीक्षा होगी ।

4. प्रवासी युवाओं द्वारा क्षेत्रों में संपन्न किये जाने वाले कार्यक्रम

- स्कूलों/कॉलेजों में कार्यक्रम- आदर्श विद्यार्थी कार्यशाला
 - * शिक्षा के साथ विद्या
 - * रचनात्मक गतिविधियाँ
 - * योग शिक्षण, नैतिक शिक्षा
 - * समय प्रबंधन
 - * सेवा भावना हेतु श्रमदान
 - * बुद्धि बढ़ाने की वैज्ञानिक विधि
 - * जीवन जीने की कला
 - * तनाव प्रबंधन
- आदर्श शिक्षक कार्यशाला
 - * अध्यापक हैं युग निर्माता
 - * शिक्षण की विविध विधायें
 - * बड़े आदमी नहीं, महामानव बनें
- मिशन परिचय
 - * युगऋषि की युग निर्माण योजना
 - * शान्तिकुञ्ज परिचय
 - * DSVV परिचय
- कॉलेज एवं संस्थान में कार्यक्रम हेतु विषय
 - * युवा जागृति अभियान एवं हमारे पंच महाअभियान
 - * बुद्धि बढ़ाने की वैज्ञानिक विधि
 - * जीवन जीने की कला/व्यक्तित्व परिष्कार

- * समय प्रबंधन
- * तनाव प्रबंधन
- * शिक्षा के साथ विद्या
- * रचनात्मक गतिविधियाँ
- * Holistic Health Management
- * Individual & Corporate Excellence based on Value
- * Problem of today, Solutions of tomorrow
- * Abusing Habit "Pause & Think"
- * व्यसन मुक्ति /कुरीति उन्मूलन
- * वैज्ञानिक अध्यात्मवाद
- * सेवा भावना हेतु श्रमदान
- * Effective Public Addressing

• ग्रामीण क्षेत्रों हेतु कार्यक्रम-

- * युग ऋषि की ग्राम तीर्थ योजना
- * व्यसन मुक्ति - कुरीति उन्मूलन
- * पंच महाभियान एवं हमारे सप्त आन्दोलन
- * ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों हेतु कार्यक्रम (उपर्युक्तानुसार)
- * स्वच्छता अभियान
- * युवा जागृति अभियान
- * बाल संस्कार शाला

सहायक साहित्य/ संदर्भ ग्रंथ-

1. युवा क्रान्ति पथ
2. जाग उठी तरुणाई
3. वर्तमान चुनौतियाँ और युवावर्ग
4. युवा समस्या और समाधान
5. हारिये न हिम्मत
6. युवाओं को महाकाल का आवाहन
7. सफल जीवन की दिशा धारा
8. आर्थिक स्वावलम्बन
9. ग्रामोत्थान की ओर
10. स्वस्थ रहने की कला
11. समझदारों की नासमझी
12. युवा शक्ति, दर्शन एवं दृष्टि
13. सर्वसुलभ उपासना साधना
14. समग्र क्रान्ति हेतु युवाओं की तैयारी
15. जीवन जीने की कला
16. युग निर्माण में युवाओं का सुनियोजन
17. सेवा धर्म और उसका स्वरूप
18. हम बदलें तो युग बदले
19. आगे बढ़ने की तैयारी
20. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत
21. मानव जीवन की गरिमा
22. जीवन लक्ष्य और उसकी प्राप्ति
23. मानव प्रगति और पर्यावरण
24. बाल संस्कार शाला मार्गदर्शिका
25. छात्रों का निर्माण अध्यापक करें
26. हमारे सात आन्दोलन
27. विचार क्रान्ति
28. उत्तिष्ठत जाग्रत
29. बच्चों का निर्माण परिवार की प्रयोगशाला में

* * *

DIVINE INDIA YOUTH ASSOCIATION

Vision : Rebuild Divine India through Educated, Healthy, Self-reliant, Courteous, Sensitive divine youth through training and workshops, and undertake constructive, nation building activities.

Mission : To create divine India by employing the potential of youth towards rebuilding and development of the nation, and thereby transforming individual, family, and society at large.

Objectives

- Bring idealism in the dreams of youngsters.
- Make youth healthy, self-reliant, educated, courteous and sensitive towards social and national issues.
- Reorient the thought process of Indian youth.
- Bring back the Golden Age - Satyug with peace and harmony in the world.
- Manifestation of Divinity in youth through Scientific Spirituality

Patron Founder

Dr. Pranav Pandya, M. D.

Head - All World Gayatri Pariwar

Chancellor - Dev Sanskriti University, Haridwar

Author - Several books on Scientific Spirituality and Personality Refinement

Chief Editor - Akhand Jyoti (published in 8 languages, over 3 million readers world-wide)

U | S | A (Upasana, Sadhna, Aradhna)

DIYA's 3-fold approach to individual, family & social transformation

Upasana : (Process of imbibing divine qualities)

Devotional practice of being in emotional proximity with divinity that leads to instilling of divine qualities in an individual.

Sadhana : (Refining self by leading a disciplined life)

Sadhana stands for self-enrichment. Devout spiritual endeavors aimed at inner illumination and elevation, which include dedicated efforts of self-transformation through control over mind and other senses.

Aradhana : (Offering selfless service to humanity)

Utilizing the acquired virtues for the betterment of the society.

Activities :

DIYA provides a unique platform to youngsters for re-formative and constructive revolution aimed at holistic development of self, family and society. Every DIYA member shall take a pledge to reform himself/herself first, and then work towards reforming the world at large. DIYA is working on the following movements:

1) Self Refinement

- Conducting workshops in schools, colleges and corporate houses to teach and promote DIYA's 3-fold approach.
- Simple living high thinking
- Promoting Value Based Education and Bal Sanskar Shala for children

2) Self-Reliance

- Camps for teaching basic self employment skills by promoting cottage industries
- Training camps and offering certificate courses
- National and International Youth Conventions to motivate and guide youth for constructive work
- Corporate Social Responsibility – Effective techniques

3) Holistic Health Management

- Camps on Pragma Yog, Meditation, Stress Management, Pranayam, Life Management
- Training and treatment camps on Holistic Health Mgmt.

- Workshops on Traditional Medicines
- Blood Donation Camps

4) De-addiction

- Creating awareness about evils of addiction to alcohol, tobacco etc. through rallies, workshops and poster campaigns
- Councelling in rural and urban areas

5) Protection of Environment

- Environmental protection by Tree Plantation (Vriksha Ganga campaign)
- Awareness on Yagya for reducing air and water pollution
- Cleaning drives at places of worship, water sources and public places

DIYA : Shaping the Great Nation

India is on the threshold of a major transformation. It has all the possibilities of leading the whole world in every field. This is because India has the largest population of youth in the entire world. Youth have always played a phenomenal role whenever a nation has earned distinctions in specific fields and attained great accomplishments.

DIYA aims at providing an idealistic vision of nation building by the youth through self development. India has led the world in ancient times through its unique culture. By adopting its basic principles in the modern context, India can definitely regain its position.

DIYA for Me

DIYA is a movement for the youth of a great nation. DIYA is based on strong tenets and principles, also set realistic and achievable goals for itself. People who are young at heart and mind, and feel strongly about the new vision for India are welcome to join DIYA irrespective of age, caste or religion. Join us to attain a life full of happiness and vigor and feel the pride of taking India to great new heights.

दिव्यता जागरण कार्यशाला

Divine Workshop

मनुष्य ने हर क्षेत्र में प्रगति की है। फिर भी सुख, सन्तोष, शान्ति, प्रसन्नता का जीवन में अभाव है। इस सबका कारण है, आत्म विस्मृति। इन दिनों मानव जाति आत्म विस्मृति के संकट से गुजर रही है। प्रत्यक्षवाद ने आदर्शों पर से आस्थाएँ बुरी तरह डगमगा दी हैं। जैसे भी बने, स्वार्थसाधन ही प्रमुख दृष्टिकोण रह गया है। हर ओर भौतिकवाद का ही बोलबाला है। मनुष्य अपने आपको मन समेत इन्द्रियों का ही समुच्चय, शरीर मानता है। इसलिए उसकी जो कुछ इच्छा, अभिलाषा, आकांक्षा, चेष्टा होती है, वह शरीर की परिधि तक ही सीमित होकर रह जाती है। सभी क्रियाकलाप उसी में सीमाबद्ध होकर रह गये। फिर भले ही इसके लिए अपनी आत्मा या मनुष्यता की गरिमा को ही दाँव पर क्यों न लगाना पड़े। फलतः मनुष्य मनुष्यता खो देने के मार्ग पर चल पड़ा है।

आत्मा भी कोई चीज है, इसके विषय में कुछ सोचा, किया नहीं जा रहा, परिणामतः व्यक्ति, परिवार, समाज के अस्तित्व पर ही संकट आ पड़ा है। सब कुछ रहते हुए उसे आन्तरिक प्रसन्नता, आत्मिक संतुष्टि का अनुभव नहीं होता। मन में, हृदय में एक प्रकार की रिक्तता अनुभव होती रहती है। मानसिक अशान्ति बनी रहती है। आन्तरिक तड़पन 'कुछ तो अभाव है' का एहसास निरंतर सताता रहता है। सभ्यता शरीर को और सुसंस्कारिता मन को प्रभावित करती तथा परिष्कृत बनाती है। यह पक्ष जब तक उपेक्षित रहेगा, तब तक आन्तरिक उल्लास का अनुभव नहीं किया जा सकता।

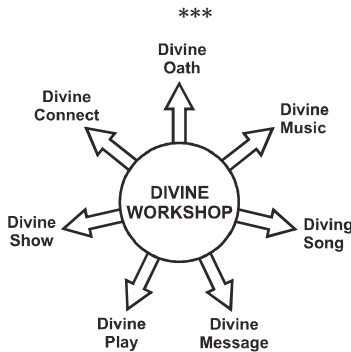
भौतिक उपलब्धियों की प्रतिस्पर्धा की इस दौड़ में आज का युवा, जीवन के वास्तविक आनन्द, उद्देश्य, अपनी मौलिकता और अपनी वास्तविक पहचान से दूर होता जा रहा है। परिणामतः वह जिस रिक्तता का अनुभव करता है, उसे पूर्ण करने की चाह में दिखावेबाजी, क्लब, सिनेमा, नशों आदि की ओर प्रवृत्त हो रहा है, मार्गभ्रमित हो रहा है। परंतु वहाँ भी उसे आन्तरिक संतुष्टि नहीं मिलती। उसकी तलाश पूरी नहीं होती। कुछ समय बाद जब उसे होश आता है, तो वह स्वयं को लुटा हुआ महसूस करता है और अवसादग्रस्त हो जाता है, टूट जाता है।

एकांगी विकास का ही यह परिणाम है। वस्तुतः भौतिक और आध्यात्मिक, शरीर और आत्मा दोनों की ही आवश्यकताओं का ध्यान रखने से जीवन में पूर्णता आती है। आत्म संतुष्टि का अनुभव होता है।

युवा जीवन की इस रिक्तता की पूर्ति कैसे हो, युवा जीवन के इस तनाव से कैसे बाहर निकलें, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए गायत्री परिवार द्वारा दिव्यता जागरण कार्यशालाओं (Divine Workshops) का आयोजन किया जाता है।

इसके अंतर्गत मानव जीवन की गरिमा, Stress Management, Time Management, Life Management, Personality Refinement, Scientific Spirituality, Corporate Excellence, Art of Living, Holistic Health Management आदि विषयों पर स्कूल, कॉलेज, कॉर्पोरेट सेक्टर में कार्यशालाएँ सम्पन्न की जाती हैं।

यह कार्यशाला समय, परिस्थिति, आवश्यकतानुसार दो घण्टे, चार घण्टे, एक दिवसीय अथवा दो दिवसीय तक की हो सकती है।



एक दिवसीय युवा चेतना शिविर, प्रारूप

समय	कार्यक्रम
प्रातः 08.00-08.30	पंजीयन
प्रातः 09.05-09.15	दीप प्रज्वलन एवं सामूहिक साधना
प्रातः 09.15-09.30	स्वागत गीत एवं अतिथि स्वागत
प्रातः 09.30-09.40	प्रगति प्रतिवेदन
प्रातः 09.35-10.00	अतिथि उद्बोधन
प्रातः 10.00-11.00	उत्तिष्ठत जाग्रत
प्रातः 11.00- 12.30	व्यक्तित्व परिष्कार के सूत्र
दो. 12.30-01.30	भोजनावकाश
दो. 01.30-02.30	हमारे रचनात्मक आंदोलन
दो. 02.30-03.00	युवा मण्डल का गठन एवं कार्य पद्धति
अप. 03.15-03.30	रिपोर्टिंग एवं रिकार्ड रखरखाव तंत्र
अप. 03.30-03.45	युवा प्रवासी टोली अवधारणा का परिचय
अप. 04.00-04.30	प्रतिभागियों का प्रश्न समाधान सत्र
अप. 04.15-04.45	भावी योजना एवं लक्ष्य निर्धारण व संकल्प
अप. 04.45-05.00	आभार उद्बोधन, शांतिपाठ
सायं 05.00	समापन एवं विदाई ।

वृक्ष गंगा अभियान

दशकूपसमो वापी, दशवापीसमो हृदः ।

दशहृदसमः पुत्रः, दशपुत्रसमो द्रुमः ॥

भावार्थ- दस कुओं के समान एक वापी होती है। दस वापियों के समान एक सरोवर होता है। दस सरोवरों के समान एक पुत्र का महत्त्व है। इसी प्रकार दस पुत्रों के समान एक वृक्ष लगाना पुण्यदायी होता है।

वृक्षारोपण एक पुनीत कर्तव्य-

वृक्ष विषपायी शिव है, जो सदा कल्याण करते हैं, संसार के विष CO₂ को पीकर कल्याणकारी प्राणदायी प्राण वायु O₂ प्रदान करते हैं। अपने जीवनकाल में करोड़ों की सम्पदा प्रकृति में लुटाते हैं और अपने देवता होने का प्रमाण देते हैं।

वृक्ष ही हमारे जीवन साथी हैं, बचपन के पालने से लेकर अन्त्येष्टि की लकड़ी इन्हीं से प्राप्त होती है। वृक्ष ही हैं, जो बादलों को आकर्षित करते, नदियों को सदानीरा बनाते और प्राणी जगत् के जीवन को आधार देते हैं।

एक वृक्ष के अनुदान (50 वर्ष में)

1. प्राण वायु (Oxygen)	5,00,000 रु.
2. वायु प्रदूषण नियंत्रण एवं भूमि की उत्पादकता वृद्धि (Air Pollution control & Improvement in Soil Fertility)	31,00,000 रु.
3. भूमिक्षरण नियंत्रण (Soil Erosion control)	15,60,000 रु.
4. जल संरक्षण (Water Conservation)	18,80,000 रु.
5. पशु पक्षियों का आश्रय (Wildlife Shelter)	16,60,000 रु.
6. काष्ठ, फल, चारा (Wood, Fruits & Fodder)	4,00,000 रु.

कुल योग-

1,01,00,000 रु.

(एक करोड़ एक लाख रुपये)

अतः वृक्ष गंगा अभियान के अन्तर्गत तरुपुत्र/तरुमित्र योजना में भागीदार बनकर एक वृक्ष का रोपण कर उसे पुत्रवत् पालने अथवा मित्रवत् उसकी रक्षा करने का संकल्प करें। समाज को एक करोड़ से अधिक राशि का अनुदान देने का पुण्य कमाएँ तथा आने वाली पीढ़ियों को विरासत में हरी-भरी धरती और खुशहाली देकर जायें।

वृक्ष गंगा अभियान के विविध सोपान-

1. श्रीराम स्मृति उपवन

(शहर-नगर के सार्वजनिक स्थलों के लिए)

2. श्रीराम स्मृति वन / पर्वत

(शहर-नगर से दूर व गाँवों की परती/खाली भूमि व पहाड़ियों के लिए)

3. श्रीराम वाटिका

(घर व फार्म हाऊस आदि निजी स्तर के लिए गमलों में स्वास्थ्य, तुलसी वाटिका, वास्तु मण्डल वाटिका)

4. हरियाली चूनर

(नदी एवं तालाबों के तटों/घाटों पर सघन वृक्षारोपण)

उद्देश्य - आसन्न पर्यावरण संकट यथा-ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस प्रभाव, मौसम चक्र का असंतुलन, बढ़ता प्रदूषण, विरल ओजोन परत के सम्बन्ध में जन-जागरण करना एवं समाधान हेतु वृक्ष गंगा अभियान में भागीदार बनाना।

1. श्रीराम स्मृति उपवन

वृक्ष गंगा अभियान का शहर नगरों के सार्वजनिक स्थलों के लिये यह एक बहुत ही उपयोगी सेवा का रचनात्मक प्रकल्प है। इसके द्वारा मानव समाज को अच्छा स्वास्थ्य, पर्यावरण का संवर्धन और प्रकल्प को संचालित करने वाले व्यक्ति/संस्था को स्वावलम्बन प्राप्त होता है।

आज शहर-नगरों में प्रातः/संध्या काल भ्रमण के लिए दूर या यातायात भरी सड़कों पर जाना पड़ता है, फिर भी शुद्ध स्वास्थ्य वर्धक वायु नहीं मिलती है। उपवन के एक्यूप्रेसर पथ पर भ्रमण से व्यक्ति का प्राकृतिक एक्यूप्रेसर उपचार होता है। जीवन निरोग बनता है। पथ के साथ लगी आयुर्वेदिक औषधियों से आरोग्यवर्धक प्राणवायु प्राप्त होती है। पथ के मध्य स्थापित दिव्य वृक्षों के नवग्रह वृक्ष मण्डल, वास्तु वृक्ष मण्डल, त्रिवेणी, त्रिदेव, हरिशंकर, देववृक्ष, तुलसी, कल्पवृक्ष, यज्ञशाला आदि की परिक्रमा से जीवन में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है, जिससे जीवन सुखी व समृद्ध होता है।

प्राकृतिक आहार केन्द्र संचालित होने से ताजे स्वास्थ्य वर्धक प्राकृतिक पेय, जवारा, आँवला, एलोवेरा, लौकी, करेला, पालक, टमाटर, गाजर आदि रस, गौमूत्र, पंचगव्य, शहद-नीबू-पानी और अंकुरित आहार सेवन के कारण प्राकृतिक रूप से व्यक्ति स्वस्थ रहता है। श्रीराम स्मृति उपवन को शहर-नगर-कॉलोनी के मध्य सार्वजनिक या निजी उद्यानों को गोद लेकर या भूमि खरीदकर विकसित कर संचालन व्यक्ति या संस्था स्तर पर किया जा सकता है।

उपवन घटक

* एक्यूप्रेशर पाथ * पिरामिड यज्ञ शाला * वास्तु वृक्ष मण्डल * नवग्रह वृक्ष मण्डल * देव वृक्ष * कल्पवृक्ष * हरिशंकरा * त्रिवेणी * त्रिदेव * पक्षी विहार * जवारा वाटिका * ध्यान प्राणायाम स्थल * प्राकृतिक आहार केन्द्र

उपलब्धियाँ

* पर्यावरण संरक्षण * स्वास्थ्य संवर्धन * स्वावलम्बन * आयुर्वेद औषधि उपयोगिता, जानकारी, जागरूकता।

2. श्रीराम स्मृति वन / पर्वत

स्मृति वन / पर्वत शहर-नगरों से दूर, गाँवों, खाली भूमि व पहाड़ियों को हरा-भरा करने का पर्यावरण संवर्धन का, भूमि जल संरक्षण का प्राकृतिक संतुलन बनाने एवं ग्लोबल वार्मिंग रोकने हेतु बहुत ही उपयोगी सेवा कार्य है। साथ ही समाज में व्यक्ति की स्मृतियों, जन्म दिवस, विवाह दिवस, पुण्य तिथि आदि को चिरस्थायी बनाये रखने के लिए वृक्षों को रोपित करने का एक देवकार्य भी है। तरु को पुत्रवत् या मित्रवत् अपनाकर उसका रोपण-संरक्षण करना इसकी विशेषता है।

वन / पर्वत घटक

* उपयोगी वृक्ष * वनौषधियाँ * ध्यान * प्राणायाम स्थल * भ्रमण परिक्रमा पथ

उपलब्धियाँ

* पर्यावरण संरक्षण-संवर्धन * भूमि-जल-संरक्षण * पक्षियों के लिए आश्रय * जन्म दिवस, विवाह दिवस, पुण्य तिथि आदि स्मृतियों का चिरस्थायी स्थल

3. श्रीराम वाटिका

प्रत्येक घर के लिए यह बहुत ही उपयोगी प्रकल्प है। इसके माध्यम से प्रत्येक घर, जहाँ वाटिका हेतु भूमि न भी हो, वहाँ भी गमलों में युगऋषि के स्वप्न को साकार कर मसाला वाटिका, गमलों में स्वास्थ्य वर्धक जड़ी-बूटियाँ, तुलसी, दिव्य वृक्ष वास्तु मण्डल, शाक-सब्जियाँ आदि लगायें, जिससे परिवार को स्वास्थ्य, स्वावलम्बन व सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त हो।

वाटिका घटक

* वास्तु वृक्ष मण्डल * मसाला वाटिका * स्वास्थ्य रक्षक औषधियाँ * शाक-सब्जियाँ * तुलसी वाटिका।

उपलब्धियाँ

* स्वास्थ्य * सकारात्मक ऊर्जा * श्रम का उपयोग * धन की बचत * राष्ट्र सेवा।

नवग्रह वाटिका- नव ग्रहों से सम्बन्धित पौधों का रोपण

सूर्य-आक, चन्द्र-पलाश, मंगल-खैर, बुध-अपामार्ग, बृहस्पति-पीपल, शुक्र-गूलर, शनि-शमी, राहू-दूर्वा, केतु-कुश।

राशि वाटिका- राशि अनुसार वृक्षों का रोपण

मेष-खैर, वृषभ-गूलर, मिथुन-अपामार्ग, कर्क-पलास, सिंह-मदार, कन्या-दूर्वा, तुला-गूलर, वृश्चिक-खैर, धनु-पीपल, मकर-शमी, कुम्भ-शमी, मीन-कुश

नक्षत्र वाटिका-नक्षत्रों से सम्बन्धित वृक्षों का रोपण

पंचवटी- पूर्व में पीपल, पश्चिम में बरगद, उत्तर में बेल, दक्षिण में आँवला एवं आग्नेय दिशा में सीता अशोक का पेड़ लगाना।

त्रिवेणी- पीपल, बरगद एवं नीम के पेड़ लगाना।

हरिशंकरी- पीपल, बरगद एवं पाकड़।

पंचपल्लव- देवालियों में धार्मिक महत्त्व के पौधों का रोपण। जैसे-आम, जामुन, पीपल, बिल्व आदि।

तरु प्रसाद- यज्ञादि धार्मिक आयोजनों पर प्रसाद में पेड़े के स्थान पर पेड़ बाँटें।

आवाहन- अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा संचालित वृक्ष गंगा अभियान में भागीदार बनें, और अपने जन्मदिन, विवाह दिन, पितरों की स्मृति को अमिट बनाने हेतु तरु को मित्रवत् या पुत्रवत् स्वीकार कर एक पौधा अवश्य रोपें।

4. हरियाली चूनर

हमारे देश में नदियों को 'देवी माँ' कहकर उनकी पूजा की जाती है और पर्व-जयंतियों पर श्रद्धा प्रकट करते हुए नदियों को कपड़े की चूनर चढ़ाई जाती है, जो स्वयं भी जल प्रदूषण का कारण है। वृक्ष बादलों के मित्र हैं। ये बादलों को आकर्षित कर उन्हें बरसने को मजबूर करते हैं। अपनी जड़ों से पानी एवं मिट्टी का क्षरण रोककर उनका संरक्षण करते हैं। यही संरक्षित जल मैदानी नदियों और तालाबों को सदानीरा बनाये रखता है, अतः नदियों और तालाबों के तट पर कपड़े की चूनर के स्थान पर सघन वृक्षारोपण करना ही हरियाली चूनर है।

संक्षेप में कार्य योजना -

- एक करोड़ वृक्षों का तरुपुत्र/तरुमित्र के रूप में रोपण-पालन-संरक्षण।
- 1008 श्रीराम स्मृति उपवनों/वाटिकाओं की स्थापना।
- नदियों के तटों पर सघन वृक्षारोपण कर 'हरीचूनर' चढ़ाना।

- नक्षत्र, राशि, ग्रह, वास्तु मण्डल वाटिकाओं की स्थापना ।
- पंचवटी, त्रिवेणी, हरिशंकरी (पवित्र वृक्ष समूह) की स्थापना ।
- बुद्ध वाटिका, महावीर वाटिका, गुरु के बाग (नानक वाटिका), कुरानी वाटिका, मसीही वाटिका की स्थापना ।
- जन्म दिन, विवाह दिन पर वृक्षारोपण परम्परा का प्रचलन ।
- पितरों के तर्पण-संस्कार अथवा उनकी स्मृति में वृक्षारोपण की प्रेरणा एवं प्रचलन प्रारंभ करना ।
- यज्ञ संस्कार आदि धार्मिक कार्यक्रमों में वृक्षारोपण का संकल्प कराना एवं प्रसाद रूप में पौधों का वितरण ।
- शहरों में उजड़े उद्यानों को तथा ग्रामीण क्षेत्र में सूखी पहाड़ियों, चरागाहों, देव स्थानों को गोद लेकर स्थानीय जन सहयोग से सघन वृक्षारोपण अभियान एवं श्रीराम स्मृति उपवनों की स्थापना ।
- विद्यालय एवं महाविद्यालयों में विद्यार्थियों को तरु मित्र बनाकर वृक्षारोपण ।
- घरों की छत अथवा आँगन में 'श्रीराम स्मृति वाटिका', 'गमलों में स्वास्थ्य', महौषधि तुलसी की स्थापना ।
- सार्वजनिक स्थल रोड के किनारे एवं सरकारी गैर सरकारी कार्यालयों के परिसरों में वृक्ष गंगा अभियान के अन्तर्गत वृक्षारोपण ।

नोट - पौधे स्थानीय वन विभाग, उद्यान विभाग अथवा प्रायवेट नर्सरी से प्राप्त किये जा सकते हैं ।

शुभ संकल्प

“अपनी साँसों का कर्ज चुकाएँ - एक पौधा अवश्य लगाएँ।”

संकल्प करें कि सम्पूर्ण प्रकृति हमारी माता है, हम उसके पुत्र-पुत्री हैं। हम उसकी रक्षा के लिए अपने जन्म दिन के अवसर पर हर वर्ष एक पौधा अवश्य लगायेंगे व अपने मित्रों को भी ऐसा करने के लिये प्रेरित करेंगे। वृक्षों को तरु पुत्र/ तरु मित्र मानकर उनका पोषण करेंगे ।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

* तरु पुत्र

* तरु सिंचन

* वृक्षारोपण एक परम पुनीत कर्तव्य

वृक्ष प्रकृति के परिधान हैं, आध्यात्मिक प्रशिक्षक हैं, जल दाता, जीवन दाता हैं, मानव जाति के अनन्य सेवक हैं, प्राण दाता, आरोग्य दाता धनवन्तरि हैं तथा कर्ण और दधीचि जैसे दानदाता हैं ।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

युग ऋषि की ग्राम तीर्थ योजना 'गाँव की गोद में'

“आओ चलें गाँव की गोद में” और बनाएँ युग ऋषि के सपनों के “ग्राम तीर्थ”

“विश्वम् पुष्टम् ग्रामेऽ अस्मिन् अनातुरम्।” -(यजुर्वेद 16/48)

अर्थात्- यह ग्राम अनातुर (निश्चिंत) तथा परिपुष्ट विश्व की इकाई के रूप में स्थित रहे।

आज भी भारत गाँवों में रहता है। व्यक्ति से घर, घर से गाँव और गाँव से भारत का निर्माण संभव है। वैश्विक बाजारवाद के फलस्वरूप व्यावसायिक संगठनों की घुसपैठ एवं ओछी राजनीति के कुचक्र ने गाँवों की सहयोग-सहकार युक्त संस्कृति को तहस-नहस कर दिया है। परिणाम में गंदगी, अशिक्षा, परावलम्बन, अस्वस्थता, बिखराव एवं पलायन की समस्या मुँह बाये खड़ी है। गाँव दुबले हो रहे हैं और शहरों का मोटापा बढ़ रहा है। गाँव की 65 % से अधिक जनसंख्या के जीवन का आधार ये ग्राम ही हैं। महात्मा गांधी के सपनों के राम राज्य में समग्र ग्राम विकास ही मुख्य है। युग ऋषि ने संस्कार युक्त, व्यसनमुक्त, कुरीति मुक्त, स्वच्छ, स्वस्थ, शिक्षित, स्वावलम्बी एवं सहयोग-सहकार से भरे-पूरे गाँव के विकास की रूप-रेखा प्रस्तुत की है। प्रत्येक प्रज्ञा संस्थान - शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठ/चेतना केन्द्र अपने कार्यक्षेत्र में न्यूनतम एक ग्राम तीर्थ को विकसित करें।

ग्रामोत्थान के मूलभूत आधार-

- विकास का मूल आधार परिष्कृत व्यक्तित्व (श्रेष्ठ व्यक्तित्व ढालने की विधा)।
- मुट्टी फंड (अंशदान) से साधन और सामूहिक श्रमदान से योजनाएँ संचालित हों।
- ऋषि सूत्रों पर आधारित विकास।
- भारत की आवश्यकता व जमीनी हकीकत के अनुरूप तकनीक व कार्यक्रम।
- सहकारिता व सामूहिकता विकास प्रक्रिया के प्रमुख अंग।
- समग्र एवं टिकाऊ विकास (व्यक्ति, प्रकृति एवं समाज का समन्वित-संतुलित विकास) की अवधारणा एवं पहल।
- सामुदायिक कार्यों के लिए सामूहिक श्रमदान का प्रचलन।
- परिष्कृत 'धर्मतंत्र से लोकशिक्षण' कार्य प्रणाली का प्रमुख अंग।
- गोवंश आधारित कृषि एवं अर्थ व्यवस्था, शिक्षा, चिकित्सा, ऊर्जा, कृषि, उद्योग, व्यापार, मनोरंजन के क्षेत्र में पूर्ण स्वावलम्बन।
- ग्राम से कच्चे माल का निर्यात न हो, प्रोसेस होने के बाद ही बाहर जाए। साथ ही नमक, तकनीक एवं शिक्षा के अतिरिक्त शेष संसाधन गाँव के हों, तो गाँव समृद्ध एवं स्वावलम्बी बनेगा।
- गोधन को कृषि, ऊर्जा, चिकित्सा का आधार बनाएँ।

संस्कार युक्त गाँव

- धर्मतंत्र से लोकशिक्षण का क्रम बने।
- पर्व-त्यौहारों का प्रगतिशील ढंग से सामूहिक आयोजन।
- देवालयों का प्रबंधन एवं जनजागरण केन्द्र के रूप में विकास।
- संस्कार परम्परा का प्रचलन।
- दीवार लेखन एवं चौपाल स्वाध्याय।

स्वच्छ-निर्मल-सुवासित गाँव

- निस्तार जल निकास का उचित प्रबंध नाली, सोकपिट निर्माण।
- पॉलीथिन, प्लास्टिक, डिस्पोजल दोने-पत्तल पर प्रतिबन्ध एवं उपयोग की स्थिति में उचित प्रबंधन।
- कपड़े के थैले, पत्ते/कागज के दोने-पत्तल का प्रयोग।
- खुले में शौच पर रोक। कचरा दान का प्रयोग।
- गोबर, गोमूत्र, मल-मूत्र का बाँयो गैस /खाद में उपयोग।
- सामूहिक श्रमदान की अनिवार्यता और नियमित प्रयोग।
- वृक्षारोपण पर विशेष ध्यान। स्वच्छ एवं हरा 'Clean and Green' ग्राम।

सुशिक्षित गाँव

- धर्मतंत्र से लोकशिक्षण का प्रबन्ध।
- रात्रिकालीन प्रौढ़ शाला, बाल संस्कार शाला। कामकाजी विद्यालय, एकल विद्यालय का संचालन। व्यावहारिक ज्ञान का प्रशिक्षण।
- गाँव विकास की विविध धाराओं की अद्यतन जानकारी।
- स्कूली बच्चों हेतु निःशुल्क कोचिंग।
- भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन।
- कन्या शिक्षा तथा 100 % शिक्षा हेतु प्रयास।

व्यसन मुक्त - कुरीति मुक्त गाँव

- नशा मुक्ति प्रदर्शनी, गोष्ठी आयोजन। व्यसन से बचाकर सृजन में लगाने की प्रेरणा।
- नशा मुक्ति उपचार एवं परामर्श केन्द्र।
- सार्वजनिक स्थलों पर नशीली वस्तु विक्रय एवं प्रयोग पर पूर्णतः प्रतिबन्ध।
- नशा मुक्त विद्यालय, पंचायत में कठोर नियंत्रण संहिता, नशीली वस्तुओं के निर्माण पर रोक।
- टोना-टोटका, झाड़-फूँक, ताबीज से मुक्ति। सामूहिक आदर्श विवाहों का प्रचलन।
- मृतक भोज पर रोक।

स्वस्थ गाँव

- श्रम के प्रति सम्मान का भाव विकसित करना।
- योग-व्यायाम-प्राणायाम-ध्यान केन्द्र संचालन।
- गो द्रव्य-दूध, दही, मट्ठा, घी, गोमूत्र, पंचगव्य के प्रयोग को बढ़ावा।
- अंकुरित अन्न, शाकाहार, मौसमी-स्थानीय फल, जवारा रस का प्रयोग।
- वनौषधि, एक्यूप्रेसर, प्राकृतिक चिकित्सा का प्रबन्ध करना।

स्वावलम्बी गाँव

- गो आधारित कृषि, ऊर्जा, स्वास्थ्य तंत्र का विकास।
- लघु-कुटीर उद्योगों से दैनिक जरूरत की वस्तुओं का उत्पादन।
- कच्चे माल का निर्यात न हो, पक्का/प्रोसेस होकर बाहर बिकने जाये।
- गाँव के श्रम (मसल पावर) का उपयोग गाँव में ही सुनिश्चित करें।
- समयदान एवं मुट्टी फण्ड को ग्राम विकास हेतु नियोजन।
- शिक्षा, तकनीकी, नमक के अतिरिक्त आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन गाँव में हो।
- ऋषि-कृषि से खेती को स्वावलम्बी बनायें। खाद, ऊर्जा, तकनीकी, कीट-बीमारी, नियंत्रण जैविक हो।

सहयोग - सहकार से भरा-पूरा गाँव

- सामूहिक श्रमदान का प्रचलन।
- आपसी मतभेद-मुकदमे ग्राम सभा स्तर पर हल करें।
- जाति, लिंग, वर्ग, अर्थ भेद को कम करना।
- पर्व-त्योहारों का सामूहिक आयोजन।
- रास्ते, सड़कें, कुएँ, पाठशाला, मंदिर, पार्क, तालाब का सामूहिक श्रमदान से निर्माण/जीर्णोद्धार/प्रबन्धन।
- फावड़ा वाहिनी, सुरक्षा वाहिनी का निर्माण।

नोट- अपने चयनित ग्राम का पंजीयन शान्तिकुञ्ज में करायें।

सम्बन्धित पुस्तकें

- | | |
|--|----------------------------|
| * ग्रामोत्थान की ओर | * गोपालन व गौशाला प्रबन्धन |
| * राष्ट्र के अर्थतन्त्र का मेरुदण्ड गौशाला | * आर्थिक स्वावलम्बन, भाग-1 |
| * आर्थिक स्वावलम्बन, भाग-2 | * आर्थिक स्वावलम्बन, भाग-3 |
| * जड़ी-बूटी की व्यावसायिक खेती | * केंचुआ खाद संदर्शिका |
| * वृक्षारोपण एक परम पुनीत कर्तव्य | * गंदगी से घृणित असभ्यता |

फिर अपने गाँवों को हम स्वर्ग बनायेंगे,
अपने अंदर सोया देवत्व जगायेंगे।

बाल संस्कार शाला अभियान

समस्त क्रान्तियों का आधार- बाल संस्कार

नयी पीढ़ी का नवनिर्माण

‘देश में सब कुछ है, बस व्यक्तित्व नहीं। कहने को तो लोग बहुत हैं, जनसंख्या भी दिनों-दिन बढ़ रही है, पर खरे-परखे उच्चस्तरीय व्यक्ति नहीं हैं। आज के हिन्दुस्तान में न तो गांधी है, न सुभाष, न लोकमान्य तिलक है और न स्वामी विवेकानन्द, पर हम गढ़ेंगे और यह सब हम इस शरीर को छोड़ने के बाद करेंगे। चिन्ता की बात नहीं, तुम लोगों से करायेंगे। तुम्हें कुछ नहीं करना है। मैं तुम लोगों के पास नई पीढ़ी के बच्चे लाऊँगा। तुम उनके पास बैठना, उनसे अच्छी-अच्छी बातें करना, उन्हें साधनाएँ कराना, बाकी पीछे मैं सब कर दूँगा। स्थूल क्रियाकलापों को उत्कृष्ट बनाने की जिम्मेदारी तुम्हारी और सूक्ष्म में परिवर्तन, प्रत्यावर्तन करने की जिम्मेदारी हमारी।’

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य पुस्तक-‘बाल संस्कार शालाएँ इस तरह चलें’

संस्कृति का मूल - संस्कार

हमारी संस्कृति महामानवों की टकसाल रही है, हर व्यक्ति का आचरण देवत्व से भरपूर रहा है। इन सबके पीछे था, उनका प्रेरणाप्रद बचपन। हम सब जानते हैं कि हमारे व्यक्तित्व का 75% विकास 5-7 वर्ष की उम्र तक हो जाता है, जिसे ध्यान में रखते हुए संस्कार परिपाटी का प्रचलन आरंभ से ही रहा है। पारिवारिक पंचशील और आस्तिकता से ओतप्रोत उत्कृष्ट वातावरण से बच्चों के दिव्य संस्कारों का रोपण सहज ही हो जाता था। बालक के बहुआयामी व्यक्तित्व के गढ़ने में माता-पिता एवं गुरु होते थे, वहीं समाज का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता था।

वर्तमान संकट

आजकल बच्चे का जन्म एक एक्सीडेण्ट है, जहाँ माता-पिता आगामी जिम्मेदारी से पूर्णतः अनभिज्ञ होते हैं। बच्चे का निर्माण कैसे हो, इसका ज्ञान उन्हें नहीं होता। हर तरह के भौतिक साधन-सुविधाओं को बालक के लिए जुटा देना ही उन्हें अपना कर्तव्य जान पड़ता है। आधुनिक शिक्षा पद्धति में भी संस्कारों का लोप हो गया है। स्वार्थपरता, शार्टकट सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता बालक माता-पिता का गौरव हो गया है। अनियमित, असंयमित दिनचर्या के साथ फास्टफूड, जंक फूड ने नई पीढ़ी को श्रम से दूरकर रोगी बना दिया है।

युग ऋषि ने सुझाया समाधान

वर्तमान समस्याओं का एक मुश्त समाधान तथा श्रेष्ठ नागरिक गढ़ने का एक मात्र विकल्प है, बालकों को संस्कारवान् बनाना। बाल संस्कार शाला इस महती आवश्यकता को पूर्ण करती है। नौनिहालों के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक

विकास की इस योजना में उन्हें मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराया जाता है। बच्चों के माध्यम से सांस्कृतिक - सामाजिक परिवर्तन सरल है। बालक एक गीली मिट्टी की तरह है, जिसे किसी भी साँचे में ढाला जा सकता है। अतः बाल संस्कार शाला संचालन के माध्यम से ईश्वरीय विभूतियों से परिपूर्ण परिवार, समाज व राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य को गढ़ने का गौरव हम पायें।

बाल संस्कार शाला का प्राण है- जीवन विद्या

बाल संस्कार शाला संचालन का प्राण है, बच्चों को जीवन विद्या का शिक्षण। आचार्य का प्रतिबिम्ब होते हैं बच्चे। अतः जीवन विद्या का वही पाठ बच्चे सीखते हैं, जो आचार्य के आचरण से झलकता है।

प्रातः जागरण से लेकर शयन तक की दिनचर्या में मानवीय मूल्यों के अभ्यास का समावेश इस पाठ में किया गया है। नियमित अभ्यास व आचरण में उतर जाने पर ये छोटे-छोटे संस्कार बच्चे को महानता के राजमार्ग का अनुगामी बना देते हैं तथा उसके भीतर छिपी दिव्यता को प्रकट कर देते हैं। बालक हजार मनकों में हीरे की तरह पृथक् चमकने लगता है।

खेल, प्रेरक एवं मनोरंजक अभ्यास मन के साथ-साथ तन को भी पुष्ट करते हैं। वहीं सहयोग, सहकार, दया, करुणा, धैर्य, अनुशासन, साहस जैसे गुणों को उभारते हैं।

बाल संस्कार शाला-संचालन

हमारी मान्यता- बालक वस्तुतः भगवान् का ही रूप है व सम्पूर्ण ईश्वरीय विभूतियों से परिपूर्ण है। मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता एवं दिव्यता की अभिव्यक्ति ही विद्या अध्ययन का उद्देश्य है। आचार्य उस दैवीय ज्ञान के प्रकटीकरण में उद्दीपक तथा इस मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने वाला व्यक्तित्व है। स्वामी विवेकानन्द का कथन- “Every soul is potentially divine...” हमारी इस मान्यता की पुष्टि करता है।

सरल है संचालन- घर की बैठक, दालान या मंदिर के प्रांगण में शाला का संचालन किया जा सकता है, जिसमें अधिकतम 25 बच्चों के बैठने की व्यवस्था हो। स्थान के अनुरूप बच्चों की संख्या कम की जा सकती है। बच्चों के बैठने की व्यवस्था, पीने के लिए पानी व शौचालय की सामान्य व्यवस्था अनिवार्य है।

रविवार को सुविधानुसार- मात्र दो घण्टे के लिए कक्षा का आयोजन किया जाता है, जिसमें सामान्यतः 1 घण्टा 15 मिनट की बौद्धिक कक्षा तथा 45 मिनट खेलकूद के लिए निश्चित है।

एक श्यामपट, कुछ जानकारी देते फ्लैक्स, चाक, इस्टर (अथवा व्हाइट बोर्ड, मार्कर पेन) से सुसज्जित कक्षा का स्थान जीवन्त हो उठता है। आचार्य हेतु “बाल संस्कार शाला-मार्गदर्शिका” के साथ कुछ सहायक साहित्य पूर्णता भर देता

है। 5-13 वर्ष की आयुवर्ग के बच्चों का चयन इस हेतु किया जाये। बच्चे पास-पड़ोस के ही हों। पालकों को उद्देश्य की जानकारी देकर उनकी अनुमति आवश्यक है।

आचार्य की गरिमा

आचार्य वह जो आचरण से शिक्षा दे। बच्चों को जो कुछ हम सिखाना चाहते हैं, उसे स्वयं जीवन में उतारने का अभ्यास आचार्य को करना होगा।

व्यक्तित्व परिष्कार का यह अनूठा माध्यम बन सकता है। “सादा जीवन-उच्च विचार” आचार्य का पर्याय हो। समय पालन, शालीनता आचार्य के आभूषण हैं।

कक्षा की तैयारी में बच्चों का सहयोग लें। गीत, कहानी, प्रसंग कण्ठस्थ हों, भाव-भंगिमाओं के साथ प्रस्तुत करने की विद्या सीखें। कक्षा में रोचकता बनी रहे। बच्चों को भागीदारी व नेतृत्व के लिए प्रोत्साहित करें। इसी के साथ-साथ ट्यूटोरियल कक्षाएँ एवं कामकाजी बच्चों को अक्षर ज्ञान भी कराया जाये। त्योहार, पर्व, महापुरुषों की जयंतियों पर बच्चों को प्रेरणा दें। उनके जन्मदिन मनाएं।

पालकों से सम्पर्क बनाये रखें। बच्चों को सहयोग देने के लिए उन्हें प्रेरणा दें। बच्चों को गृह कार्य ऐसा दें, जिससे उनके भीतर सृजनात्मकता का विकास हो। स्मरण रहे-बच्चों का मूल्यांकन आचार्य का मूल्यांकन है।

एक परिजन - एक विद्यालय

बाल संस्कार शाला का क्रम विद्यालय में भी प्राचार्य/हेडमास्टर की अनुमति से चलाया जा सकता है। एक पीरियड- नैतिक शिक्षा की कक्षा के रूप में लिया जा सकता है, जिसमें बाल संस्कार शाला के पाठ्यक्रम को पढ़ाया जा सकता है। साथ ही इस क्रम में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के लिए बच्चों को जोड़ा जा सकता है। संस्कृति मण्डलों के माध्यम से विद्यालयीन गतिविधियों व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विद्यालय मित्र के रूप में सहयोग दिया जा सकता है। युग साहित्य की स्थापना, पत्रिकाओं की सदस्यता का प्रयास भी संभव है।

बाल संस्कार शाला - मार्गदर्शक साहित्य

- * बाल संस्कार शाला (मार्गदर्शिका)
- * शिक्षा एवं विद्या (वाङ्मय नं. 67)
- * सचित्र बाल कथाएँ (भाग 11)
- * उपनिषद् की कथायें
- * पंचतंत्र की कथायें
- * समाचार पत्रों के प्रेरक तथ्य / कारुणिक घटनायें
- * बच्चों को उत्तराधिकार में धन नहीं गुण दें
- * प्रेरणाप्रद दृष्टान्त (वाङ्मय नं. 67)
- * बाल निर्माण कहानियाँ (भाग 16)
- * महापुरुषों की जीवनियाँ (पूरा सैट)
- * हितोपदेश की कहानियाँ
- * बाल संस्कारशालाएँ इस तरह चलें,

आओ गढ़ें संस्कारवान् पीढ़ी

क्या आप जानते हैं?

अभिमन्यु ने चक्रव्यूह भेदन का रहस्य, अष्टावक्र ने वेदों का ज्ञान गर्भ में ही प्राप्त कर लिया था। हाँ! यह सत्य है कि बच्चे का भविष्य जन्म से पूर्व तय किया जा सकता है। गर्भस्थ शिशु में सुसंस्कारों की प्रतिस्थापना के लिए गर्भ धारण से पूर्व गर्भाधान संस्कार एवं गर्भ धारण उपरान्त पुंसवन संस्कार ऋषियों द्वारा दिया गया विज्ञान सम्मत प्रयोग है। जिसके द्वारा शिशु का सुसंस्कारी होना तथा उसका उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित किया जा सकता है। आज इस विधा को अमेरिका आदि देश भी मानने लगे हैं। National Academy of Science, National Research Council, California and Yale University of America ने अपने शोध में कहा है- कि गर्भवती माता की मानसिक और शारीरिक स्थिति, उसके विचार, चिन्तन और कार्य गर्भस्थ शिशु का भविष्य निर्धारित करते हैं।

संस्कारवान्, बुद्धिमान्, स्वस्थ व सुन्दर शिशु को जन्म कैसे दें?

हर माता पिता की यह हार्दिक इच्छा रहती है कि उनकी संतान बहुत सुन्दर संस्कारवान्, बुद्धिमान् एवं स्वस्थ हो। इसके लिये गर्भ में ही शिशु का पोषण कर उसके शरीर और शरीर को चलाने वाली आत्मा का विकास किया जाना संभव है। गर्भावस्था में शिशु का शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास कर उसे मनचाहे साँचे में ढाला जा सकता है।

शिशु के व्यक्तित्व का निर्माण वस्तुतः उसके जन्म के बाद नहीं, बल्कि गर्भकाल से ही आरम्भ हो जाता है और जन्म लेने तक 75% पूरा हो जाता है। यह प्रक्रिया हमें दिखाई नहीं देती, पर अदृश्य रूप से चलती रहती है। टेपरिकार्डर आवाज को जैसे अंकित कर लेता है, उसी तरह माता के मन में उठने वाले अच्छे बुरे सभी संवेग, गर्भस्थ शिशु अपनी स्मृति में समेट लेता है। इस समय शिशु पूर्ण सचेत (Conscious) प्राणी होता है, वह पूरी तरह से आत्म चैतन्य (Soul Conscious) भी होता है। गर्भस्थ जीवात्मा पूर्णरूपेण भावी माता पर निर्भर रहती है। अतः माता के सभी क्रिया कलाप, उसके साथ घटित होने वाली सभी घटनाओं की अमिट छाप गर्भस्थ शिशु के अवचेतन मन (Sub Conscious Mind) में अनुभूतियों (Feelings) के रूप में स्मृति स्वरूप अंकित होती जाती है। शिशु के विकास के लिये माँ का अनुकूल आहार विहार जितना आवश्यक है उतना ही जरूरी यह भी है कि उसे अच्छा वातावरण दिया जाये। जो उसकी मन की स्थिति को सात्विक, पवित्र, प्रसन्नचित और प्रफुल्लित रखे। हमारी इन्द्रियों के ज्ञान और चिन्तन ग्रहण करने के सारे स्रोत श्रेष्ठ होने चाहिये यानी गर्भवती स्त्री जो भी देखे, सुने, पढ़े, खाये सब कुछ सात्विकता से परिपूर्ण होना चाहिये। आखिर दिव्य, पवित्र वातावरण में ही तो दिव्य आत्मायें जन्मेंगी।

श्रेष्ठ पीढ़ी के निर्माण हेतु युग ऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने संस्कार परम्परा का पुनर्जागरण किया है साथ ही सशक्त मार्गदर्शन भी दिया है। संस्कारवान् आत्माओं के आवाहन हेतु गायत्री परिवार द्वारा एक अभियान चलाया जा रहा है 'आओ गढ़ें संस्कारवान् पीढ़ी'। इस अभियान को वैज्ञानिक दृष्टि प्रतिभावान् चिकित्सक दे रहे हैं तथा संस्कार संवर्धन का क्रम गायत्री परिवार के परिजनों द्वारा सम्पन्न कराया जाता है।

यदि आप भी अपने घर-परिवार में दिव्य आत्मा, संस्कारवान् संतान चाहते हैं तो इस अभियान में भागीदार बनें।

मार्गदर्शक साहित्य

- * हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण (वाङ्मय नं. 63)
- * संस्कारों की पुण्य परंपरा * संतान के प्रति हमारा कर्तव्य
- * पुंसवन संस्कार विवेचन * गायत्री महाविज्ञान
- * बच्चों को उत्तराधिकार में धन नहीं गुण दें

ध्यान योग से शारीरिक-मानसिक क्षमताओं का विकास

1. ध्यान के माध्यम से बैटरी चार्जिंग की भाँति व्यक्तित्व में अतिरिक्त ऊर्जा एकत्रित की जा सकती है।
2. ध्यान के अभ्यास से स्मरण शक्ति बढ़ती है।
3. ध्यान के द्वारा शरीर की त्वचा की बाह्य वातावरण के प्रति, प्रतिरोधी क्षमता 50% तक बढ़ जाती है।
4. नियमित अभ्यास से हृदय की गति 5 बार प्रति मिनट तक हो जाती है। जितनी कम हृदय गति होगी, उतना ही अधिक रक्त, आराम की बढ़ी अवधि में हृदय को मिलेगा और जीवनी शक्ति (वायटल केपेसिटी) बढ़ने से स्फूर्ति आ जायगी।
5. ध्यान के समय शरीर में ऑक्सीजन की खपत 20% तक कम हो जाती है, इससे अतिरिक्त ऑक्सीजन अन्य अनिवार्य कार्यों में लग जाती है।
6. थोड़े समय के ध्यान से भी लम्बे समय के विश्राम जैसी स्फूर्ति प्राप्त हो जाती है।
7. इससे उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने में सहायता मिलती है।
8. मांसपेशियों में रासायनिक क्रिया के कारण रक्त में अम्लरूपी विष, ब्लड लैक्टेट काफी बढ़ जाता है, अतः मानसिक तनाव, चिंता, थकान उत्पन्न होती है, ध्यानस्थ साधक के शरीर में यह विषैला पदार्थ 33% तक कम हो जाता है।
9. मस्तिष्क से निकलने वाली विद्युतीय तरंगें ध्यान से व्यवस्थित होने लगती हैं।
10. ध्यान से मानसिक संतुलन और सहज उल्लास की प्रवृत्ति बढ़ती है।

भागीरथी जलाभिषेक अभियान

‘जल है तो जीवन है’

1. निर्मल गंगा जन अभियान
2. जल संरक्षण हेतु अन्य कार्यक्रम
3. श्रीराम सरोवर

1. निर्मल गंगा जन अभियान

गंगा मात्र एक जल धारा नहीं वरन् भारत वर्ष की जीवन धारा है। भारतीय संस्कृति, सभ्यता, दर्शन एवं अध्यात्म का पवित्र प्रवाह है गंगा। आधे भारत को अपने आँचल में समेटे गंगा जन-जन में देवत्व, घर-घर में संस्कृति, तट-तट पर पवित्रता और श्री-समृद्धि बिखेरती, सागर को गौरव प्रदान करती है। देवात्मा हिमालय के गर्भ से सागर तक प्रवाहमान माँ गंगा देव संस्कृति के उद्गम और विकास की साक्षी रही है। वर्तमान संदर्भ में यह विचारणीय प्रश्न है कि ऐसी जीवन दायिनी नदी को हमने अपने स्वार्थ और अंधे विकास की खातिर मरणासन्न स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। जिस देश में सत्य सिद्ध करने हेतु गंगा की सौगंध ली जाती हो तथा जिसके जल की कुछ बूँदें मोक्ष की वाहक बनती हों उसी नदी के जल को आज हमने पीने और नहाने योग्य भी नहीं छोड़ा। वात्सल्यमयी माता गंगा आज भी अपने प्रवाह से हमें आशीर्वाद देने के लिये हमारे द्वार से बिना किसी शिकायत के सतत बह रही है। माता अपना कर्तव्य निभा रही है, किंतु हम उसके पुत्र बदले में उसे क्या दे रहे हैं? जिस नदी को हमें आदर और सम्मान देना चाहिये था, उसमें हम अपने नगर का मैला, उद्योगों का कचरा, नालों का पानी, शव इत्यादि बहा रहे हैं। मानो वह एक नदी नहीं कूड़ादान हो। सभ्यता की जननी से यह असभ्य व्यवहार अब असहनीय हो गया है। इसी भावना से आहत हो, अखिल विश्व गायत्री परिवार ने प्रारम्भ किया है एक देश व्यापी अभियान - “निर्मल गंगा जन अभियान”।

माँ गंगा के पाँच अंचल-

अभियान की सफलता हेतु (गोमुख से गंगा सागर तक) सम्पूर्ण 2525 किमी. लम्बे प्रवाह को पाँच अंचलों में विभक्त किया गया है-

1. भागीरथी अंचल- गोमुख से हरिद्वार तक
2. विश्वामित्र अंचल- हरिद्वार से कानपुर तक
3. भारद्वाज अंचल- कानपुर से बनारस तक
4. गौतम अंचल- बनारस से सुल्तानगंज तक
5. रामकृष्ण अंचल- सुल्तानगंज से गंगासागर तक

अभियान के पाँच चरण- अभियान की विविधता एवं निरंतरता को ध्यान में रखते हुए पाँच चरण तय किये गये हैं।

1. **प्रथम-** सर्वेक्षण- गोमुख से गंगा सागर तक विस्तृत सर्वेक्षण।
2. **द्वितीय-** “गंगा संवाद” (गंगा की व्यथा-कथा के आयोजन) तटीय नगरों-ग्रामों में आयोजन।
3. **तृतीय-** गंगा अमृत कुंभ जन जागरण यात्रायें (जन-जागरण, स्वच्छता, हरी चूनर-वृक्षारोपण हेतु पद यात्रायें)।
4. **चतुर्थ-** सहयोग आन्दोलन- जन सहयोग द्वारा घाटों-तटों की सफाई एवं हरी चूनर चढ़ाना। नियम-कानून पालन हेतु जन सहयोग जागरण।
5. **पंचम-** दस वर्ष तक शुद्धि एवं संरक्षण हेतु निरंतर प्रयास-पुरुषार्थ।

पाँच प्रयास - पाँच परिणाम

1. जल शुद्धि - निर्मल गंगाजल- गंगा जल की निर्मलता बनाये रखने के लिए जन-जन को प्रेरणा देना। 1. निर्माल्य (बासी फूल) विसर्जन पर रोक, इस्टबिन प्रयोग का प्रचलन अभ्यास में लाना। 2. साबुन-शैम्पू का प्रयोग न होने देना। 3. प्लॉस्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियों के विसर्जन पर रोक एवं इस हेतु तटों-घाटों के समीप “गंगा कुण्डों” का निर्माण। 4. शहर, आश्रम, गाँवों के सीवेज मिलने पर रोक, (पानी के आंशिक उपचार वाले हौज) सोक पिट “सोखता गह्वा” एवं सैटलिंग टैंक का निर्माण। 5. उद्योगों का प्रदूषित पानी गंगा में मिलने से रोकने हेतु उद्योगपतियों को जागरूक करना। सरकारी रोक हेतु आन्दोलन। 6. जल परीक्षण कर प्रदूषण से जनता को अवगत कराना। जन-जागरण, फिल्म प्रदर्शन, पोस्टर, दीवार लेखन, पत्रक वितरण, प्रदर्शनी, नुक्कड़ नाटक, जन सभा। पर्यावरण, गंगा सेवा मण्डलों का गठन।

2. तट शुद्धि - हरे-भरे स्वच्छ तट- तटों/घाटों की नियमित स्वच्छता, शौचालयों का निर्माण, तथा तटों पर सघन वृक्षारोपण का क्रम जन भागीदारी से करना। 1. तटों पर मल-मूत्र विसर्जन पर रोक एवं सुलभ शौचालयों का निर्माण (सरकारी, संस्थागत सहयोग से), 2. नियमित स्वच्छता का प्रबंध, 3. घाटों पर स्वच्छता कार्यक्रम 4. तटों की मरम्मत 5. तटों पर वृक्षारोपण- त्रिवेणी, पंचवटी का तटीय मन्दिरों में रोपण 6. हरी चूनर चढ़ाना (प्रवाह प्रभावित क्षेत्र में सघन वृक्षारोपण) 7. शवदाह के उचित स्थान तट से दूरी पर 8. गंगा की गोद में निर्माण/खनन पर रोक 9. पॉलिथिन एवं नशा निषेध 10. इस्टबिन/वर्मी कल्चर के पिट निर्माण 11. तटों को पानी से धोने के स्थान पर झाड़ू एवं पोंछे का प्रयोग 12. तीर्थ पुरोहितों से शुद्धि हेतु अपील- तीर्थ पुरोहितों की विशेष भागीदारी, तीर्थ पुरोहितों को संदेशवाहक, तीर्थ रक्षक बनाना, 13. गंगा सेवा मण्डलों द्वारा - तटों की सुरक्षा, सेवा एवं रखरखाव।

3. तटीय ग्राम शुद्धि - आदर्श ग्राम तीर्थ- तटीय ग्रामों में गोवंश आधारित कृषि का पुनर्जीवन तथा स्वच्छ, स्वस्थ, व्यसनमुक्त, सुशिक्षित, स्वावलम्बी ग्राम निर्माण हेतु प्रयास। 1. रासायनिक खेती का हतोत्साहन 2. गौपालन एवं गौ आधारित खेती को बढ़ावा 3. निस्तार के पानी का प्रबंध, सोक पिट (सोखता गड्ढा) तैयार करना 4. तटों पर वृक्षारोपण 5. व्यसनमुक्त, स्वच्छ, स्वस्थ, शिक्षित, सुसंस्कारी, स्वावलम्बी, सेवा-सहकार से भरा-पूरा गाँव, 6. घूरे (कचरे के ढेर) से सोना बनाओ, काम को प्रोत्साहन 7. प्रदर्शनी एवं फिल्म प्रदर्शन ग्रामों में 8. मण्डलों का निर्माण।

4. सद्या तीर्थ सेवन - तीर्थ गरिमा की रक्षा - हजारों श्रद्धावान् तीर्थयात्रियों को इस अभियान से जोड़ने और उन्हें इस संदेश को जन-जन तक पहुँचाने में भागीदार बनाने का प्रयास। 1. यात्रियों के बीच पर्व-त्योहारों पर पत्रक, माइक सम्पर्क द्वारा जन-जागरण 2. स्नान तिथियों पर जन-जागरण एवं दूसरे दिन सफाई 3. अभियान में तीर्थ यात्रियों का सहयोग प्राप्त करना 4. व्यसनमुक्ति एवं दीवार लेखन में सहयोग 5. तीर्थ सेवन क्यों और कैसे? पर सेमीनार एवं कार्यशालाओं का आयोजन।

5. दूषित जल स्रोत प्रबन्धन - स्वच्छ सदा नीरा गंगा- तटों पर स्थित हजारों फैक्टरियों के गंदे जल स्रोतों एवं गंदे नालों का ट्रीटमेंट करने के बाद ही गंगा में विलय की सुव्यवस्थित प्रक्रिया का संचालन, ताकि गंगा सदा निर्मल रहे। 1. उद्योगी नालों पर शून्य उत्सर्जन (जीरो डिस्चार्ज) लागू कराना 2. शहरी नालों पर सेटलिंग टैंकों का निर्माण, चेक डैम, सेटलिंग टैंक निर्माण, 3. सहायक नदियों एवं जल स्रोतों को स्वच्छ बनाए बिना गंगा को पूर्ण रूपेण निर्मल नहीं बनाया जा सकता, अतः गंगा की सहायक नदियों पर भी छोटे-छोटे अभियानों का क्षेत्रीय स्तर पर आयोजन 4. भागीरथी जलाभिषेक के माध्यम से समीपवर्ती/सहायक जल स्रोतों की शुद्धि 5. सूचना के अधिकार एवं जनहित याचिका माध्यम का उपयोग 6. प्रदूषित जल के विलय पर रोक हेतु सत्याग्रह करना।

**गंगा पुत्रों से आत्मीय अनुरोध- सोचो, समझो और उचित करो।
न करने योग्य**

- घर की कचरा युक्त पूजन सामग्री, बासी फूल गंगा में न डालें।
- तट पर पॉलीथीन का प्रयोग न करें।
- घाट पर नहाने एवं कपड़े धोने का साबुन प्रयोग न करें।
- गुटका एवं शेम्पू पाउच न फेंके।
- तटों और घाटों पर मल-मूत्र का त्याग न करें।

- प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी एवं जहरीले रंगों से रँगी प्रतिमाओं का विसर्जन न करें।
- तटीय खेतों में रासायनिक खाद, कीटनाशक का प्रयोग न करें।
- मल-मूत्र युक्त पानी गंगा में प्रवाहित न होने दें।
- शहर का गंदा नाला एवं उद्योगों का गंदा-जहरीला पानी प्रवाहित होने से रोकें।
- प्लास्टिक के दोनों में दीपदान न करें।
- मृत पशु, शव, अधजले शव गंगा में प्रवाहित न करें।

करने योग्य

- घर की पूजन सामग्री, बासी फूल एवं अन्य सामग्री की खाद बनाएँ।
- पॉलीथीन के स्थान पर कागज के बैग उपयोग करें।
- मल-मूत्र हेतु शौचालयों का प्रयोग करें।
- पर्यावरण अनुकूल मूर्तियों की ही स्थापना करें।
- रासायनिक खाद, कीटनाशक के स्थान पर गोबर, केंचुआ खाद एवं गौमूत्र से बने कीटनाशक का प्रयोग करें।
- गंदे पानी के सोक पिट (सोखता गड्ढा) बनाएँ।
- अच्छा हो आटे के दिये बनाकर घाट पर ही दीपदान करें, जल में न बहायें।

अगर अभी न चेते भाई - तो महँगी पड़ेगी माँ से जुदाई।

माँ तो करुणा मूर्ति है, सब सह रही है; किंतु उसके दुःख से प्रकृति नाराज हो रही है। अच्छा हो कि प्रकृति का दंड भोगने से पहले हम चेत जाएँ, सपूत बनकर माँ के प्रति अपना कर्तव्य निभाएँ। उक्त सभी प्रयासों को दस वर्ष तक श्रद्धा भरी तत्परता के साथ चालू रखना है; ताकि यह सब कार्य जन-जीवन के स्वभाव में आ जायें। गंगा ही नहीं, वरन् सभी नदियों को गंगा मानकर उन्हें स्वच्छ एवं निर्मल बनाने हेतु भारत भर में यह कार्यक्रम चलाया जाना है।

गंगा सेवा/ प्रज्ञा मण्डलों का गठन करें

गाँव-गाँव, नगर-नगर में गंगा सेवक मंडल का निर्माण कर इस कार्य की निरंतरता बनाये रखें, तो हमारा यह पवित्र उद्देश्य अवश्य ही पूर्ण होगा एवं हम हमारी आने वाली पीढ़ी को विरासत में वही पतित पावनी गंगा भेंट कर सकेंगे। जो भी परिजन अखिल विश्व गायत्री परिवार के निर्मल गंगा अभियान में आस्था, श्रद्धा, निष्ठा एवं रुचि रखते हों, वे अपने गाँव, शहर में माँ गंगा के प्रति श्रद्धा आस्था रखने वाले परिजनों के सहयोग से गंगा सेवा/प्रज्ञा मंडल का गठन करें। पाँच से पच्चीस सदस्यों तक का विस्तार करें।

उद्देश्य-

- मण्डल के नैष्ठिक सदस्यों/बहिनों द्वारा जन-सम्पर्क के माध्यम से अपने क्षेत्र के घर-घर में माँ गंगा के प्रति सच्ची श्रद्धा जाग्रत करने और उसे प्रदूषित होने से बचाने के लिए मिल-जुल कर प्रयास करना ।
- व्यक्तिगत रूप से माँ के जल की अशुद्धि का कारण न बनने का संकल्प ।
- तट/जल स्वच्छता हेतु सामूहिक श्रमदान करना ।
- ग्राम स्वच्छता के प्रति जागरूकता का क्रम बनाना ।
- गाँव में बाल संस्कार शालायें चलाना ।
- व्यसनमुक्त ग्राम हेतु नियमित प्रयास करना ।
- गौ आधारित कृषि स्वयं अपनायें और दूसरों को भी प्रेरणा दें ।
- तटों/घाटों पर वृक्षारोपण करना ।

आओ, करें संकल्प और शपथ लें माँ गंगा की कि

...हम अपने द्वार, नगर, ग्राम, संस्थान, आश्रम से गंगा को प्रदूषित नहीं करेंगे तथा दूसरों को भी ऐसा करने से रोकेंगे ।

2. जल संरक्षण हेतु अन्य कार्यक्रम

प्रदूषण की मार झेल रहे तथा विलुप्त होते जल स्रोतों (नदी-तालाबों) की शुद्धि एवं संरक्षण आज की प्रथम आवश्यकता है । इस हेतु हर युवा मण्डल एक जल स्रोत गोद ले ।

- नर्मदा, बनास, ताप्ती, शिवना, मन्दाकिनी, डोही, बागमती (नेपाल), गंगा आदि नदियों पर चलाये गये स्वच्छता अभियान की तरह देश की अन्य नदियों पर अभियान प्रारंभ करना ।
- रामेश्वर धाम स्वच्छता अभियान की तरह अन्य प्रसिद्ध तीर्थ क्षेत्रों में स्वच्छता-सेवा कार्यक्रमों का आयोजन करना ।
- मन्दिरों का पर्यावरण ठीक करने हेतु त्रिवेणी, पंचवटी, हरिशंकर रोपण एवं मन्दिरों का जीर्णोद्धार ।
- Water Harvesting जल की खेती- वर्षा जल संरक्षण के विविध प्रयोग - खेत का पानी खेत में, छत का पानी बोर में, नाले में पोखर, बंधान पोखर आदि ।
- वर्षा जल संरक्षण एवं भू-जल संवर्धन हेतु एक खेत- एक पोखर, एक किसान- एक पोखर, एक गाँव- एक तालाब की संस्कृति को पुनः प्रारंभ करना ।
- पुराने तालाबों, सरोवरों की सफाई करना, उनका गहरीकरण करना, उनका जीर्णोद्धार करना । नये तालाबों, सरोवरों के निर्माण हेतु प्रयास एवं जन-जागरण करना ।
- भू-कटाव से नदियों में मृदा जमाव (siltng) की समस्या को रोकने हेतु नदी किनारों पर हरी चूनर (सघन वृक्षारोपण) एवं Three tyre vegetation system विधियों का प्रयोग करना ।

3. श्रीराम सरोवर

सरोवर - वर्षा जल संरक्षण एवं भूजल संवर्धन का परम्परागत सर्वश्रेष्ठ उपाय

श्रीराम सरोवर के पाँच लक्षण-

1. सदानीरा सरोवर
2. निर्मल सरोवर
3. मनोहर सरोवर
4. हरित सरोवर
5. मुक्त स्वच्छ जल स्रोत युक्त सरोवर

1. गौरवशाली अतीत- आज-कल शुद्ध जल की उपलब्धता एक चुनौती बनी हुई है। सच ही कहा है, जल ही जीवन है। परन्तु प्रदूषित पर्यावरण और जल संरचनाओं के प्रति हमारी उदासीनता जल को जीवन से दूर कर रही है। बहुत पुरानी बात नहीं, वरन् अंग्रेजों के आगमन तक हमारा देश पवित्र सरोवरों का देश रहा है। तालाबों का निर्माण हमारे धार्मिक स्वभाव का महत्त्वपूर्ण घटक था। राजाओं का प्रजा हित, श्रीमन्तों का पुण्य अर्जन, धर्मशीलों का धर्म साधन, अनेक जातियों का सामाजिक कर्म तालाब बाँधना रहा है। वर्षा जल की बूँद-बूँद सहेजना और धरती का पेट भरना यह कार्य हमारे पूर्वज पूरी श्रद्धा से करते रहे। इसी कारण लाखों की संख्या में सदानीरा स्वच्छ तालाब हमारी संस्कृति की पहचान बने हैं।

2. वर्तमान संकट- नगरों का अनियंत्रित और अदूरदर्शी विकास, सर, सरोवर, पोखर, तालाबों को निगल गया। जहाँ तालाब थे, वहाँ आज गगनचुम्बी इमारतें और कॉलोनियाँ दिखाई देती हैं। मेघ बरसते हैं और जीवनदाता बूँदें बहकर समुद्र में चली जाती हैं। भूजल स्तर का निरंतर गिरना धरती का गला सूखने जैसा ही है। बूँद-बूँद के लिए तरस रहे हैं लोग। कहने को धरती नीलग्रह है तथा इसका 2/3 भाग जल है। पानी कितना मूल्यवान् है, इसी से अन्दाज-अनुमान लगाया जा सकता है कि कुल उपलब्ध जल में से 97% समुद्र में खारा पानी है। शेष 3% में से मात्र 1% पानी ही पीने योग्य है, वह भी प्रदूषण की चपेट में है। सूखती प्रदूषित नदियाँ, सड़ते और सूखते ताल, नीचे गिरता भूमिगत जलस्तर आने वाले समय में जल संकट के भयावह संकेत दे रहा है। किसी ने सच ही कहा है कि यदि तीसरा विश्वयुद्ध हुआ, तो वह जल के लिए होगा।

3. समाधान की राह- अखिल विश्व गायत्री परिवार का भागीरथी जलाभिषेक अभियान जिसके अंतर्गत देश के जल स्रोतों, जल संरचनाओं की स्वच्छता और संवर्धन के प्रयास किये जा रहे हैं। निर्मल गंगा जन अभियान, नर्मदांचल शुद्धि अभियान, बनास अंचल स्वच्छता, बागमति स्वच्छता अभियान सहित 10 नदियों पर स्वच्छता एवं संरक्षण के अभियान चलाये जा रहे हैं। अन्य जल स्रोतों को युवा

मण्डलों द्वारा गोद लेकर उनकी स्वच्छता हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। ऐसा ही एक विनम्र प्रयास है- श्रीराम सरोवर।

श्रीराम सरोवर- इस योजना के अंतर्गत 1008 सरोवरों को विकसित करने का कार्य हाथ में लिया गया है। सदानीरा, निर्मल, मनोहर, हरित एवं मुक्त जल स्रोत युक्त पंच लक्षणों वाले तालाब विकसित किये जायेंगे।

1. **सदानीरा सरोवर-** तालाब पर्याप्त गहरा हो, जिससे वर्ष भर जल की उपलब्धता बनी रहे।
2. **निर्मल सरोवर -** स्वच्छ, निर्मल जल हो एवं सरोवर क्षेत्र में खुले शौच पर प्रतिबंध रहे।
3. **मनोहर सरोवर -** सरोवर के तट पर यथा संभव पक्के घाट का निर्माण हो।
4. **हरित सरोवर -** सरोवर की पाल पर पर्यावरण, औषधि एवं धार्मिक महत्त्व के पौधों का रोपण हो। नक्षत्र, ग्रह, राशि वाटिकाओं की स्थापना, पंचवटी, त्रिवेणी, हरिशंकरी वृक्ष समूहों का रोपण हो।
5. **मुक्त एवं स्वच्छ जल स्रोत वाला सरोवर -** सरोवर में पानी भराव का अवरोध रहित क्षेत्र एवं इनलेट हो। गंदे सीवेज या प्रदूषित जल भराव का निषेध रखते हुए स्वच्छ जल के पर्याप्त जलस्रोतों का प्रबंध हो। सच पूछें तो आज भी खरे हैं तालाब। पोखरों और हमारी संस्कृति का सरस संबन्ध इन्हीं के निर्माण एवं विकास से निभेगा। रहीम जी ने कहा है-

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।

पानी गये न ऊबरे, मोती मानुष चून॥

भीषण जल-संकट के दौर में आओ सहेजें, बूँद-बूँद वर्षा जल और जीवित करें सूखती सरिताओं को; सड़ते-सिकुड़ते तालों को; ताकि हरी रहे धरती की चूनर और शेष रहे धरती पर जीवन। आवाहन है जाग्रत्-सेवाभावी एवं संवेदनशील नागरिकों का अपने-अपने क्षेत्र में श्रीराम सरोवर के निर्माण हेतु।

आत्मविश्वास का सीधा अर्थ अपने पर विश्वास करना है। दूसरे से आशा करना, दूसरे पर विश्वास करके अपने पुरुषार्थ छोड़ बैठना, आत्मशक्तियों का अनादर करना है। दूसरे मदद करते हैं तो अच्छा है, नहीं मदद करते हैं तो क्या? हमको अपनी मदद स्वयं करनी है। अपनी टाँगों से सभी चलते हैं, हमें भी अपनी टाँगों से ही यदि चलना पड़ रहा है तो इसमें क्या बुराई है? इस प्रकार का दृढ़ निश्चय, निर्धारित कार्यक्रम अथवा योजना के प्रति इस प्रकार का भाव ही आत्मविश्वास कहलाता है।

- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

व्यसन मुक्ति एवं कुरीति उन्मूलन अभियान

“व्यसन से बचाओ-सृजन में लगाओ”

व्यसन मुक्ति एवं कुरीति उन्मूलन आन्दोलन - क्यों?

- व्यसन एक धीमे जहर की तरह है, जो शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य के लिए बहुत अधिक नुकसानदायक है। इसकी गिरफ्त में फँसा मनुष्य फिर किसी विशेष कार्य के योग्य नहीं रहता। शारीरिक, मानसिक दुर्बलता एवं रुग्णता बढ़ती ही चली जाती है।
- व्यसनों से कोमल बच्चों एवं अन्य दूसरों में भी कुटेव लगती है, फिर ये अन्धानुकरण समाज को पतन की राह पर ले जाता है।
- व्यसनों से समाज में अपराध प्रवृत्तियाँ बढ़ी हैं, और अधिकतर दुर्घटनाओं का कारण भी ये नशे हैं।
- दहेज एवं खर्चीले विवाह जैसी कुरीतियों से हमारा समाज अन्दर से खोखला होता चला गया है। इसके कारण कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध हो रहे हैं, जिससे समाज में बहुत बड़ा असंतुलन पैदा हो गया है।
- समाज एवं राष्ट्र में ऊँच-नीच जैसी मान्यताएँ, गोरे- काले, धर्म, जाति के भेदों से समाज पूरी तरह बँटा हुआ है।
- भिक्षा एक व्यवसाय बन गया है, कुछ लोग गरीब अनाथ बच्चों के माध्यम से इस व्यवसाय को चला रहे हैं। मुफ्त की खाते रहने की लोगों की गलत आदत को समाज में प्रोत्साहन मिल रहा है। भिखारियों की बढ़ती जनसंख्या से भारत की गलत छवि संसार में बन रही है।
- कामचोरी एवं हरामखोरी की प्रवृत्तियाँ लोगों के मानस में गहराई से समा गयी हैं, जिससे भ्रष्टाचार हर क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है।

आत्मबोध की साधना

(Day's Planning)

प्रातः काल जागते ही (सूर्योदय से पूर्व) बिस्तर पर बैठे - बैठे आँखें बंद करें। भावना करें कि आज मेरा नया जन्म हुआ है। यह जीवन एक दिन का ही है, अतः इस दिन का मैं सदुपयोग करूँगा। अपने एक-एक दिन को और अधिक बेहतर बनाने की जागरूक साधना करें। अपने दिन भर के कार्यों का निर्धारण करें। तत्परता पूर्वक उस पर आरूढ़ रहें।

सभ्यता का कलंक- नैतिक चरित्रहीनता

व्यसन एवं कुरीतियाँ हमारे देश एवं समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला कर रहे हैं। जिसमें देश एवं व्यक्ति का बहुत सा धन व्यर्थ में व्यय हो रहा है। साथ ही स्वास्थ्य, समय, शरीर, साधन एवं प्रतिष्ठा भी खराब होती है।

वर्तमान में युवा पीढ़ी बड़ी तेजी से नशों की चपेट में आती जा रही है। उसे दुर्व्यसनो की ओर धकेलने के लिए असामाजिक तत्त्व भी योजनाबद्ध तरीके से सक्रिय हैं। ये नशे व्यक्ति को शारीरिक तौर से तो खोखला करते ही हैं, किन्तु उससे भी महा भयंकर समस्या मानसिक और नैतिक चरित्रहीनता की है। नशा पीकर बुद्धि विकारग्रस्त होती है तथा मनुष्य मानसिक व्यभिचार में प्रवृत्त होता है। वासनामूलक कल्पनाओं में फँसा रहने से प्रत्यक्ष व्यभिचार की ओर दुष्प्रवृत्ति होती है। व्यभिचार हमारी सभ्यता का कलंक है, जिस पर जितना लिखा जाये उतना ही कम है। व्यभिचार एक ऐसी सामाजिक बुराई है, जिससे मनुष्य का शारीरिक, सामाजिक और नैतिक पतन होता है। परिवारों का धन, सम्पदा, स्वास्थ्य सब नष्ट हो जाते हैं। व्यक्ति एवं समाज धीरे-धीरे खोखला और जर्जर होता जाता है। बड़े-बड़े राष्ट्र विस्मृति के गर्त में डूब जाते हैं। परिताप का विषय है, नाना रूपों में फैलकर व्यभिचार की महाव्याधि, हमारे नागरिकों, समाज, गृहस्थ एवं राष्ट्रीय जीवन का अधःपतन कर रही है। इसके परिणामों का उल्लेख करते हुए भी हृदय काँप जाता है।

आज के पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में छपने वाले विज्ञापनों को देखिये, आज के समाज का आइना आपके समक्ष आ जायेगा। नामर्दी, नपुंसकता, वीर्यपात, स्वप्नदोष, गर्भपात करने, बर्थ कण्ट्रोल के साधन, नग्न तस्वीरें, सौन्दर्य वृद्धि, सिनेमा सम्बन्धी अनेक प्रकार के दूषित विज्ञापन पतनोन्मुख समाज का खाका हमारे सामने प्रस्तुत कर देते हैं।

सभ्यता के आवरण में जिस मनोरंजन ने सबसे अधिक कामुकता, अनैतिकता, व्यभिचार की अभिवृद्धि की है। वह है सिनेमा द्वारा हमारे गंदे विचारों को उत्तेजित करने वाली फिल्में, उनकी अर्धनग्न तस्वीरें और गन्दे फूहड़ गानों का प्रदर्शन। घर-घर में बच्चे-बूढ़े, युवक-युवतियाँ गन्दे गीत माता-पिता के सामने गाते-सुनते रहते हैं। यह संगीत इतने निम्न स्तर का होता है, कि उसका उद्धरण देना भी महापाप है। जहाँ बालकों को रामायण, गीता, तुलसी, सूर, कबीर, नानक के सुरुचिपूर्ण भजन याद होने चाहिए, वहाँ यह देखकर सिर झुकाना पड़ता है कि अबोध बालक ये अश्लील गाने स्वच्छंदता पूर्वक गाते फिरते हैं। न कोई उन्हें रोकता है, न मना करता है। न किसी का इनके दूरगामी दुष्प्रभाव की ओर ध्यान ही जाता है। ज्यों-ज्यों यौवन की उत्ताल तरंगें उनके हृदय में उठती हैं, इन गीतों तथा फिल्मों के गंदे स्थलों की कुत्सित कल्पनाएँ उन्हें अनावश्यक रूप से उत्तेजित कर देती हैं। वे व्यभिचार की

ओर प्रवृत्त होते हैं। समाज में व्यभिचार फैलाते हैं। गन्दे अनैतिक प्रेम सम्बन्ध स्थापित करते हैं। गलियों में लगे हुए चित्र, सार्वजनिक स्थानों, ट्रेनों आदि में लिखी हुई अश्लील गालियाँ, कुत्सित प्रदर्शन समाज में बढ़ रही इस विकृति का हाल बयान कर रहे हैं।

इस अनैतिक सिनेमा से लोगों ने चोरी की नयी-नयी कलायें सीखीं, डाके डालने सीखे, शराब पीना सीखा, निर्लज्जता सीखी, और भीषण व्यभिचार सीखा। सिनेमा के कारण हमारे युवक-युवतियों में किस प्रकार स्वेच्छाचार बढ़ रहा है, इसके कई सच्चे उदाहरण हमारे सामने हैं। पता नहीं लाखों-करोड़ों कितने तरुण-तरुणियों पर इसका जहरीला असर हुआ है। फिर भी हम इसे मनोरंजन मानते हैं। समाज के इस पाप को दूर करना चाहिए, अन्यथा अनैतिकता, व्यभिचार, स्वच्छंदता तमाम सामाजिक मर्यादाओं का अतिक्रमण कर देंगी। सिनेमा ने समाज में खुलेआम अश्लीलता, गंदगी, कुचेष्टाओं, व्यभिचार, घृणित यौन सम्बन्ध, शराबखोरी, फैशनपरस्ती एवं कुविचारों की वृद्धि की है। यदि गन्दे फिल्म ऐसे ही चलते रहे तो राष्ट्रीय चरित्र का और भी खोखलापन, कमजोरी और ढीलापन अवश्यम्भावी है। यदि हमारे युवक-युवतियाँ अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों के पहनावे, शृंगार, मेकअप, फैशन का अन्धानुकरण करते रहे, तो असंयमित वासना के द्वार खुले रहेंगे। उगती पीढ़ी के लिए यह कामान्धता खतरनाक है। बचपन के गन्दे दूषित संस्कार हमारे राष्ट्र को कामुक और चरित्रहीन बना देंगे। अश्लीलता के इस प्रचार पर कड़ा नियंत्रण लगाना ही चाहिए।

- पुस्तक 'प्राणघातक व्यसन' से

युवा पीढ़ी जागरूक बने

युवा पीढ़ी को दिग्भ्रमित होने से, भटकने से बचाने के लिए एवं जागरूक करने के लिए युवक-युवतियों के संगठन बनायें, उन्हें रचनात्मक कार्यों हेतु प्रेरित करें। युवाओं की समस्याओं, दुविधाओं का प्रेम, प्रेरणा, प्रशंसा एवं प्रोत्साहन देकर समाधान करें। उन्हें छोटे-छोटे रचनात्मक कार्यों में लगायें। छोटी-छोटी जिम्मेदारियाँ सौंपकर सृजनात्मकता, सकारात्मकता बढ़ायें, जैसे-

- विभिन्न विषयों पर जन-जागरूकता रैली निकालना। उसके लिए सामग्री (बैनर, पोस्टर, सद्वाक्य, सुविचार आदि) तैयार करना।
- युवाओं द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों में भागीदारी करना (देखें प्रवासी युवा पृष्ठ-20)
- नशे से होने वाली हानियों व बीमारियों के दुष्परिणाम प्रदर्शनी व फिल्म के माध्यम से बताना व नशा न करने के लिये प्रेरित करना।
- युवाओं में आत्मबल जाग्रत् कर नशा न करने का संकल्प कराना।

- नशा मुक्ति शिविरों में आवश्यक मार्गदर्शन एवं संकल्प द्वारा नशे से मुक्ति दिलाना ।
- युवाओं में ध्यान, योग, प्राणायाम के माध्यम से आत्मबल विकसित कर नशे से बचाने हेतु प्रयास करना ।
- युवाओं की शक्ति और सामर्थ्य को नशे से बचाकर राष्ट्र के नव निर्माण में नियोजित करना ।
- घर-घर सम्पर्क कर लोगों को व्यसन मुक्ति के लिए सहमत करना । व्यक्ति के जन्म-दिन, विवाह-दिन पर व्यसन छोड़ने के लिए प्रेरित एवं संकल्पित करना ।
- बहिनें रक्षा बन्धन पर भाइयों से अपना व्यसन छोड़ने का संकल्प लिवायें ।
- व्यसनों के दुष्परिणामों एवं कुरीतियों के पतनकारी परिणामों के बारे में जनता में, स्कूल/कॉलेज के बच्चों में जागरूकता लाना । इसके लिए जनता में से नेतृत्वकर्ता स्तर की प्रतिभाओं को नेतृत्व के लिए सहमत एवं संकल्पित किया जाये ।
- दहेज विरोधी अभियान, अश्लीलता विरोधी अभियान आदि अभियानों के लिए नेतृत्व करना या किसी न किसी समूह में जुड़कर अपना योगदान देना ।
- हर एक आन्दोलन से सम्बन्धित फोटो एलबम, ऑडियो-वीडियो क्लिप, वेबसाइट्स, लेख, नारे, ब्रोशर, पुस्तिकाएँ एवं मण्डल, संगठन तैयार किये जायें । एक संस्था के कीमती अनुभव अन्य अनेक संस्थाओं में वितरण के लिए उदार हृदयों से वातावरण बनायें ।
- पूरे समाज में एकता, समता, ममता एवं शुचिता की स्थापनाएँ की जानी चाहिए ।

रैली हेतु विषय: दुष्प्रवृत्ति-कुरीति उन्मूलन अभियान

1. नशा नाश की जड़ है, (व्यसन मुक्ति रैली)
2. सिनेमा जागे - समाज को उन्नत बनाये ।
3. अश्लील प्रदर्शनों पर रोक लगायें - सभ्य समाज बनायें ।
4. कन्या भ्रूण हत्या - नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक अपराध ।
5. लड़के-लड़की का भेद मिटायें - सभ्य, सुसंस्कृत समाज बनायें ।
6. धन- साधन, सुख की बरबादी - फैशन और दिखावेबाजी ।
7. दहेज दैत्य को दूर भगायें - घर-परिवार को स्वर्ग बनायें ।
8. मृतक भोज एक कुप्रथा ।
9. बलि प्रथा - निरीह प्राणियों के प्रति मनुष्य का अत्याचार ।
10. मांसाहार- मनुष्यता त्यागकर ही किया जा सकता है ।
11. दुष्प्रवृत्तियाँ विपत्तियों की सहेलियाँ आदि ।

सत्प्रवृत्ति- संवर्धन हेतु रैली के विषय

1. वृक्ष लगायें - जल, जंगल, जमीन बचायें।
2. पर्यावरण बचायें।
3. प्रदूषण मुक्त समाज बनायें। (भूमि, जल, वायु, ध्वनि, विचार प्रदूषण)
4. बाल संस्कार शाला चलायें - भावी पीढ़ी को सृजनशील बनायें।
5. अपना-अपना करो सुधार, तभी मिटेगा भ्रष्टाचार।
6. सशक्त नारी - सशक्त समाज।
7. वैकल्पिक ऊर्जा को बढ़ावा दें- पर्यावरण को शुद्ध बनायें।
8. सादा जीवन- उच्च विचार।
9. स्वाध्यायशील बनें- अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करें।
10. अपना ग्राम आदर्श बनायें - शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन अपनायें।
11. स्वस्थ जीवन का आधार- संयमित आहार, विहार और विचार।
12. साक्षरता अभियान चलायें - जन-जन को साक्षर बनायें।
13. कुटीर उद्योग चलायें- स्वावलंबी राष्ट्र बनायें।
14. गौ संवर्धन- पशुधन संवर्धन।
15. युवक- युवतियाँ शालीन बनें- स्वस्थ समाज की रचना करें, आदि।

वाङ्मय - 'नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक क्रांति' से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

शुभ संकल्प

संकल्प लें कि जीवन में किसी भी प्रकार के हानिकारक नशों से बचेंगे। अपने मित्रों, भाई-बहिनों एवं संतान की रक्षा के लिए उन्हें व्यसनों से मुक्त रखने का भरसक प्रयास करेंगे। हानिकारक व्यसनों से मुक्त विश्व की रचना के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश लगाते रहेंगे।

तत्त्वबोध की साधना (Day's Analysis)

शयन से पूर्व बिस्तर पर लेटे-लेटे भाव करें कि आज का जीवन समाप्त हुआ। दिन भर के अच्छे-बुरे, सही-गलत कार्यों का लेखा-जोखा करें। गलतियों के लिए ईश्वर से व्याकुल हृदय से क्षमा प्रार्थना करें। संकल्प करें कि यदि पुनः जीवन मिला, तो उन भूलों को नहीं दोहरायेंगे और जीवन सुधार के लिये निष्ठापूर्वक प्रयास करेंगे। फिर शिशु के समान निद्रा माँ की गोद में विश्राम करें। चिन्ता व तनाव को प्रभु चरणों में भाव से अर्पण कर निश्चिन्त एवं प्रगाढ़ निद्रा का अभ्यास बढ़ाते जायें।

साधना आन्दोलन

हे परमात्मन् ! आप हम सबको सद्बुद्धि दें,
उज्ज्वल भविष्य के मार्ग पर आगे बढ़ाएँ।

सामूहिक साधना पुरुषार्थ हमारी संस्कृति

हमारी संस्कृति सदैव सामूहिक प्रयासों को प्रोत्साहित करती रही है। असुरता के निवारण के लिए दुर्गा का अवतरण देवताओं के सामूहिक योगदान से हुआ था। भगवान् राम और कृष्ण का अवतरण भी सामूहिक साधना के प्रभावों से हुआ था। भगवान् राम के वनवास के समय सारे अयोध्या वासियों ने भरत के साथ मिलकर अपने सुख, भोग, आभूषण आदि त्यागकर असुरता के निवारण और रामराज्य की स्थापना के लिए सामूहिक तप किया था।

पूज्य गुरुदेव की सामूहिक साधना और उसका प्रभाव

परम पूज्य गुरुदेव ने अपने 24 अनुष्ठानों को पूरा करने के बाद सन् 1953 से 1956 तक लाखों साधकों से सामूहिक साधना अनुष्ठान कराये, जिनकी पूर्णाहुति सन् 1958 के ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान से हुई थी। सन् 1962 में बने अष्टग्रही योग से खण्ड प्रलय जैसे महाविनाश की संभावनाएँ व्यक्त की जा रही थीं। तब परम पूज्य गुरुदेव ने समूह साधना का आह्वान किया और सभी को यह विश्वास दिलाया था कि समूह साधना के प्रभाव से अष्टग्रही योग का प्रभाव नष्ट हो जायेगा। जो परिवर्तन होंगे, वह सूक्ष्म जगत् में ही घटित हो जायेंगे। हुआ भी ऐसा ही।

सन् 1962 के चीन के साथ हुए युद्ध के साथ परम पूज्य गुरुदेव ने 'क्लीं' बीजमंत्र के साथ सामूहिक साधना प्रयोग कराया था। बंगला देश के युद्ध के समय भी सामूहिक साधना का आह्वान उनके द्वारा किया गया। दोनों ही युद्धों में अनेक आश्चर्यजनक घटनाएँ घटीं, सफलता भारत को ही मिली।

सन् 1979 में अंतरिक्ष यान (SkyLab) के अनियंत्रित होकर धरती पर गिरने से महाविनाश की संभावनाएँ थीं। अंतरिक्ष यान से सुरक्षा के लिए की गयी साधना का समय परम पूज्य गुरुदेव ने रात 9 से 9.30 बजे निर्धारित किया था। लाखों लोग समूह साधना में शामिल हुए। अंततः यान बिना कोई क्षति पहुँचाये समुद्र में गिरा। उसके गिरने का समय ठीक वही था, जो पूज्य गुरुदेव ने सामूहिक साधना के लिए निर्धारित किया था।

पूज्य गुरुदेव ने विशेष प्रयोजनों के लिए समूह साधना के प्रयोग बार-बार किये हैं। इस सामूहिक साधना के परिणाम से मिशन का आधार तैयार हुआ। सन् 1989 से 2000 तक चलने वाला युगसंधि महापुरश्चरण भी समूह साधना का एक विराट् प्रयोग था। अपने अभियान के अन्तर्गत छोटे-छोटे यज्ञों से लेकर विराट् अश्वमेध

यज्ञों तक सभी में समूह साधनाओं पर विशेष बल दिया जाता रहा है। उनकी सफलता में समूह साधना से उभरी दिव्य ऊर्जा का विशेष योगदान होता रहा है।

समूह साधना वर्ष 2014

अखिल विश्व गायत्री परिवार वर्ष 2014 को समूह साधना वर्ष के रूप में मना रहा है। भारतीय पंचांग के अनुसार सन् 2014, विक्रम संवत् 2071 का अंग है। इस संवत्सर का नाम 'प्लवंग' जिसका अर्थ होता है पार होना या पार उतरना। इसका भाव यह उभरता है कि यह संवत् देश एवं विश्व के वासियों को दुःख, पीड़ा, परेशानियों से पार करके श्रेष्ठ, स्नेह-सहयोग भरे जीवन की ओर ले जाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

समाज को आदर्शों की राह पर चलने वाले साहसी युग सृजेताओं की आवश्यकता है। लोगों में उत्साह है, योजनाएँ भी बनती हैं; लेकिन ये तब तक सफल नहीं हो सकतीं जब तक कि व्यक्ति में आदर्शों के अवलम्बन का साहस न जागे। इन दिनों दिव्य चेतना जन-जन को झकझोर रही है। वह लोगों के मन में उतरने को आतुर है, लेकिन उसके लिए जिस वातावरण की आवश्यकता है, उसका निर्माण करने के लिए समूह साधना का यह विशिष्ट प्रयोग किया जा रहा है।

समूह साधना से परस्पर मन मिलेंगे, आत्मीयता बढ़ेगी, तो उस भाव संवेदना का भी विकास होगा, जिससे तमाम समस्याओं की जल 'संकीर्ण स्वार्थपरता' दूर होगी और प्यार-सहकार भरा उज्वल भविष्य आयेगा। साधना की दिव्य ऊर्जा से श्रेष्ठ व्यक्तित्व उभरेंगे, जिनके समन्वय से श्रेष्ठ परिवार और समाज का विकास होगा। जो भी संगठन समूह साधना का नियमित क्रम अपनायेंगे, वे ईश्वरीय योजना के भागीदार बनकर असाधारण श्रेय-सौभाग्य कमा सकेंगे।

सन् 2026 तक चलने वाले साधना अनुष्ठान का शुभारम्भ

असुरता के निवारण के लिए अवतारों को भी तपस्वियों की आवश्यकता पड़ती है। आज समाज में उपस्थित हजारों रावणों के विध्वंस के लिए जिस वातावरण और ऊर्जा की आवश्यकता है, समूह साधना से उसका निर्माण होगा। समूह साधना वर्ष 2014 बारह वर्षों तक चलने वाले महानुष्ठान का आरंभ है, जो अखण्ड ज्योति के शताब्दी वर्ष, परम वंदनीया माताजी के जन्म शताब्दी वर्ष, महर्षि अरविंद के अतिमानस के अवतरण की शताब्दी के वर्ष-2026 तक चलता रहेगा।

समूह साधना वर्ष के निर्धारण

- सामूहिक साधना वर्ष अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत गायत्री परिवार के लोग समाज के सभी वर्गों के लोगों से मानवमात्र के कल्याण के लिए ऐसे आध्यात्मिक प्रयोग करने का अनुरोध करें।

- गायत्री शक्तिपीठों, शाखाओं द्वारा विशेष साधना शिविरों, साधना अनुष्ठानों का आयोजन हो। दैनिक या साप्ताहिक विशेष साधना प्रयोग किये जायें।
- घर, दुकान, कार्यालय, सार्वजनिक स्थान, शैक्षिक संस्थान, सभा-संगोष्ठियों में भी लोग अपनी आस्था के अनुरूप अपने इष्टमंत्र, नाम का जप करते हुए मानव मात्र के उज्वल भविष्य की प्रार्थना का क्रम आरंभ करें, इसके लिए व्यापक आन्दोलन चलाया जाये।
- देवालय, सार्वजनिक स्थान, दुकान, कार्यालय, घर, शैक्षिक संस्थान आदि में समूह साधना वर्ष का लोगो (logo) और समय के साथ छोटी तख्तियाँ, स्टीकर (साधना के लिए निर्धारित समय के साथ) लगाये जाने चाहिए। (इन्हें पाने के लिए ppd@awgp.in पर ई-मेल करें।)

सफल दिनचर्या के सूत्र

(अपनों के बीच आदर्श उपस्थित करने का राजमार्ग)

प्रातः काल :-

1. प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व उठें।
2. बिस्तर पर बैठे-बैठे ही आत्म-बोध की साधना करें।
3. धरती माता एवं माता-पिता को चरण स्पर्श करें/प्रणाम करें।
4. एक से चार गिलास पानी बासी मुँह (उष्णपान) पिँएँ।
5. कम से कम 30 मिनट ध्यान, प्राणायाम व योगाभ्यास करें।
6. दिनभर के कार्यों का निर्धारण करें।
7. नियमित गायत्री उपासना का क्रम बनाएँ/ सत्संकल्प का पाठ करें।

दिनभर :-

8. श्रेष्ठ एवं सफल मित्रों के साथ रहें।
9. उमंग, उत्साह, स्फूर्ति व आत्मबल से भरा अनुभव करें।
10. चिंतन विधेयात्मक बनाएँ, नकारात्मक चिंतन से बचें।
11. माता-पिता, मित्रों आदि की सेवा-सहायता करें, सलाह लें-सम्मान दें।
12. आलस्य, प्रमाद, T.V. देखने, आलोचना करने आदि में समय व्यर्थ न गवाएँ।
13. दिन में कम से कम एक सेवा का कार्य कर गौरवान्वित हो।
14. अपना कार्य स्वयं कर आत्मनिर्भर व स्वावलंबी बनें।

सायंकाल :-

15. पाठ्यक्रम के साथ सत्साहित्य का स्वाध्याय, चिंतन और मनन करें।
16. भोजन, सोने से दो-तीन घण्टे पूर्व कर लें/ देर रात तक जागरण से बचें।
17. रात्रि विश्राम के समय तत्त्व-बोध साधना करें।

युवा आवाहन गीत

आज युग पुकारता

आज युग पुकारता, जाग नौजवान रे ।

मोर्चे सम्भाल रे, सम्भाल तू कमान रे ॥

दुर्दशा ग्रसित समाज, हाथ छटपटा रहा ।

भ्रष्ट हुआ तंत्र राष्ट्र, सम्पदा मिटा रहा ।

मुँह सिला है न्याय का, मौन है विधान रे ॥ आज युग..

खोखला समाज को, बना रही कुरीतियाँ ।

मृत्यु भोज हो रहे, झुलस रही हैं बेटियाँ ।

क्या नहीं रहा जवान, खून में उफान रे ॥ आज युग..

राष्ट्र और संस्कृति, पर प्रहार हो रहा ।

बढ़ रही अनीतियाँ, अंधकार हो रहा ।

दे चुनौतियाँ उन्हें, वीर वक्ष तान रे ॥ आज युग..

हाथ ले मशाल ज्वाल, चीर अंधकार तू ।

पैने कर संस्कार, काट दे विकार तू ।

कर विजय प्रयाण आज, लक्ष्य है महान् रे ॥ आज युग..

नौजवानों उठो!

नौजवानों उठो, वक्त यह कह रहा, खुद को बदलो, जमाना बदल जायेगा ।

शक्तियों को लगाओ, सही कार्य में, देश का, विश्व का, भाग्य खुल जायेगा ।

देश अपना वही है, जगत् का गुरु,

आज अज्ञान में यह, भटक क्यों रहा?

पार जिसने करोड़ों, अरे कर दिये,

रास्ते में अरे, फिर अटक क्यों रहा?

भाव दैवीय जगा लो, हृदय में अगर,

स्वर्ग भू पर, उतरता चला जायेगा ।

अपना प्यारा वतन, देश ऋषियों का था,

शान इसकी नहीं, घटने देना कभी ।

इस चमन को, सजाया शहीदों ने था,

इसको बरबाद होने, न देना कभी ।

देवसंस्कृति को अपनाओ, वीरों पुनः,

देश फिर से जगत् गुरु, कहा जायेगा ।

भावना से मलिन, आचरण से कुटिल,
 उनसे कह दो, कि खुद को बदल लें अभी ।
 चल पड़ा चक्र है, अब महाकाल का,
 रोकने से रुकेगा, नहीं यह कभी ।
 जो न बदलेगा खुद को, समय पर अरे,
 वक्त उसको उलटता चला जायेगा ।
 ले चला सन्त बन, जानकी को असुर,
 तो जटायु ने रोका, अमर हो गया ।
 वह तो था मात्र पक्षी ही, इस देश का,
 जानकी के लिए, देखो खुद मिट गया ।
 यदि महाकाल की, शक्ति ले चल पड़े,
 राक्षसी सृष्टि का, दुर्ग जल जायेगा ।

नया युग क्यों न आयेगा ?

नया युग क्यों न आयेगा? जगतहित में मरेंगे हम ।
 न कैसे आयेगी गंगा? भगीरथ श्रम करेंगे हम ॥

बहुत प्यासी हुई धरती, चुका है प्यार का पानी ।
 न दिखते अब कहीं गौतम, विचरते कंस अभिमानी ॥
 बढ़ा है ताप छल का द्वेष का, कटुता विषमता का ।
 उड़ा मानव हृदय से नाम भी, करुणा व ममता का ॥
 मगर घन क्यों न छायेंगे? सजल ऊष्मा भरेंगे हम ॥

बहुत फैला हुआ है भूमि पर, अज्ञान निशि का तम ।
 बढ़ी हैं रुढ़ियाँ और अन्धतायें, ज्ञान दिखता कम ॥
 मनुष्यों को लिया है बाँध इनने, बन कठिन बेड़ी ।
 बदलनी है समाजों की, निरकुंश नीतियाँ टेढ़ीं ॥
 क्यों न तम मिटेगा रवि बन, किरण निशि को हरेंगे हम ॥
 अशिव को मेटकर शिव, नीतिमय दुनियाँ बसाना है ।
 मनुज की सो गयी है जो, वही आस्था जगाना है ॥
 चले विज्ञान अब अध्यात्म का, कर थामकर जग में ।
 चलेंगे रौंदते कण्टक चुभेंगे, जो सुदृढ़ पग में ॥
 विजय श्री क्यों न पायेंगे, कर्म पथ को वरेंगे हम ।
 जलाकर धर्म दीप को, मनुज मन में धरेंगे हम ॥

सावधान होशियार

सावधान होशियार नौजवान ।

हाथ में उठा मशाल युग रहा तुम्हें पुकार ॥ सावधान ॥

एक युद्ध जीतकर हम स्वतन्त्र हो गये ।

किन्तु हाय! स्वप्न लोक में तुरन्त खो गये ॥

भूल गये प्रीति-रीति-नीति भरा रास्ता ।

द्वेष-भेद, द्रोह आदि-में प्रवीण हो गये ॥

पकड़ लिया है कौन मार्ग-कौन मार्ग है सही ।

छोड़कर प्रमाद आज-क्रान्ति युक्त कर विचार ॥ सावधान ॥

आँख खोल देख चोर घुस पड़े हैं गेह में ।

हीन भाव मानस में-आलस बन देह में ॥

मानव के गौरव को-चाट गई क्षुद्रता ।

वृद्धि हुई कटुता में-कमी हुई नेह में ॥

पहुँचा दे संस्कार जन-जन में घर-घर में ।

एक सबल ठोकर से-दूर कर सभी विकार ॥ सावधान ॥

आज इस समाज को-खा रही कुरीतियाँ ।

नीति पक्ष दुर्बल है-बढ़ रही अनीतियाँ ॥

जाति-पाँति ऊँच-नीच-भेदभाव बढ़ रहे ।

जाने क्यों रूठ गई-प्यार भरी रीतियाँ ॥

वक्त आ गया निकट-हम सभी सचेत हों ।

दानवता मानव की आबरु न ले उतार ॥ सावधान ॥

प्रज्ञा आह्वान करो-छूट जाये मूढ़ता ।

उमड़े यज्ञीय भाव-भाग जाये क्षुद्रता ॥

ऋषियों की थाती फिर पहुँचा दे जन-जन तक ।

आदर्शों से हो फिर-मानव की मित्रता ॥

समयदान-अंशदान-की बना परम्परा ॥

नवयुग का सूत्रधार-बन सपूत होनहार ॥ सावधान ॥

जागरण गान

भारती पुकारती, संस्कृति गुहारती ।

जाग ! नौजवान जाग! राह पथ निहारती ।

जाग और जग जगा, जागरण के गीत गा ।

देख तो सही उधर, सूर्य सुबह का उगा ।

किल-किला उठी किरण, तिमिर को बुहारती । जाग ! नौजवान...

आज भारती उदास, क्योंकि सामने विनाश ।

और देश का तरुण, कर नहीं रहा प्रयास ।

संस्कृति की व्यथा, तरुण को पुकारती । जाग ! नौजवान...

देश के जवान जाग, शौर्य स्वाभिमान जाग ।

राष्ट्र, संस्कृति, समाज, भाग्य के विधान जाग ।

जागी तरुणाई ही, राष्ट्र को सँवारती । जाग ! नौजवान...

परिवर्तन काल है, हवा में उछाल है ।

जो चला प्रवाह संग, हो गया निहाल है ।

महाकाल की तरंग, प्रखरता निखारती । जाग ! नौजवान...

अन्य गीत-

ओ सपूतो! भारत की तकदीर बना दो ।

नौजवान देश के, शक्तिमान देश के ।

राष्ट्र के युवा तुम्हें बुला रही है भारती ।

समय रहते जगो साथी न किंचित देर हो जाये ।

हम बदलेंगे, युग बदलेगा, यह सन्देश सुनाता चल ।

नया युग आ रहा है रुढ़ियाँ प्राचीन तोड़ो तुम ।

अगर हम नहीं देश के काम आये ।

आज दौंव पर लगा देश का स्वाभिमान सेनानी ।

भ्रम के भटकावे छोड़ो ।

संस्कृति रही कराह ।

सावधान होशियार ।

उठो जवान देश के, माँ भारती पुकारती ।

- संदर्भ पुस्तक 'गीत संजीवनी'

वार्षिक कार्ययोजना

माह - जनवरी

01 जनवरी - नव वर्ष संकल्प दिवस (संदर्भ-अंतर्राष्ट्रीय नववर्ष)

* “नव वर्ष की कार्ययोजना” संगोष्ठी

* नववर्ष संकल्प दीपयज्ञ

12 जनवरी -युवा चेतना दिवस

(संदर्भ-राष्ट्रीय युवा दिवस -युवा प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानन्द की जयंती)

* जिला स्तर पर एक दिवसीय युवा चेतना शिविर आयोजन

* महाविद्यालयीन स्तर पर युवा चेतना संगोष्ठी आयोजन

* युवा मंडलों / DIYA Group का गठन

13 जनवरी लोहड़ी एवं 14 जनवरी - मकर संक्रांति/ पोंगल/ बिहु/ विशु

* नदी तट पर एक दिवसीय जनजागरण शिविर- “नदियाँ- हमारी जीवन धारायें”

* स्थानीय नदियों पर जल शुद्धि संरक्षण संबंधी पत्रक का वितरण

* सायंकाल-नदी तट पर दीपयज्ञ

23 जनवरी -युवा गौरव दिवस (संदर्भ-सुभाषचंद्र बोस जयंती)

* रक्त परीक्षण शिविर का आयोजन/ पंजीयन

* नेत्रदान / रक्तदान हेतु प्रेरणा/ मार्गदर्शन/ पंजीयन

26 जनवरी -गणतंत्र दिवस

* प्रभात फेरी (राष्ट्रप्रेम/ प्रेरणाप्रद गीतों का गायन)

* आदर्श ग्राम-स्वच्छता, श्रमदान आयोजन/ परिचर्चा

* सायंकाल राष्ट्रनिष्ठा बढ़ाने हेतु दीपयज्ञ

30 जनवरी -पीड़ा निवारण दिवस (संदर्भ- महात्मा गांधी बलिदान दिवस)

* कुष्ठाश्रम/ वृद्धाश्रम/ अनाथाश्रम में एक दिवसीय कार्यक्रम

* सेवा/ स्वच्छता का क्रम/ फल एवं दवाएँ वितरण

* सत्यनिष्ठा बढ़ाने हेतु दीपयज्ञ

माह - फरवरी

वसन्त पर्व -“देव संस्कृति पुनरुत्थान दिवस”

(संदर्भ-वसंत पर्व-प.पू. गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का आध्यात्मिक जन्म दिवस)

* प्रातः विद्यारंभ संस्कार /ज्ञान दीक्षा समारोह शक्तिपीठों पर यज्ञीय अनुष्ठान

* सायंकाल-विचार क्रान्ति का दीपयज्ञ

28 फरवरी - (राष्ट्रीय विज्ञान दिवस)

* वैज्ञानिक अध्यात्मवाद कार्यशाला/प्रबुद्ध वर्ग गोष्ठी

* बाल संस्कारशाला के विद्यार्थियों हेतु विज्ञान केन्द्र भ्रमण

माह-मार्च

08 मार्च -नारी सशक्तिकरण दिवस (संदर्भ-अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस)

* दहेज/ भ्रूण हत्या/ कुरीति उन्मूलन रैली

* संगोष्ठी/ परिचर्चा आयोजन- “परिवार एवं समाज का मेरुदण्ड-नारी”

महाशिवरात्रि-दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन दिवस

* राष्ट्र शान्ति हेतु शिवालयों में महामृत्युंजय मंत्र का जाप।

* नशा विरोधी पत्रक/ साहित्य वितरण * नशा मुक्ति संकल्प के साथ दीपयज्ञ

22 मार्च -विश्व जल संरक्षण दिवस

* जल संरक्षण पर परिचर्चा/ कार्यशाला- “जल है तो कल है”

* ऐसे बचायें जल-जल संरक्षण पत्रक का वितरण- वर्षा जल का संरक्षण कैसे करें ?

* स्थानीय जल स्रोतों की स्वच्छता हेतु श्रमदान

होलिका दहन पर्व-अश्लीलता दहन दिवस

* आदर्श होली आयोजन- ब्लॉक/ तहसील/ नगर स्तर पर क्षेत्रवार अधिकतम स्थानों पर

* नशीली वस्तुएँ/ अश्लील साहित्य का दहन

माह-अप्रैल

01 से 07 अप्रैल -स्वास्थ्य संवर्धन सप्ताह (संदर्भ-विश्व स्वास्थ्य दिवस)

* स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन (ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में)

* स्वस्थ रहने के सरल उपाय/ आदर्श दिनचर्या पत्रकों का वितरण

* विद्यालयों/ महाविद्यालयों में स्वस्थ रहने की कला का प्रशिक्षण

चैत्र नवरात्र/ हिन्दू नव वर्ष/ गुडी पाडवा / चेद्री चंड/ उगादी(आ. प्र. कर्नाटक)

* युवा मण्डलों/ प्रज्ञा मण्डलों/ महिला मण्डलों में सामूहिक साधना

* नव-वर्ष स्वागत-पुष्प/ सत्साहित्य भेंट/ ईमेल, SMS द्वारा बधाई संदेश

* गायत्री महामंत्र लेखन अभियान

13 अप्रैल - वैसाखी (पंजाब)/ विशु(केरल)/ पुत्ताण्डु (तमिलनाडु)

* संकल्प दीपयज्ञ/ कार्ययोजना पर विचार विमर्श

22 से 30 अप्रैल -वसुधा रक्षण सप्ताह (संदर्भ-पृथ्वी दिवस)

* समस्त युवा मंडलों द्वारा महाविद्यालयों/ विद्यालयों/ संस्थाओं में भूमण्डलीय तापमान

वृद्धि पर चर्चा * युवा वर्ग के इस विषय के दायित्व पर परिचर्चा/ जन जागरण

* पेपर रहित कार्य/कम्प्यूटर के अधिक उपयोग पर जनजागरण/गोष्ठियाँ/ शिविर आदि

माह-मई

10 से 12 मई-त्रिदिवसीय विद्यार्थी संस्कार शिविर (माध्यमिक स्तर)

* आवासीय शिविर के माध्यम से विद्यार्थियों में संस्कारों का बीजारोपण

* जीवन जीने की कला, दिनचर्या, स्वास्थ्य आदि पर समुचित मार्गदर्शन

परशुराम जयंती-कुरीति उन्मूलन दिवस

- * विचार क्रान्ति रैली/ सद्वाक्य रैली * वनौषधि रोपण/ नर्सरी स्थापना
 - * वाद-विवाद/ निबंध प्रतियोगिता * संकल्प दीपयज्ञ (कुरीति उन्मूलन के)
- 24 से 26 मई-त्रिदिवसीय विद्यार्थी संस्कार (हा. सेकेण्डी बालक वर्ग)
- * पावर प्वाइण्ट प्रेजेंटेशन के माध्यम से जीवन जीने की कला, दिनचर्या, स्वास्थ्य आदि पर समुचित मार्गदर्शन

31 मई -अंतर्राष्ट्रीय तम्बाखू निषेध दिवस

- * नशा विरोधी रैली का आयोजन/ पत्रक का वितरण
- * नुक्कड़ नाटक/ फिल्म/ दीपयज्ञ-अधिकाधिक स्थानों पर

माह-जून

05 जून -विश्व पर्यावरण दिवस

- * वृक्ष गंगा रैली का आयोजन एवं तरुपुत्र/ तरुमित्र रोपण संकल्प, पौधशाला (नर्सरी) तैयार करना
 - * पॉलिथिन पर प्रतिबंध हेतु ज्ञापन अथवा उसके उचित निपटान हेतु जन-जागरण
 - * पर्यावरण संरक्षण/ पॉलीथिन मुक्त राष्ट्र पर परिचर्चा
 - * जल/ वायु/ ध्वनि प्रदूषण पर चेतावनी पत्रक का प्रकाशन-वितरण
- 14 से 16 जून-त्रिदिवसीय विद्यार्थी संस्कार शिविर (हा. से. बालिका वर्ग)
- * पावर प्वाइण्ट प्रेजेंटेशन के माध्यम से जीवन जीने की कला, दिनचर्या, स्वास्थ्य आदि पर समुचित मार्गदर्शन

गायत्री जयंती-गंगा दशहरा पर्व-सद्ज्ञान अवतरण दिवस में

- * प्रातः विद्यारंभ संस्कार/ शक्तिपीठों पर यज्ञीय अनुष्ठान
- * गंगा एवं समस्त जलस्रोतों का शुद्धि अभियान/ पत्रक वितरण
- * गोमुख से गंगा सागर तक सामूहिक गंगा स्वच्छता कार्यक्रम एवं गंगा अभिषेक
- * सायंकाल-दीपयज्ञ(नदी सफाई के संकल्प)

26 जून (बुधवार)- विश्व नशा निरोधक दिवस

- * नशा विरोधी रैली का आयोजन/ पत्रक वितरण
- * क्षेत्रीय प्रशासनिक अधिकारी को नशा निषेध एवं धूम्रपान निषेध कानून सख्ती से लागू कराने हेतु ज्ञापन * नुक्कड़ नाटक का आयोजन
- * ब्लॉक/ तहसील स्तर पर नशामुक्ति दीपयज्ञ

माह - जुलाई

प्रथम सप्ताह - जिला स्तर पर बालसंस्कार शाला प्रशिक्षण

- * 108 बाल संस्कार शालाओं का संकल्प
- * एक दिवसीय विद्यार्थी व्यक्तित्व परिष्कार शिविर की कार्ययोजना

गुरुपूर्णिमा महोत्सव-पर्यावरण सप्ताह (आषाढ़ शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक)

- * वृक्ष गंगा रैली/ गाँवों में पंचवटी स्थापना
- * श्रीराम स्मृति उपवन/ आदर्श ग्राम में वृक्षारोपण
- * तुलसी वितरण/ तरुपुत्र/ तरुमित्र रोपण महायज्ञ आयोजन
- * विद्यारम्भ/ ज्ञानदीक्षा समारोह * संस्कृति मण्डलों की स्थापना

माह-अगस्त

नागपंचमी- शरीर सौष्ठव दिवस

- * भारतीय पारंपरिक खेल प्रतियोगिता
 - * युवाओं में सनातन संस्कृति की ओर ले जाने हेतु कुश्ती/ कबड्डी प्रतियोगिता
- 15 अगस्त -**राष्ट्र जागरण दिवस** (संदर्भ-स्वतंत्रता दिवस)

* प्रभात फेरी- देश भक्ति गीतों का आयोजन * सायंकाल-परिचर्चा/ दीपयज्ञ
रक्षा बंधन - नारी महिमा पर्व

- * बहिनों द्वारा नशा मुक्ति अपील पत्रक का वितरण
- * बहिनों द्वारा उपहार के रूप में नशा त्यागने का संकल्प कराना
- * श्रावणी पर्व आयोजन एवं वृक्षारोपण

जन्माष्टमी पर्व-गौ संवर्धन सप्ताह

- * गौ आधारित अर्थव्यवस्था/ जैविक कृषि पर प्रदर्शनी/कार्यशाला
- * गौ संवर्धन/ साहित्य वितरण/ दीवार लेखन

गणेश पर्व की पूर्व तैयारी के क्रम में

- * मूर्तिकारों से अनुरोध पत्रक 'केवल प्राकृतिक रंग उपयोग करें' का प्रकाशन वितरण एवं प्लास्टर ऑफ पेरिस के स्थान पर मिट्टी की पर्यावरण मित्र मूर्तियों की स्थापना करें।

माह - सितम्बर

05 सितम्बर (गुरुवार)- **शिक्षक सम्मान पर्व**

- (संदर्भ-भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन् का जन्म दिवस)
- * शक्तिपीठों में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में सहयोगी शिक्षकों का सम्मान समारोह
 - * शिक्षक गरिमा शिविरों का आयोजन ब्लॉक एवं तहसील स्तर पर

गणेश चतुर्थी एवं गणेश विसर्जन (अनन्त चतुर्दशी) पर्व-

- * स्वच्छ नदी/ जलाशयों में मूर्ति विसर्जन न करने की अपील पत्रक/समितियों की गोष्ठी का आयोजन
- * गणेश पाण्डालों में दीपयज्ञ/ जलस्रोत शुद्धि फिल्म प्रदर्शन/पत्रक वितरण
- * बुद्धि बढ़ाने के वैज्ञानिक उपाय-पर विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में मार्गदर्शन
- * छात्रावासों में दीपयज्ञ (निष्ठापूर्वक पढ़ाई हेतु संकल्प)

श्राद्ध पक्ष -पितृ सम्मान पर्व

- * कुप्रथाओं के विरुद्ध शंखनाद रैली * ऋषि परंपरा/भारतीय संस्कृति पर प्रदर्शनी
- * श्राद्ध पक्ष/ मृतक भोज पर पत्रक का प्रकाशन/ वितरण
- * शक्तिपीठ/ प्रज्ञापीठों पर श्राद्ध तर्पण आयोजन

दुर्गा पूजा पर्व की पूर्व तैयारी-

- * मूर्तिकारों से अनुरोध पत्रक “केवल प्राकृतिक रंग उपयोग करें” का प्रकाशन वितरण एवं प्लास्टर ऑफ पेरिस के स्थान पर मिट्टी की पर्यावरण मित्र मूर्तियों की स्थापना करें। (1 अक्टूबर मातृ-पितृ सम्मान पर्व) हेतु प्रचार/ प्रसार 25 से 30 सितम्बर - विद्यालयों/ महाविद्यालयों में मातृ-पितृ सम्मान पर्व

माह- अक्टूबर

- 01 अक्टूबर - मातृ-पितृ सम्मान पर्व (संदर्भ - अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस)
 - * अग्रज सम्मान समारोह * वृद्धाश्रम में सेवा कार्य
- 02 अक्टूबर -सेवा स्वच्छता दिवस (संदर्भ-गांधी/ शास्त्री जयंती)
 - * एक मण्डल एक गाँव (ग्राम स्वच्छता अभियान) “ग्राम तीर्थ कार्यक्रम”
 - * प्रभात फेरी के माध्यम से जन जागरण, ग्राम स्तर पर नशामुक्ति रैली
 - * कुष्ठाश्रम/ वृद्धाश्रम/ अस्पताल में सेवा कार्य

आश्विन नवरात्र-शक्ति अर्जन / अर्चन पर्व

- * सघन मंत्र लेखन अभियान * प्रज्ञा मण्डल/महिला मण्डल में सामूहिक साधना
- * बलिप्रथा के कुप्रभाव पर जीव दया पत्रक का प्रकाशन वितरण
- * दुर्गा पूजा पाण्डालों में सद्वाक्य बैनर का प्रदर्शन

शरद पूर्णिमा पर्व

- * नदी तट पर शुद्धि अभियान के अंतर्गत दीपयज्ञ * आध्यात्मिक कवि सम्मेलन
- * विद्यालय/ महाविद्यालयों में पटाखों के दुष्प्रभाव संबंधी पत्रक वितरण

माह - नवम्बर

दीपमालिका पर्व

- * ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर युग साहित्य/ सद्वाक्य उपहार
- * प्रदूषण रहित दीपावली का संदेश एस. एम. एस./ ईमेल द्वारा
- 14 नवम्बर - बाल प्रतिभा/ संस्कार संवर्धन दिवस (संदर्भ- बाल दिवस)
 - * लोक रंजन से लोक मंगल, समाजोन्मुखी उद्देश्यपरक प्रतियोगिताओं का आयोजन
 - * शालाओं में बाल प्रतिभा संवर्धन कार्यक्रम * बाल संस्कार शालाओं का सम्मेलन
- 15 नवम्बर से 30 नवम्बर- पाठक बढ़ाओ अभियान
 - * अखण्ड ज्योति/ युग निर्माण/ प्रज्ञा अभियान आदि पत्र-पत्रिकाओं के नये पाठक बनाना * तहसील स्तर पर सुविधानुसार पाठक सम्मेलन

माह - दिसम्बर

01 दिसम्बर - अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन

* जिला स्तर पर पाठक सम्मेलन

14 दिसम्बर - राष्ट्रीय ऊर्जा बचत दिवस

* ऊर्जा संरक्षण/वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों पर परिचर्चा/ कार्यशाला (विद्या./महाविद्यालयों में)

23 दिसम्बर - ग्रामोत्थान दिवस (संदर्भ-राष्ट्रीय किसान दिवस)

* गौ आधारित कृषि प्रदर्शनी/ संगोष्ठी, गौ-ग्राम यात्रा का आयोजन एवं ग्राम परिव्रज्या

* केंचुआ खाद (वर्मी कम्पोस्ट) पर कार्यशाला

* आदर्श ग्राम में व्यापक समीक्षा आयोजन

25 दिसम्बर - कार्यकर्ता सम्मेलन

* वार्षिक कार्ययोजना की समीक्षा। अगली कार्ययोजना पर विचार विमर्श।

* पत्रिकाओं की संख्या बढ़ाने हेतु व्यावहारिक कार्ययोजना।

पंचशीलों का करें अभ्यास

1. श्रमशीलता : आलस्य, प्रमाद, विलासिता, ठाट-बाट आदि के कारण उपलब्ध युवाशक्ति का एक चौथाई भाग भी उत्पादक श्रम में नियोजित नहीं हो पाता। निठल्लेपन में शारीरिक, मानसिक असमर्थता पनपती है। श्रम के बिना शरीर रोगी व अशक्त हो जाता है। यह समझते हुए समय को तत्परता और तन्मयता भरे परिश्रम के साथ जोड़ कर दिनचर्या बनाई जाये, ताकि उपलब्ध समय एवं साधनों में ही प्रगतिशीलता के साथ जुड़े हुए अनेकानेक सत्परिणाम मिल सके।

2. मितव्ययिता : आज दुर्व्यसनों में फैशन तथा सजधज जैसे आडम्बरों में जो फिजूलखर्ची होती है। उसे बचा लेने पर अपने तथा दूसरों के अनेक प्रयोजन सध सकते हैं। 'सादा जीवन - उच्च विचार' वाली उत्कृष्टता अपना कर अपव्यय से बचें।

3. शिष्टता : शिष्टता सभ्यता की आधारशिला है। शिष्टता, विनम्रता बड़ों के साथ ही नहीं, छोटों के साथ भी अपनायी जाये। शालीनता बिना मोल मिलती है, परन्तु उससे सब कुछ खरीदा जा सकता है।

4. सुव्यवस्था : अपने समय, श्रम, मनोयोग, जीवनक्रम, शरीर, सामर्थ्य आदि सभी सम्बद्ध उत्पादनों का सुनियोजन ही सुव्यवस्था है। जिसे सँभालना, सदुपयोग करना, सुनियोजित रखना आ गया, वही गुणवान् है।

5. सहकारिता : मिल-जुल कर काम करना सहकारिता है। परिवार में, कारोबार में, लोक व्यवहार में सामंजस्य बनाये रह सकना तभी संभव है, जब उदारता भरी सहकारिता को अपनाया जाये।

सृजनशील युवा- अनुकरणीय प्रयास

“सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा” कहते हुए अपनी संस्कृति पर गर्व होता है। इसी तरह अपने गौरवशाली इतिहास को पढ़ते, कहते, सुनते हमारा सीना गर्व से फूल जाता है। परन्तु हमने इतिहास को गढ़ते लोगों की ओर कभी ध्यान नहीं दिया। यदि हम ध्यान दें, तो ऐसे अनेकों उदाहरण हमारे आस-पास हमें दिखाई पड़ेंगे, जो इतिहास के पत्रों पर शनैः-शनैः अपना स्थान बना रहे हैं। अग्रदूतों के ऐसे ही कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं।

- 1. नहीं बचा अछूता जिले का कोई गाँव-** वृक्ष गंगा अभियान की प्रेरणा लेकर शाजापुर (म.प्र.) के युवा साथियों में जिले के प्रत्येक गाँव में (1170 गाँवों) पंचवटी (अशोक, पीपल, बरगद, बेल, आँवला) का रोपण किया। गाँव के युवा मण्डलों से संरक्षण का संकल्प कराया। 5850 वृक्षों से वसुंधरा का हुआ शृंगार। वर्ष 2014 के वृक्षारोपण कार्यक्रम हेतु दिसंबर 2013 से अभी तक जिले के 700 गाँव में सघन मंथन करके 2400 ऐसे जोड़े तैयार कर लिये गये हैं जो एक-एक त्रिवेणी की तब तक जिम्मेदारी संभालेंगे, जब तक वह पौधे पूरी तरह से आत्म निर्भर नहीं हो जाते।
- 2. व्यसन मुक्त हुआ गाँव-** एक युवा के संकल्प व पाँच सहयोगियों ने अपने पूरे गाँव बिजौरा (नरसिंहपुर, म.प्र.) को व्यसन मुक्त कर दिखाया। तीन साल के अथक प्रयास से चरस, अफीम, स्मैक, शराब आदि के व्यसनों से युवाओं को मुक्त कराया। प्रत्येक घर में आज उपासना होती है। गाँव खुशहाल है, प्रति व्यक्ति आय दो गुनी से ज्यादा हो गई है। गुजरात में युवा भाइयों ने व्यसन मुक्ति की प्रदर्शनी तैयार कर उसे प्रदेश के हर तहसील स्तर पर पहुँचाया है, जहाँ से गाँव-गाँव में व्यसन मुक्ति के संदेशों को जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है।
- 3. वीरान पहाड़ियाँ हो रहीं हरी- भरी:-** शास्त्रों में वृक्षों को तरु-तारने वाला कहा गया है। तरु को मित्र बनाकर या पुत्रवत् पाल कर ही बड़ा किया जा सकता है। इसी प्रयोग को साकार कर दिखाया युवा साथियों के सत्प्रयास ने। बुरहानपुर (म.प्र.) के ग्राम देवहारी में 1008 वृक्षारोपण तथा ग्राम फोफनार में 1008 त्रिवेणी रोपण (पीपल, बरगद व नीम एक साथ) गाँव की वीरान पहाड़ियों पर ग्रामवासियों के सहयोग से किया गया। ड्रिप सिस्टम के माध्यम से उनका सिंचन किया जाता है। गाँव वालों का वृक्षों के प्रति पुत्र प्रेम देखते ही बनता है। देश के 61 से अधिक पहाड़ियों को हरा-भरा किया जा चुका है।
- 4. विद्यार्थी जीवन में भविष्य निर्माण व व्यक्ति निर्माण के साथ - साथ नयी पीढ़ी को सँवारता युवा:-** एक छोटे से युवा दल के संकल्प ने थोड़े से समय में पटना शहर में अपना भविष्य सँवारने आये, अब तक 23000 युवाओं को एक नयी दिशा दी। आज जहाँ एक ओर वे अपने भविष्य के प्रति जागरूक हैं, वहीं दूसरी ओर वे

गुरुवर के सपनों का युवा, अपने भीतर तलाशते, तराशते उज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हैं। नियमित साधना-स्वाध्याय उनके जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से समाज में व्यसन मुक्ति, कुरीति उन्मूलन व सम सामयिक विषयों पर जागरूकता का संदेश देते हैं।

“फुटपाथ पर कक्षायें” इनकी विशेष पहचान है। ये युवादल अपनी-अपनी प्रतिभा के अनुरूप झुग्गी-झोपड़ियों में रह रहे बच्चों को जहाँ एक ओर विद्यालयीन विषयों को पढ़ाते हैं, वहीं दूसरी ओर संस्कार व संस्कृति का पाठ भी पढ़ाया जाता है। इन संस्कारवान् नौनिहालों की पीढ़ी को गढ़ता देख हर कोई प्रफुल्लित है।

5. नर्मदांचल शुद्धि अभियान ने लिया भागीरथी स्वरूप- 2 फरवरी 2009 को अमरकंटक से शुरू किये गये अभियान ने संपूर्ण नर्मदांचल में “आस्था” को एक नई परिभाषा प्रदान की। जल शुद्धि के साथ-साथ तट शुद्धि व हरीतिमा संवर्धन की अलख जगी। अमरकंटक से भरुच तक परिजनों द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान ने जन आंदोलन का रूप ले लिया है। नदियों में मूर्ति विसर्जन पर रोक लग गयी है। परिजनों के इस प्रयास के परिणामस्वरूप म.प्र. हाई कोर्ट के निर्देशानुसार म.प्र. सरकार ने म.प्र. की सभी नदियों में मूर्ति विसर्जन हेतु रोक लगा दी है और इस हेतु अलग से कुंडों का निर्माण किया गया है।

इस अभियान की गूँज से मंदसौर में शिवना, उज्जैन, देवास में क्षिप्रा, धार में डोही, चित्रकूट में मंदाकिनी, बैतूल में ताप्ती, बुरहानपुर, खण्डवा आदि नदियों पर स्वच्छता - श्रमदान जल संरक्षण की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास हुए हैं।

दो किंवदंतल हार फूल बटोरकर बनाई 20,000 रुपए की केंचुआ खाद:- जहाँ लोग नदी में पूजा के पुष्प आदि विसर्जित कर नदी को प्रदूषित कर रहे हैं वहीं वर्ष 2013 में गायत्री परिवार बुरहानपुर के परिजनों ने उन्हीं विसर्जित पुष्पों को कीमती खाद में परिवर्तित कर लोगों को एक नई दिशा एवं प्रेरणा दी। उन्होंने खड़कोद स्थित गोलोकधाम में ताप्ती नदी पर प्रतिमा विसर्जन हेतु बनाये गये ताप्ती कुंड से करीब दो किंवदंतल हार-फूल बटोर कर 20,000 रुपए की केंचुआ खाद बनाई।

6. बाल संस्कार शाला अभियान बना आंदोलन - भोपाल से प्रारंभ हुई इस विद्या ने शनैः शनैः एक आंदोलन का रूप ले लिया और आज संपूर्ण देश में फैल चुकी है। नयी पीढ़ी में संस्कारों के बीजारोपण के साथ खेल-खेल में जीवन विद्या का पाठ पढ़ाने का यह क्रम युवा - युवतियों को विशेष भा रहा है। देश में बड़े शहर के प्रत्येक वार्ड में तथा हर गाँव में नयी पीढ़ी संस्कारों का पाठ पढ़ रही है। उत्साही युवा इन्हें हर गाँव तक पहुँचाने के लिये सतत प्रयासरत है। राजस्थान, महाराष्ट्र, यूपी, बिहार, झारखण्ड, गुजरात, उत्तराखण्ड, म. प्र., उड़ीसा, प. बंगाल में भी आंदोलन को गति मिलने का श्रेय बाल संस्कार शालाएँ चलाने के लिए विधिवत् दिया जाने वाला प्रशिक्षण है, जो शान्तिकुञ्ज, म. प्र. व छत्तीसगढ़ में सुलभ है।

7. “युग शिल्पी प्रशिक्षण” ने कर दिया कमाल - शान्तिकुञ्ज से प्रशिक्षण प्राप्त करने के तुरंत बाद मात्र 75 दिनों में युवा लोकेश ने 3500 वृक्षारोपण, 700 लोगों को नशा मुक्त, 2500 पुस्तकें जन-जन तक पहुँचाई। प्रत्येक गाँव में दीवार लेखन, 300 घरों में अन्नघट स्थापित, 850 घरों में बलिवैश्व यज्ञ आरंभ, इतना ही नहीं जन्म शताब्दी कार्यक्रम में 29 श्रमशील, भावनाशील युवक- युवतियों का दल लेकर पहुँचा।
8. “ऋषि गुरुकुल” परंपरा को पुनर्जीवित किया युवाओं ने - गोलोक धाम बुरहानपुर, गायत्री धाम सेंधवा, लंजोड़ा, दंतेवाड़ा ऐसे नाम हैं, जहाँ ग्रामीण अंचलों के बालक-बालिकाएँ गुरुकुल में रहकर ही शिक्षा व विद्या का पाठ एक साथ पढ़ रहे हैं तथा गौ सेवा का लाभ भी प्राप्त कर रहे हैं। अपनी उत्कृष्ट शिक्षा से ये बच्चे अपने क्षेत्रों में अपने गुरुकुल का नाम रोशन कर रहे हैं। इसी कड़ी में माता भगवती वात्सल्य निकेतन, राजनांदगाँव की अलग पहचान है, जहाँ नक्सल प्रभावित 31 अनाथ बच्चियाँ ममता की छाँव पा रही हैं।
9. गांधी के आदर्श गाँव व गुरुदेव के सपनों का ग्राम तीर्थ हुआ साकार- देश की दशा बदलने के लिए गाँव की दशा बदलना होगा, गुरुदेव के इस कथन को आदर्श मान हमारे परिजनो ने कई गावों को आदर्श बना दिया। शासन की ओर से ये गाँव पुरस्कृत भी हो चुके हैं- आजंदी, हरी, भुलाय, देवहारी, म.प्र. में तथा पाटीदड़ (गोंडल) गुजरात में कुछ ऐसे ही उदाहरण हैं। इस राह पर भारतवर्ष में 200 से अधिक गाँव अग्रसर हैं।
10. कॉर्पोरेट जगत् भी हुआ कायल - सतत अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने, व लंबी कार्यावधि से पनप रही समस्याओं का समाधान सुझाने हमारी DIYA टीम की पैठ अब इन औद्योगिक क्षेत्रों व कॉर्पोरेट जगत् में भी हो गई है। देश के महानगरों में दिल्ली, मुम्बई, कलकत्ता, चैन्नई, हैदराबाद, बेंगलोर, पूना, इंदौर, भोपाल में हमारे युवा तनाव प्रबंधन, सामाजिक दायित्व, समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन, जीवन प्रबन्धन, कार्पोरेट एक्सीलेंस आदि की कार्यशालाओं के माध्यम से उन्हें मदद पहुँचा रहे हैं।
11. इंटरनेट एवं सोशल मीडिया में फैलते गुरुदेव के सद्विचार- शान्तिकुञ्ज तकनीकी टीम द्वारा वेबसाइट एवं सोशल मीडिया के पेज से प्रसारित पूज्य गुरुदेव के सद्विचारों को देश भर के युवा विभिन्न नेटवर्क्स में नियमित रूप से प्रसारित कर रहे हैं। हजारों लोग प्रतिदिन इस साइट का अवलोकन करते हैं। युवाओं का यह रुझान भावी पीढ़ी के उज्वल भविष्य की ओर एक आशावान् संकेत है।
12. ग्रेटर नोयडा के युवा भाइयों का पुरुषार्थ- सन् 2013 में 108 अखण्ड ज्योति के संकल्प के साथ गये थे, अभी 800 से अधिक हिन्दी तथा अंग्रेजी अखण्ड ज्योति के सदस्य बना चुके हैं।

13. **नेपाल की बागमती नदी पर चला स्वच्छता अभियान-** नेपाल की गंगा कही जाने वाली बागमती नदी जो विगत दिनों एक नाले के रूप में बदल चुकी थी, उसके पुनरुद्धार के लिये नेपाल के गायत्री परिवार ने एक प्रयास प्रारंभ किया। मई, 2013 में नेपाल के गायत्री परिवार, सीमा के साथ लगे भारत के युवा भाई-बहनों द्वारा शान्तिकुञ्ज की युवा टीम के मार्गदर्शन में बागमती नदी सफाई अभियान प्रारम्भ किया गया। नेपाल सरकार एवं नेपाल के नागरिकों ने इस अभियान में पूरी जागरूकता एवं रुचि दिखाते हुए प्रशंसनीय भागीदारी की। वर्ष भर से यह अभियान नेपाल के नागरिकों द्वारा युद्ध स्तर पर जारी है। गायत्री परिवार के नेतृत्व में प्रत्येक शनिवार को वहाँ के नागरिकों के साथ साथ राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी, अभिनेता, समाजसेवी संगठन, प्रशासनिक अधिकारी, सेना, पुलिस और राजनेता सम्मिलित होते हैं। नागरिकों के उत्साहवर्धन हेतु राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री भी इसमें कई बार सम्मिलित हुए हैं। पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में पूरे विश्व समुदाय के लिये यह एक अनूठा उदाहरण है। समन्वित प्रयासों से अब यह नदी पूर्णतः अपने वास्तविक स्वरूप की ओर है।

14. **स्पीरिचुअल फैमिली ऑफ आई. आई. टी. रुड़की-** आई. आई. टी. रुड़की में पढ़ रहे गायत्री परिवार के बच्चों ने दीपयज्ञ के माध्यम से विद्यार्थियों का एक युवा मण्डल - 'स्पीरिचुअल फैमिली ऑफ आई. आई. टी. रुड़की' गठित किया है। इसके माध्यम से वे युगऋषि के विचारों को अन्य विद्यार्थियों एवं प्रोफेसर्स के बीच पहुँचा रहे हैं। वे साप्ताहिक स्वाध्याय मण्डल, सामूहिक साधना, गौ सेवा, बाल संस्कार शाला, झोला पुस्तकालय आदि रचनात्मक गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, साथ ही अपने साथियों को शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय भ्रमण एवं एक दिवसीय कार्यशाला हेतु लाते रहते हैं।

विचार आपसे कहते हैं

हमें मन के जेलखाने में ही घोटकर मत मारिए; वरन् शरीर के कार्यों द्वारा जगत् में आने दीजिए। मनुष्य उत्तम लेखक, योग्य वक्ता, उच्च कलाविद्, वह जो भी चाहे, सरलता पूर्वक बन सकता है; लेकिन एक शर्त है कि वह अपने शुभ संकल्पों को क्रियाशील कर दे। उन्हें दैनिक जीवन में भी कर दिखाए। जो कुछ सोचता-विचारता है, उसे परिश्रम द्वारा, अपनी सामर्थ्य द्वारा साक्ष्य का रूप प्रदान करे। शुद्ध विचारों की उपयोगिता तभी प्रकट होगी, जब अंतःकरण के चित्रों को शरीर के कार्यों द्वारा क्रियान्वित करने का प्रयत्न किया जायेगा।

व्यक्तित्व निर्माण का केन्द्र - देव संस्कृति विश्वविद्यालय

इन दिनों शिक्षा के क्षेत्र को व्यवसायीकरण एवं धन- लोलुपता की वृत्ति ने इतना विकृत कर दिया है कि जीवन में चुनौतियों से जूझने वाले व्यक्तित्व के बहु आयामी विकास एवं सुप्त संभावनाओं को उभारने का, शिक्षा का मूल उद्देश्य ही प्रायः समाप्त होता जा रहा है। दुर्भाग्य से वर्तमान समय में यत्र-तत्र सामान्य, पारंपरिक, जानकारी युक्त शिक्षा देकर जीवकोपार्जन के लिये इस सीमित शिक्षा की सफलता श्रेष्ठ माना जा रहा है। आकर्षक भवनों के चित्र और लुभावने प्रचार केन्द्र चलाने का जो कार्य चल रहा है, वह नवीन पीढ़ी एवं राष्ट्र निर्माण की दिशा में सर्वथा अनुकूल नहीं हैं।

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने एक ऐसे विश्वविद्यालय की परिकल्पना की जहाँ शिक्षा एवं विद्या के सुयोग से मानव गढ़े जाने की प्रक्रिया को परिमार्जित किया जाये। मनुष्य को देवता बनाने का प्रयास आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों पर आधारित ज्ञान के माध्यम से किया जाए। श्रेष्ठ विचारों से भरपूर एक सादा जीवन जीने की कला जहाँ सिखाई जाय एवं युग निर्माण की प्रक्रिया को प्रगाढ़ करने हेतु ऐसे मनुष्यों को गढ़ा जाय, जो स्वहित के साथ-साथ सर्वहित की सोच रखने वाले हों।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय एक ऋषि के तप और युगद्रष्टा की दैवीय योजना है जो मानवमूल्यों को स्थापित करने, पुष्पित-पल्लवित करने और भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान के संकल्प के साथ स्थापित की गई है। देव संस्कृति के नामकरण में प्रयुक्त शब्द संयोजन देव संस्कृति, विश्व और विद्यालय में जीवन विद्या का आलोक समावेशित है। शिक्षा एवं विद्या के परस्पर समन्वय पर टिकी यहाँ की शिक्षण प्रणाली एक सुदृढ़ विद्यार्थी जीवन की नींव है। विद्यालय की शिक्षण प्रक्रिया में सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक दोनों ही पद्धतियों का समिश्रण है। इसकी मौलिक विशेषताओं में वर्तमान युग की चुनौतियों से जूझने की प्रतिबद्धता, ऋषि परम्परा का पुनर्जीवन, प्राकृतिक वातावरण, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्यों पर आधारित जीवनशैली आदि हैं। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिये समर्पित देव संस्कृति विश्वविद्यालय में सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए दैनिक जीवन में परस्पर विकास की विभिन्न उक्तियाँ यहाँ समझायी व अपनायी जाती हैं।

विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक अध्यात्मवाद, जीवन प्रबंधन जैसे प्रभावी एवं जीवनोपयोगी विषयों को अनिवार्य किया गया है। इन विषयों की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुये माननीय कुलाधिपति, कुलपति, प्रतिकुलपति, आचार्य एवं कुलसचिव भी स्वयं कक्षाएँ लेते हैं। इसके अलावा व्यक्तित्व निर्माण के मूल्यांकन के लिए अनेक प्रावधानों की व्यवस्था की गई है।

व्यावसायिक एवं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को दूषित किया है जिसका परिणाम अनेक प्रोफेशनल कोर्स के शिक्षण-प्रशिक्षण केन्द्रों को रैगिंग जैसे संक्रामक रोगों ने ग्रसित कर रखा है। वहीं देव संस्कृति विश्वविद्यालय में पुराने विद्यार्थी नव प्रवेशी विद्यार्थियों का स्वागत उन्नयन पर्व के रूप में मनाकर करते हैं। उन्नयन के अन्तर्गत पुराने विद्यार्थी विश्वविद्यालय की विशेषताओं एवं इसके अद्वितीय स्वरूप को स्वयं के अनुभव के साथ रोचक शैली में प्रस्तुत करते हैं। इस अद्भुत विश्वविद्यालय में एनीमेशन जैसे प्रोफेशनल कोर्स भी संचालित हो रहे हैं लेकिन इस अत्याधुनिक तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ श्रेष्ठ विद्यार्थी के सभी गुणों के विकास का भी ध्यान रखा जाता है। इसके अतिरिक्त वार्षिकोत्सव को उत्सव पर्व एवं गणेश स्थापन-पूजन को उत्कर्ष के रूप में मनाया जाता है। इन रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण आदि को प्रमुखता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ के विद्यार्थियों का सुप्रभात एवं सुरात्रि प्रार्थना से होती है।

विश्वविद्यालय के सभी पाठ्यक्रम मानवीय व्यक्तित्व को पोषित करने वाले तथा स्वरोजगार को बढ़ावा देने वाले हैं। यह विश्वविद्यालय पूरी तरह आवासीय है। भारतीय संस्कृति के विषय में कहा जाता है कि यह विविधता में एकता के संदेश को देने वाली है। इसी प्रकार देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में अनेक वर्गों, संस्कृतियों एवं मतों को अपनाने वाले विद्यार्थी एवं आचरण से शिक्षा देने वाले प्राध्यापक अनेकता में एकता के संदेश को देते हैं। यहाँ मानवीय संस्कृति को आधार माना गया है और मानवीय व्यक्तित्व को पोषित करना ही एक मात्र उद्देश्य रखा गया है। 'सृजना' के अन्तर्गत अर्न बाई लर्न योजना में आर्थिक स्तर के कमजोर विद्यार्थियों को कुटीर उद्योग के तहत श्रम के बदले पॉकेटमनी के रूप में सहयोग देने का कार्य इस अद्वितीय विश्वविद्यालय की विशेषता है। पाणिनि, अरविंद, निवेदिता, संघमित्रा जैसे प्रेरक नाम विद्यार्थियों के आवासीय हॉस्टलों के हैं। कहा जाता है कि जैसा व्यक्तित्व बनाना हो वैसा ही नाम रख देना चाहिए। यही सोच यहाँ के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. साहब एवं उनके सहयोगियों की है, जिनका उद्देश्य यह विश्वविद्यालय मात्र शिक्षा का केन्द्र न रह कर जीवन विद्या का आलोक केन्द्र बने। इस पुनीत पावन उद्देश्य की पूर्ति के लिए यहाँ मात्र किताबी ज्ञान ही नहीं दिया जाता है; बल्कि व्यक्तित्व निर्माण के व्यावहारिक सूत्रों को पाठ्यक्रम के साथ ही सम्मिलित किया जाता है। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में अपनायी जाने वाली श्रेष्ठ जीवन शैली एवं व्यक्तित्व निर्माण के निमित्त समर्पित इस विश्वविद्यालय को भविष्य में श्रेष्ठ युवाओं की टकसाल कहा जायेगा।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

‘एक विराट् व्यक्तित्व’

- **युग ऋषि** - इस युग में भगीरथ, विश्वामित्र, वशिष्ठ, व्यास, याज्ञवल्क्य, बाल्मीकि, परशुराम, कणाद, चरक, नारद जैसे महान् ऋषियों की महान् परम्पराओं की पुनर्स्थापना की।
- **युग व्यास** - चारों वेद, 108 उपनिषद्, षड्दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ पुराण प्रज्ञा पुराण की रचना भी की।
- **अद्वितीय लेखक** - हजारों पुस्तकें लिखकर व्यक्ति, परिवार एवं समाज के लौकिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया।
- **स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी** - महात्मा गांधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रवीन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी “श्रीराम मत्त” के रूप में प्रख्यात हुए।
- **संस्कृति पुरुष** - लुप्तप्राय संस्कार परम्परा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया।
- **जगद्गुरु** - अज्ञान के गहन अंधकार में भटकती मनुष्यता को धर्म-पंथ-सम्प्रदाय आदि वर्ग भेदों से ऊपर उठा कर जीवन लक्ष्य सुझाया। करोड़ों लोगों को आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर कराया।
- **तपस्वी** - कठोर तप साधना से अर्जित शक्ति द्वारा लाखों को पीड़ा-पतन से उबारा तथा कई अवसरों पर प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया। गायत्री की कठोरतम साधना कर 24-24 लाख के 24 महापुरश्चरण सम्पन्न किये।
- **दार्शनिक** - दर्शन की भूल-भूलैया और रहस्यवाद से जन-जन को उबारा और जीवन में स्वयं जी कर सुगम रूप में प्रस्तुत किया।
- **विचारक** - सम्पूर्ण विश्व को ‘अखण्ड ज्योति’ की प्रखर विचार शैली प्रदान की।
- **आध्यात्मिक पुरुष** - अध्यात्म को जीवन जीने की कला के रूप में प्रस्तुत किया।
- **नवयुग के शिल्पकार** - शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधारशिला रखी।
- **वैज्ञानिक ऋषि** - धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला “ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान” स्थापित कर सिद्ध किया कि “धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, परस्पर पूरक हैं”
- **युग द्रष्टा** - “२१ वीं सदी उज्ज्वल भविष्य” का नारा दिया तथा युग-विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नव सृजन - नये युग के आगमन का संदेश दिया।

- **धार्मिक उद्धारक** - गायत्री और यज्ञ को रूढ़ियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार बनाया तथा सद्बुद्धि एवं सत्कर्म को जागरण का माध्यम बनाया।
- **संगठक** - अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोड़ों लोगों को आत्मीयता के सूत्र में बाँधकर विश्वव्यापी 'युग निर्माण परिवार' 'गायत्री परिवार' का गठन किया।
- **समाज सुधारक** - नारी अत्याचार, असमानता, व्यसन, खर्चीले विवाह, दहेज, जाति-पाँतियों में ऊँच-नीच तथा परम्परागत रूढ़ियों की समाप्ति हेतु अद्भुत प्रयास किये एवं एक आदर्श स्वरूप समाज में प्रस्तुत किया।
- **ब्राह्मण** - प्राचीन ब्राह्मण परम्परा का सच्चा स्वरूप समाज के सामने रखा एवं ब्राह्मणोचित औसत भारतीय जीवन स्तर अपना कर अपना सम्पूर्ण समय, श्रम, मनोयोग एवं प्रतिभा समाज हित में नियोजित कर अनेकों को इस मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित किया।
- **पिता** - करोड़ों व्यक्तियों को अपने हृदय से लगाया और लाखों व्यक्तियों ने उनके अन्तस् के दर्द को अनुभव कर अपना जीवन महान् कार्यों हेतु समर्पित किया।
- **सिद्ध पुरुष** - कठोर तपस्या कर स्वयं को तपाया तथा पारस बनकर औरों को स्पर्श कर महान् बना दिया।
- **पथ प्रदर्शक** - लाखों व्यक्तियों को नैतिक और आध्यात्मिक जीवन पथ पर अग्रसर किया।
- **अवतारी चेतना** - "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोड़ों व्यक्ति उस ओर चल पड़े।

महापुरुषों की दृष्टि में गुरुदेव

आचार्य जी द्वारा भाष्य किये गये उपनिषदों का स्वाध्याय करने के बाद उन्होंने कहा कि- "काश! यह साहित्य मुझे जवानी में मिल गया होता, तो मेरे जीवन की दिशाधारा कुछ और ही होती, मैं राजनीति में न जाकर आचार्य श्री के चरणों में बैठा अध्यात्म का ज्ञान ले रहा होता।"

- सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन्

विनोबा जी ने वेदों के पूज्यवर द्वारा किये गये भाष्य को ग्वालियर में एक सार्वजनिक सभा में अपने सिर पर धारण करते हुए कहा- "ये ग्रन्थ किसी व्यक्ति द्वारा नहीं, शक्ति द्वारा लिखे गये हैं।"

- आचार्य विनोबा भावे

युग निर्माण योजना एक दृष्टि में

योजना के उद्घोषक-विस्तारक :

1) युग ऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा ।

लक्ष्य एवं उद्देश्य :

- 1) मनुष्य में देवत्व का उदय, धरती पर स्वर्ग का अवतरण ।
- 2) व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण ।
- 3) स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज ।

तीन समर्थ आयाम :

- 1) योजना-शक्ति-ईश्वर की ।
- 2) अनुशासन-संरक्षण-ऋषियों का ।
- 3) पुरुषार्थ-सहकार-सत्पुरुषों का ।

आत्मनिर्माण के दो सूत्र :

- 1) उत्कृष्ट चिंतन, आदर्श कर्तव्य ।
- 2) सादा जीवन-उच्च विचार ।

हमारे आधारभूत कार्यक्रम :

- 1) नैतिक क्रान्ति, बौद्धिक क्रान्ति, सामाजिक क्रान्ति ।
- 2) धर्म तंत्र-आधारित विविध माध्यमों से लोकशिक्षण ।
- 3) गायत्री-सामूहिक विवेकशीलता एवं यज्ञ-सहकारिता युक्त सत्कर्म ।

हमारा उद्घोष :

- 1) हम बदलेंगे-युग बदलेगा, हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा ।
- 2) इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य ।

हमारा प्रतीक :

- 1) लाल मशाल-समग्र क्रान्ति के लिए सामूहिक सशक्त प्रयास युग शक्ति का विकास ।

हमारी ध्रुव मान्यताएँ :

- 1) मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है
- 2) नर-नारी परस्पर प्रतिद्वन्द्वी नहीं, पूरक हैं
- 3) जो जैसा सोचता और करता है, वह वैसा ही बन जाता है

जीवन निर्माण के चार सूत्र : साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा

आध्यात्मिक जीवन के तीन आधार : उपासना, साधना, आराधना

प्रगतिशील जीवन के चार चरण : समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, बहादुरी

आत्मिक प्रगति के चार चरण : आत्मसमीक्षा, आत्मसुधार, आत्मनिर्माण,

आत्मविकास

परिवार निर्माण के पंचशील : श्रमशीलता, मितव्ययिता, शालीनता (शिष्टता)

सुव्यवस्था, सहकारिता

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

- हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
- शरीर को भगवान् का मंदिर समझकर आत्म-संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
- मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
- इंद्रिय-संयम, अर्थ-संयम, समय-संयम और विचार-संयम का सतत अभ्यास करेंगे।
- अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
- मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
- समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
- चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
- अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
- मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
- दूसरों के साथ वह व्यवहार न करेंगे, जो हमें अपने लिए पसन्द नहीं।
- नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
- संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
- परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
- सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
- राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान् रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
- मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है, इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
- हम बदलेंगे-युग बदलेगा, हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

पंजीयन - पत्रक

व्यक्तिगत विवरण पत्रक

आई.डी.नं.- (शान्तिकुञ्ज द्वारा आबटित होगा)

सरनेम- नाम-.....

लिंग- स्त्री/पुरुष..... अविवाहित.....विवाहित.....

पिता/पति का नाम-.....

जन्म तिथि-विवाह तिथि-

दीक्षा तिथि-

पूरा पता-

जिला-प्रान्त-पिनकोड-.....

दूरभाष कोड नं-घर-कार्यालय-.....

मोबाइल-फैक्स-

ईमेल-भाषा-

शिक्षा-व्यवसाय-

अंशदान संकल्प राशि-मासिक/वार्षिक

समयदान अवधि (.....से.....तक)

वार्षिक/त्रैमासिक/अन्य पत्रिका विवरण-

क्र.	नाम (पत्रिका)	भाषा	संख्या
------	---------------	------	--------

1.....

2.....

परिवार विवरण-

क्र.	नाम	जन्मतिथि	शिक्षा	सम्बन्ध
------	-----	----------	--------	---------

1.....

2.....

3.....

4.....

दिनांक-

हस्ताक्षर

प्रज्ञा मण्डल/ महिला मण्डल/ युवा मण्डल/ संस्कृति मण्डल पंजीयन विवरण - पत्रक

- पंजीयन क्र.(शान्तिकुञ्ज उपयोग हेतु) दिनांक.....
- 1.मण्डल का नाम
- मुहल्ला/कॉलोनी का नाम-
- ग्राम- पोस्ट-..... ब्लॉक/तहसील.....
- जिला- प्रान्त- पिन कोड-
- 2.संचालक/संचालिका का नाम व पूरा पता.....
4. मण्डल की आय के स्रोत (ज्ञानघट, धर्मघट, अंशदान, यज्ञ, संस्कार व अन्य)-
.....
5. मण्डल के पास उपलब्ध साधन- ज्ञानरथ, संगीत उपकरण, ध्वनि विस्तारक यंत्र
सेट, यज्ञ-दीपयज्ञ हेतु साधन सामग्री
6. मण्डल द्वारा चलायी जा रही गतिविधियों की जानकारी लिखें-
.....
.....
7. मण्डल द्वारा मँगायी जा रही पत्रिकाओं की कुल संख्या का विवरण-
अखण्ड ज्योति सं.युग निर्माण योजना सं.
प्रज्ञा अभियान पाक्षिक.....युग साधना/युगशक्ति.....
युग प्रवाह सी.डी. पाक्षिक सं.अन्य.....
8. मण्डल के कितने सदस्यों ने शान्तिकुञ्ज में कौन-कौन से सत्र किये हैं-
एक मासीय युग शिल्पीएक मासीय परिव्राजक सत्र
- नौ दिवसीय सत्ररचनात्मक सत्रअन्य सत्र.....
9. विशेष जानकारियाँ (भविष्य की योजनाएँ)
-

दिनांक-

संचालक/संचालिका हस्ताक्षर

पूरा नाम

नोटः

1. इस प्रपत्र को भरकर शान्तिकुञ्ज भेजें।
2. आई. डी. नम्बर (व्यक्तिगत पहचान क्रमांक) शान्तिकुञ्ज द्वारा दिया जाता है।
3. मण्डल के सदस्य एवं संचालक अपना व्यक्तिगत विवरण पत्रक भरकर इसी के साथ संलग्न करें।
4. मण्डल के (संचालक अथवा सदस्य) भाई/बहिन कई मण्डल बना सकते हैं, परन्तु दूसरे मण्डल में अपना नाम नहीं लिखा सकते।
5. प्रज्ञा मण्डल भाईयों के लिए, महिला मण्डल बहिनों के लिए एवं युवा मण्डल युवा भाई-बहिनों के लिए है।
6. Diya Group भी इसी पत्रक में अपना पंजीयन कराये।

अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व पारिवारिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय असंतुलन से जूझ रहा है। अनेकों संस्थान भावनाशील, प्रतिभाएँ, कर्तव्यनिष्ठ एवं दूरदर्शी प्रबुद्धजन इस असंतुलन को दूर करने के लिये अपने-अपने स्तर पर कार्य कर रहे हैं। परन्तु इतना पर्याप्त नहीं है। जन-जन के माध्यम से बिगाड़ हुआ है, तो सुधार के लिए भी हर जन को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। आपके अन्तःकरण में निश्चित ही इस विषम वेला में कुछ करने के भाव उमड़ते ही होंगे, अतः आप भी इस अभियान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। यदि सभी संगठन मिल-जुलकर इन कार्यों को पूर्ण करने हेतु आगे आयें, तो परिणाम बहुत शीघ्र मिल सकता है। जिन किन्हीं के भी मन में अपने चारों ओर व्याप्त समस्याओं को दूर करने हेतु थोड़ी-सी भी इच्छा है, उन सभी को इस अभियान में शामिल होने, भागीदारी करने हेतु हम आवाहित करते हैं। जैसे बूँद-बूँद से घट भरता है। उसी प्रकार प्रत्येक जन की छोटी-सी भागीदारी भी बहुत महत्त्व रखती है। कार्य तभी पूर्ण होगा, जब जन-जन जागरूक होगा और अपनी जिम्मेदारी निभायेगा। स्वयं भी आगे आयें और औरों को भी प्रेरित करें, तभी सर्वे भवन्तु सुखिनः की उक्ति सुनिश्चित होगी। जिस किसी भी अभियान में आपकी विशेष रुचि है, आप उस अभियान में अपनी भागीदारी कर सकते हैं। इस हेतु युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार से पत्राचार, फोन, ई-मेल द्वारा सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

गंगा सेवा/प्रज्ञा मण्डल पंजीयन पत्रक

ग्राम ब्लॉक तहसील जिला

1. मण्डल प्रभारी का नाम पिता का नाम 2. पत्र-
व्यवहार का पता

पिन कोड-..... फोन नं.-.....मो. नं.-.....

3. जन्म तिथि-.....विवाह तिथि-.....

4. शैक्षणिक योग्यता-व्यवसाय-

5. किस कार्य में विशेष रुचि रखते हैं?

6. क्या गायत्री परिवार से जुड़े हैं? किसी अन्य संस्था से संबंध हो तो उसका नाम
.....

7. नजदीकी गायत्री शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठ का पता-

हस्ताक्षर प्रभारी.....

मण्डल के अन्य सदस्यों की जानकारी के लिए प्रारूप-

क्र.....नाम..... जन्म तिथि

पताफोन नं.

शैक्षणिक योग्यताफोन नं.फोन नं.

विशेष अभिरुचि.....

युग प्रवक्ता बनें- विचार क्रान्ति का संदेश विश्वव्यापी बनायें

परम पूज्य गुरुदेव ने वर्तमान समय के प्रबुद्ध वर्ग से धर्म तंत्र को संभालने की अपील की है। अस्तु, राष्ट्र के भावनाशील और समयदानी प्रतिभाशालियों को संगठित कर तथा प्रशिक्षित कर उनके माध्यम से तथ्य, तर्क और प्रमाणों के आधार पर भौतिक जगत् में अध्यात्मवादी प्रतिपादन हेतु युग निर्माण मिशन से जुड़े भावनाशील वैज्ञानिकों, प्रबुद्धों, प्रखर वक्ताओं को तलाशा और तराशा जा रहा है।

लक्ष्य - विषयवस्तु विशेषज्ञों के माध्यम से महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, कॉर्पोरेट जगत्, वैज्ञानिक वर्ग, तकनीकी वर्ग, प्रशासक वर्ग, राजनीतिक वर्ग आदि प्रबुद्ध वर्ग के व्यक्तियों के बीच युग संदेश पहुँचाना।

कार्यक्षेत्र - प्रांतीय स्तर पर कार्य करेंगे तथा आवश्यकतानुसार, केंद्र के निर्देश पर अन्य क्षेत्रों में भी कार्य कर सकेंगे।

अहर्ताएँ/अपेक्षाएँ - नियमित उपासना, साधना एवं स्वाध्याय, विषयवस्तु का उत्तम ज्ञाता, कुशल व संयमित वक्ता, मिशन की विचारधारा व गतिविधियों का अच्छा जानकार, समर्पित कार्यकर्ता, यथोचित शैक्षणिक योग्यता, प्रबुद्ध वर्ग में विचार संप्रेषण में सक्षम, शिक्षण की विविध प्रणालियों यथा पीपीटी प्रोजेक्टर आदि का चालनज्ञान, आवश्यकतानुसार समयदान कर सकने की स्थिति, भारतीय वेशभूषा को प्राथमिकता, अपने क्षेत्र में प्रभावी जनसंपर्क, वाणी एवं लेखनी में प्रवीणता।

कार्य - अपने क्षेत्र में सहयोगियों की टीम तैयार करना, अपने क्षेत्र में विविध विषयों पर कार्यशालाएँ/संगोष्ठियों, सभाओं का आयोजन करना, युवा वर्ग में युग निर्माण का संदेश देने हेतु महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों/कॉर्पोरेट जगत् से संपर्क कार्यक्रम, विविध विषयों पर अद्यतन जानकारी युक्त विषय वस्तु पर पीपीटी/लेक्चर बनाना, केंद्र के सतत संपर्क में रहना एवं मिशन की मूल विचारधारा से जुड़े रहना, सनातन सूत्रों को नई शैली में प्रस्तुत करना, लोक जागरण के लिए जन सम्मेलन करना, पर्व उत्सवों को प्रगतिशील स्वरूप प्रदान कर धर्म प्रचार का साधन बनाना, बाल-संस्कारशालाओं का संचालन करना/कराना, नवनिर्माण के आलोक वितरण हेतु लेखन कला को विकसित करना, क्षेत्र के स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रज्ञा आंदोलन विषयक विचारों को स्थान दिलाने का प्रयास करना, अपने जैसी योग्यता वाले प्रशिक्षक तैयार करना, एस.एम.एस./मेल द्वारा सद्भाव्यों श्रेष्ठ विचारों के प्रसारण की योजना बनाना, लोकल टी.वी. चैनलों में युग प्रवाह आदि के प्रसारण की व्यवस्था बनाना।

हमारी पत्रिकाएँ

अखण्ड ज्योति (हिन्दी मासिक)

घीया मण्डी, मथुरा (उ. प्र.) पिन- 281003 फोन- (0565) 2403940, 2409256

वार्षिक शुल्क : 120 रु., आजीवन- 2400 रु., विदेश : 1200 रु. वार्षिक

अखण्ड ज्योति (अंग्रेजी द्वैमासिक),

घीया मण्डी, मथुरा (उ. प्र.) पिन- 281003 फोन- (0565) 2403940, 2409256

वार्षिक शुल्क : 90 रु., विदेश : 1000 रु. वार्षिक

युग निर्माण योजना (हिन्दी मासिक)

गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उ. प्र.) पिन- 281003 फोन- (0565) 2530128, 2530399

वार्षिक शुल्क : 60 रु., आजीवन- 1200 रु., विदेश : 700 रु. वार्षिक

पाक्षिक वीडियो पत्रिका: युग प्रवाह

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) पिन-249411 फोन- (01334) 260602, 261327

वार्षिक शुल्क : 365 रु., विदेश : 3000 रु. वार्षिक

अखण्ड ज्योति (मराठी मासिक)

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) पिन-249411 फोन- (01334) 260602, 261327

वार्षिक शुल्क : 100 रु., आजीवन- 1800 रु., विदेश : 1500 रु.

युग शक्ति गायत्री (तेलगु मासिक)

गायत्री चेतना केन्द्र, निकट अश्विनी हाउस, एच. पी. रोड,

मूसापेट, हैदराबाद (आं. प्र.) पिन-500018 फोन-(040) 32986922, (C)- 9392506888

वार्षिक शुल्क : 120 रु., 3 वर्ष- 350 रु., 10 वर्ष का-1116 रु.

अखण्ड ज्योति (उड़िया मासिक)

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) पिन-249411 फोन- (01334) 260602, 261327

वार्षिक शुल्क : 108 रु., आजीवन- 2000 रु., विदेश : 1200 रु.

प्रज्ञा अभियान (हिन्दी एवं गुजराती पाक्षिक)

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) पिन-249411 फोन- (01334) 260602, 261327

वार्षिक शुल्क : 40 रु. , विदेश : 500 रु. वार्षिक

शिक्षा संस्कृति परिशिष्ट सहित (हिन्दी में) वार्षिक शुल्क : 60 रु.

अखण्ड ज्योति (बंगला मासिक)

युग निर्माण योजना, 32 (नया 26), मदन मित्रा लेन, कोलकाता (प. बं.) फोन नं. - 033-23526641

वार्षिक शुल्क : 110 रु., आजीवन- 1800 रु., विदेश : 1100 रु. वार्षिक

अखण्ड ज्योति (असमिया द्वैमासिक)

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) पिन-249411 फोन- (2144) 260602, 261327

वार्षिक शुल्क : 72 रु., 5 वर्ष शुल्क - 350 रु.,

युग शक्ति गायत्री (गुजराती मासिक)

गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उ. प्र.) पिन- 281003 फोन- (0565) 2530128, 2530399

वार्षिक शुल्क : 100 रु., आजीवन वर्ष- 2100 रु., विदेश : 1200 रु. वार्षिक, आजीवन वर्ष- 12000 रु.

प्रज्ञा अभियान (गुजराती पाक्षिक)

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) पिन-249411 फोन- (2144) 260602, 261327

वार्षिक शुल्क : 40 रु., विदेश : 500 रु.

मुझे हीरे चाहिए

फूल मालायें हमने सारी जिन्दगी पहनी हैं। अब हमारा जेवर पहनने का मन है। हीरक जयंती पर हमारा हीरों का हार पहनने का मन है। हार पहनकर जब हम बाजार में निकलें तो लोग कहें, बड़ा मालदार आदमी है, शानदार आदमी है। दस हजार हीरों का हार, मेरी अब केवल यही एक इच्छा शेष है।

ऐसे हीरे जो मेरे कार्य को फैला सकें/मेरे हाथ-पाँव बन सकें। चलते-फिरते हाड़-मांस के शक्तिपीठ बन सकें। वे जो अपना समय, प्रतिभा और साधन का एक अंश नियमित रूप से लोक-कल्याण के संकल्प के साथ आगे आ सकें। मैं उन्हें अपने हृदय से लगाकर रखूँगा, सदैव उनकी हिफाजत करूँगा। मुझे ऐसे हीरों का हार चाहिए। क्या आप ऐसा हीरा बनना चाहेंगे ?

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

क्या आप बनेंगे उस हार का हीरा ?

मिशन को आज ऐसे भावनाशील, प्रतिभाशाली, समयदानी युवा कार्यकर्ताओं (हीरों) की महती आवश्यकता है, जो विचार क्रान्ति अभियान को रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से जन-जन तक, विशेष कर युवाओं तक पहुँचा सकें। जो अपने समय, साधन व प्रतिभा को समाज व राष्ट्रउत्थान हेतु लगाने के लिए तत्पर हों। समाज व राष्ट्र की वर्तमान चुनौतियों से निपटने के लिए युवाओं को जाग्रत, प्रशिक्षित व संगठित कर सकें।

गुरुदेव के 'हार' का हीरा बनने हेतु आपका भाव भरा आमंत्रण है। स्वयं को गढ़कर, उत्कृष्ट बनाकर अन्यो के लिए प्रेरणास्रोत बनने का सुनहरा अवसर हाथ से न जाने दें, युवा अग्रदूत बनें।



आदर्श ग्राम तीर्थ योजना



स्वच्छता अभियान



ज्ञान यज्ञ (सत्साहित्य विस्तार)



युवा जागृति अभियान



नदी स्वच्छता अभियान

संपर्क सूत्रः

सप्त आन्दोलन एवं युवा प्रकोष्ठ कार्यालय
अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
फोन- 09258360652, 01334-260602 Ext.- 436

Email: youthcell@awgp.org

www.awgp.org • www.dsvv.ac.in • www.diya.net.in

Book Code : KD 50